राजस्थान 100 प्रतिशत जैविक राज्य

जैविक देश

क्यूबा विश्व में 100 प्रतिशत जैविक देश है.

प्रथम

आस्ट्रेलिया 10,500,000 हेक्टेयर में जैविक खेती कर विश्व में आज प्रथम है. ओस्ट्रेलिया अपनी कुल भूमि का मात्र 2.31 प्रतिशत जैविक खेती के लिए उपयोग कर रहा है.

द्वितीय

अर्जेन्टीना 3192000 हेक्टेयर में जैविक खेती करके दूसरे है. अर्जेंटीना मात्र 1.89 प्रतिशत जैविक खेती के लिए उपयोग कर रहा है.

तृतीय

इटली 1230000 हेक्टेयर में खेती करके तीसरे है. इटली 7.94 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

चौथा

अमेरिका 9,50,000 हेक्टेयर में खेती करके चौथे है. अमेरिका 0.23 प्रतिशत ही जैविक खेती के लिए उपयोग कर रहा है. अमेरिका के पास में 936 मिलियन हेक्टेयर में से 177 मिलियन हेक्टेयर उपजाउ भूमि है. अमेरिका में 90,000 केचुआ फार्म कार्यशील हैं और जापान को हजारो डालर के केचुए निर्यात किये गये हैं. अमेरिका वर्मी कल्चर का उपयोग मलमूत्र अवमल तथा कार्बनिक पदार्थों को पुनः चक्रित करने का कार्य व्यवसायिक स्तर पर किया जा रहा है.

अमेरिका में अक्तूबर 1980 से अग्निहोत्र कृषि का कार्य प्रारम्भ किया गया था. 17 एकड़ भूमि पर अग्निहोत्र कृषि का कार्य प्रारम्भ किया गया था.

सेम

सेम की फसल पर अग्निहोत्र कृषि का प्रयोग सबसे पहले किया गया था. श्रीमती जेरी होजेस के द्वारा प्रयोग करने के बाद में पाया गया कि 12 गुना 16 फुट की कुटिया में 4 घंटे अग्निहोत्र हवन करने के बाद में 1989-90 में प्रति 100 वर्गफूट भूमि पर सेम की फसल 43.75 पांउड हुई थी.

रासायनिक खाद की तुलना में वृद्धि

रासायनिक खाद की तुलना में अग्निहोत्र कृषि करने पर 961 प्रतिशत वृद्धि हुई थी. अमेरिका में अग्निहोत्र कृषि पर अनुसंधान करने के लिए हर साल बहुत ही अधिक धन खर्च किया जाता है.

अग्निहोत्र विश्वविद्यालय

अमेरिका में अग्निहोत्र पर गहन अनुसंधान करने के लिए अग्निहोत्र विश्वविद्यालय प्रारम्भ किया गया है. अमेरिका में 4 घंटे महामृत्युंजय यज्ञ हर दिन किया जाता है.

पांचवा

ब्रिटेन 479631 हेक्टेयर में खेती करके पांचवे है. ब्रिटेन 3.96 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

छठवा

उरुग्वे 678481 हेक्टेयर में खेती करके छठवे है. उरुग्वे 4 प्रतिशत जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

सातवा

जर्मनी 632165 हेक्टेयर में खेती करके सातवे है. जर्मनी 3.7 प्रतिशत जैविक के लिए उपयोग कर रहा है. जर्मनी में 2001 में जैविक खेती 2 प्रतिशत की जाती थी जो आज 7 प्रतिशत की जा रही है.

1974 से ही भारत से अग्निहोत्र को पूरी तरह से समझकर अग्निहोत्र पर बहुत ही गहराई से अनुसंधान कर विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर चुका है.

पश्चिमी जर्मनी बोडेन्सी संभाग की फार्मास्यूटिकल्स रिसर्च इंस्टीटयूट की प्रमुख श्रीमती मोनिका येले तथा उनके पति श्री बर्थोल्ड येले के द्वारा लगातार अनुसंधान करने के बाद में महत्वपूर्ण निर्णय लिए थे. जर्मनी ने अग्निहोत्र के लिए बहुत अधिक खर्च किया है. रासायनिक खाद एवं जहरीले कीटनाशकों के लगातार प्रयोगों के कारण स्वास्थय पर गंभीर प्रभाव के कारण ही जर्मनी बहुत अधिक परेशान था.

अग्निहोत्र की भस्म का दवा के रुप में प्रयोग भी जर्मनी ने ही विश्व को बताया था. अग्निहोत्र करने की पूरी प्रक्रिया को भी जर्मनी ने सबसे पहले पूरी तरह से समझने का प्रयत्न किया था. अग्निहोत्र की प्रदू-णरोधी क्षमता का अध्ययन कर विश्व के सामने आश्चर्यजनक परिणाम दिखाये. अग्निहोत्र की भस्म का वैज्ञानिक परीक्षण कर अग्निहोत्र भस्म के रोगप्रतिरोधक गुणों को विश्व को बताया था. सबसे पहले जर्मनी ने अग्निहोत्र के गुणों को अच्छी तरह से परखा था. अग्निहोत्र कृ-ि अग्निहोत्र की भस्म से ही की जाती है इसलिए अग्निहोत्र कृ-ि करने के लिए जर्मनी ने वैज्ञानिक आधार तैयार किया था.

आठवा

स्पेन 485079 हेक्टेयर में खेती करके आठवे है. स्पेन 1.66 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

नौवा

कनाडा 430600 हेक्टेयर में खेती करके नवें है. कनाडा 0.58 प्रतिशत ही जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

निर्यात

कनाडा अमेरिका को 30,000 डालर के केचुओं का निर्यात हर साल करता है.

दसवा

फ्रांस 419750 हेक्टेयर में खेती करके दसवें है. फ्रांस 1.4 प्रतिशत जैविक के लिए उपयोग कर रहा है.

25 प्रतिशत जैविक कृ-ि

डेनमार्क में जैविक खेती के फार्मों की संख्या 1989 में मात्र 401 थी जो 2005 में बढ़कर 9300 हो गयी है. आज कुल कृषि का 25 प्रतिशत भाग जैविक खेती के द्वारा किया जाता है.

जापान

जापान 15,000 टन जीवित केचुआ ईल मछली के संवर्धन के लिये आयात करता है. जापान 15,000 टन केचुआ कागज एवं धागा मिलों के व्यर्थ को पुनः चक्रित करने हेतु आयात करता है.

रुस

इस समय रुस के पास 1708 मिलियन में से मात्र 126 मिलियन हेक्टेयर भूमि ही उपजाउ है. बाकी बंजर या बर्फीली है.

चीन

चीन के पास 960 मिलियन हेक्टेयर में से 124 मिलियन हेक्टेयर उपजाउ है.

विश्व के जैविक मानस को ध्यान में रखकर भारत में जैविक लहर दिखाई दी है. 2015 में सिक्किम पहला जैविक राज्य हो जायेगा.

सिक्किम में 2003 में जैविक बोर्ड स्थापित कर रासायनिक खाद तथा कीटनाशक पर पूर्ण प्रतिबंध लगाकर भारत के लिए आदर्श स्थापित कर चुका है.

राजस्थान 100 प्रतिशत जेविक राज्य बनाने के प्रयत्न 2013 से प्रारम्भ किये गये हैं.

जैविक बोर्ड

रासायनिक खाद तथा कीटनाशक की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के लिए सिक्किम राज्य की तरह की तरह जैविक बोर्ड की स्थापना करने के लिए संगठित प्रयत्न आवश्यक है.

सभी समस्याओं का अंत जैविक राज्य बनने पर हो जायेगा.

नंदीपार्क

गाजियाबाद में पहला नंदीपार्क खुलने के बाद में दूसरा नंदीपार्क लखनउ में खोला गया है. 500 नंदी वर्तमान में नस्ल सुधार का कार्य कर रहे हैं.

आवारा नंदी को प्रशिक्षित कर उनको स्वावलंबी बनाने के लिए अभियान चलाया गया है.

पूरे भारत के मेयर यानी महापौर नंदीपार्क खोलने के लिए अवलोकन कर चुके हैं.

तृतीय

राजस्थान 8054 टन दूध उत्पादन कर भारत में तृतीय है. राजस्थान अपनी विश्व प्रसिद्ध गोवंश प्रजातियों के विकास पर ध्यान देकर प्रथम आ सकता है.

राजस्थान सदैव ही विश्व में गोवंश के कारण ही प्रसिद्ध है. राजस्थान में गोवंश को जो आदर प्रेम तथा विशे-ा महत्व दिया गया है वह अनुकरणीय है.

श्री अशोक जी गहलोत गोवंश पर प्रतिदिन चारे के लिए 20 रु. सरकार से दे रहे हैं. राजस्थान की विश्व प्रसिद्ध नस्लें थारपारकर, राठी, नागौरी ने राजस्थान को विश्व में सबसे अलग रखा है.

राजस्थान में 100 सालों में पहली बार महाअकाल ने गोवंश को तड़फ तड़फ कर दम तोड़ने के लिए मजबूर कर दिया.

भौगोलिक परिस्थितियों के कारण अवैध रुप से राजस्थान से पाकिस्तान गोवंश ले जाने के कारण ही गोवंश की तेजी से कमी उत्पन्न होने के कारण ही राजस्थान दूध उत्पादन में पीछे हो गया है.

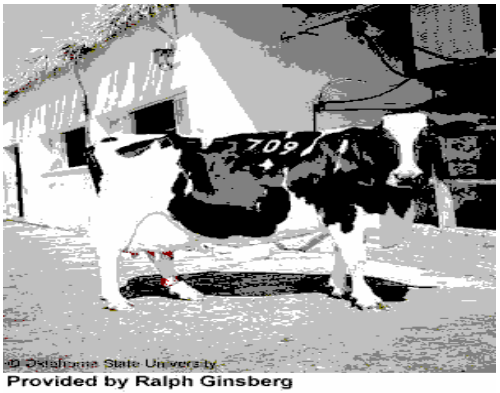

157 टन

वर्णसंकर नस्ल 4,64,000 से 157 टन दूध का उत्पादन हुआ है.

अधिक दूध के नाम पर 1950 से 60 के बीच में संकर जानवर को बढ़ावा दिया गया था.

2134 टन

देशी नस्ल मात्र 1,03,90,000 से मात्र 2134 टन दूध उत्पादित हो रहा है.

380 कतलखाने

राजस्थान में वर्तमान में 380 लाइसेंस प्राप्त कतलखानों में थारपारकर नस्ल के सांढ कम हो गये हैं.

कतलखानों के कारण राजस्थान का पर्यावरण असंतुलित हो गया है.

हरियाणा गोवंश

राजस्थान में केटल ब्रीडिंग फार्म कुमहेर में हरियाणा गोवंश का संवर्धन किया जा रहा है.

भैंस को बढ़ावा

विश्व में कई देशों में भैंस नहीं है. गाय प्रत्येक देश में मौजूद है.

भैंस की सहन करने की शक्ति कम होती है. गरमी में भैंस पानी में रहना पसंद करती है.

भैंस को अधिक पानी की आवश्यकता होती है. भैंस गंदगी पसंद करती है. भैंस कीचड़ में लेटना पसंद करती है.

विश्व में यदि भैंस है तो भैंस का दूध पीना कोई भी पसंद नहीं करता है.

भैंस यानी महि-ा यानी असुर यानी राक्षस. भैंसा यानी मृत्यु. मृत्यु के देवता यमराज भैंसें पर सवारी करते हैं.

भैंस के दूध पीने के कारण मानव के रक्त में गाढ़ापन बढ़ जाता है जिसके कारण कब्ज की परेशानी

प्रारम्भ होती हे जो बाद में बहुत सारी गंभीर बीमारियों में रुपान्तरित होती हैं.

भैंस हमेशा गुस्से में रहती है तथा मानव को गुस्से में पटक देती है.

भैंस के दूध पीने के कारण ही मानव के अंदर हिंसा की वृति चरम सीमा तक पहुंच जाती है.

भैंस के कारण हिंसा को बढ़ावा मिल रहा है. भैंस स्वार्थी होती है तथा भैंस आलसी होती है. मानव भैंस का दूध पीकर स्वार्थी तथा आलसी हो जाता है.

राजस्थान में कलियुग में सरकार के द्वारा भैंस के पालन को बहुत ही बढ़ावा दिया जा रहा है.

भारत में वसा के आधार पर दूध का मूल्य तय करने के कारण ही भैंस को बढ़ावा मिल रहा है.

वर्तमान में राजस्थान में भैंस का दूध 80 से 100 रु. लिटर तक दूध बिक रहा है.

भैंस के दूध में न्यूनतम 7 प्रतिशत वसा होती है. अधिकतम 13 प्रतिशत तक वसा होती है.

4899 टन

गायों के बदले में भैंस ने दूध के लिए अपना स्थान बना लिया है. भैंस के दूध का मूल्य बहुत अच्छा मिल रहा है. भैंस से 4899 टन दूध उत्पादित हो रहा है.

गोबर गैस

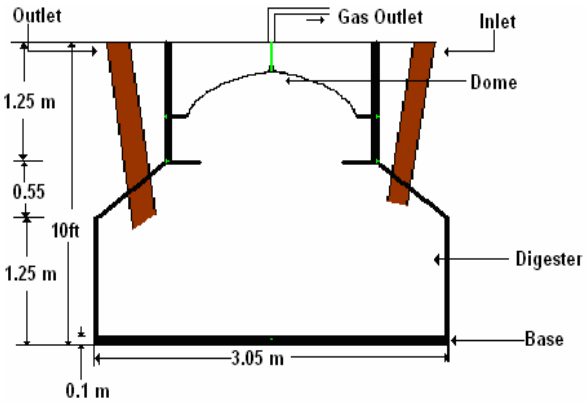

राजस्थान राज्य में सरकार के द्वारा आम आदमी के कल्याण के लिए गोबर का उपयोग करने के लिए सबसे कम मूल्य पर गोबर गैस उपलब्ध करवाने के लिए अभियान चलवाया था लेकिन आम आदमी एलपीजी पर पूरी तरह से निर्भर हो गया है.

नुकसान

एलपीजी पर वर्तमान में सरकार को 500 रु. का नुकसान हर सिलिंडर पर है. सरकार वर्तमान में 500 रु. नुकसान उठाने की स्थिति में नहीं है.

आम आदमी के द्वारा जानबूझकर एलपीजी मात्र 0.43 ग्राम के उपयोग पर 5.5 रु. नुकसान उठाकर गोबर गैस की बहुत अधिक उपेक्षा की गयी है.

सामुहिक गोबर गैस संयंत्र

राजस्थान में गुजरात की तरह सामुहिक गोबर गैस संयंत्र गांवों में नहीं लगाया गया है. सामुहिक गोबर गैस संयंत्र से गांव की प्रगति संभव है.

राजस्थ्थान सरकार के द्वारा 9,15,000 पारिवारिक गोबर गैस संयंत्र लगाने का लक्ष्य रखा गया है लेकिन जागरुकता के अभाव में मात्र 66,944 गोबर गैस संयंत्र ही लग पाये हैं.

कार्बन क्रेडिट

कार्बन क्रेडिट के बारे में राजस्थान के गांवों में जानकारी विशे-ा नहीं है इसलिए वर्तमान में गोबर गैस पर ध्यान नहीं दिया गया है.

वैकल्पिक उर्जा के विकास करने के लिए लंबे समय से प्रयत्न चल रहा है. गोवंश की संख्या लगभग ढेड़ करोड़ से अधिक है.

गोलोक से कामधेनु मानव का कल्याण करने मृत्युलोक में आयी है. गोबर कामधेनु का वरदान है. गोबर में हमने आठ प्रकार की लक्ष्मी आठ ऐश्वर्य के साथ में विराजमान है ऐसा जाना है.

लक्ष्मीजी का निवास गोबर में जरुर माना है लेकिन गोबर के उपयोग नहीं कर पाने के कारण ही लक्ष्मीजी हमसे प्रसन्न नहीं है.

एक गोवंश से जीवन में एक लाख किलो गोबर मिलता है. गोबर हर दिन बहुत ही अधिक मात्रा में वर्तमान में उपलब्ध है.

गोबर का उपयोग करने के लिए सीएनजी गैस तैयार करने के लिए कुछ गोशालाओं में पहल की गयी है.

अलग अलग क्षमताओं के गोबर गैस संयंत्र गोशालाओं में लगाये गये हैं. बाई प्रोडक्ट के रुप में गोबर गैस स्लरी खेती करने के लिए बहुत बड़ी मात्रा में उपलब्ध है.

गोशालाओं और पांजरापोलों में पर्यावरण की सुरक्षा को ध्यान में रखकर बढ़ती हुई उर्जा की मांग को ध्यान में रखकर गोबर गैस संयंत्रों की नींव रखी गयी है.

राजस्थान में गर्मी अधिक पड़ने के कारण देशी गाय के ताजे दूध दही छाछ मक्खन एवं घी की सबसे अधिक मांग रहती है. पानी मांगने पर गाय के दूध एवं दूध की सभी चीजें मिलती थी.

मांग के अनुरुप उत्पादन करने के लिए अभियान की आवश्यकता है. नंदी के विकास करने के लिए दत्त शरणानंद जी के समान ही और संतों को भी ध्यान देना है.

राजस्थान में महाअकाल के समय बहुत बड़ी संख्या में गोवंश के मरने के कारण दूध के उत्पादन में बहुत कमी आयी है. गोशालाएं महाअकाल के कारण ही बहुत ही नुकसान में चल रही हैं.

गोशालाओं की संख्या राजस्थान में 1000 से भी अधिक है. विश्व की सबसे बड़ी गोशाला भी राजस्थान में है.

राजस्थान गो सेवा आयोग को गोशालाओं की ओर बहुत ही गंभीरता के साथ ध्यान देने की आवश्यकता है.

राजस्थान को भारत में दूध उत्पादन में पहला आने के लिए रा-ट्रीय स्वयं सेवक संघ के द्वारा 2003 से भीलवाड़ा जिले में नोगाव में माधव गो विज्ञान अनुसंधान केंद्र में नस्ल सुधार का कार्य प्रारम्भ किया गया है. थारपारकर, राठ नस्ल, गीर, हरियाणा, साहीवाल, लाल सींधी नस्ल का विकास किया जा रहा है.

100 सालों में ऐसा भयंकर विनाश नहीं हुआ है. महाअकाल में 5 सालों में गोवंश का विनाश बहुत ही अधिक हुआ है.

राजस्थान के इस भयंकर विनाश को ध्यान में रखकर राजस्थान गो सेवा आयोग एवं डा. राजेंद्र प्रसाद निदेशक महात्मा गांधी ग्रामीण औद्योगिकीकरण संस्थान मगनवाड़ी रामनगर वर्धा 442001 के द्वारा पंचगव्य दवाओं के 10 गांवों में प्रशिक्षण देने पर 100 प्रतिशत वित्तीय सहयोग दिया जा रहा है.

नीम का थाना

अग्निहोत्र

श्री विनोद कुमार जीवन बीमा निगम नीम का थाना मोबाइल 9413236627 अग्निहोत्र के लिए पूरी तरह से समर्पित हैं.

सीकर

श्री रामकृ-ण गौशाला समिति

14 जनवरी 2001 मकर संक्रांति के दिन श्री कैलाशचंद्र सोनी जी मंत्री 9928427058 के द्वारा 150 गायों की क्षमता वाली श्री रामकृ-ण गौशाला समिति हाथीदेह तहसील माधोपुर जिला सीकर में स्थापित की गयी है.

श्री लक्ष्मण सिंह जी को-ाध्यक्ष 9602944471 कुल प्राप्ति 2,30,018 रु. कर गायों के पीने के पानी की समस्या का समाधान करने के लिए सक्रिय हैं.

श्री सुवालाल स्वामी उपाध्यक्ष गायों के रहने के लिए आवास की आवश्यकता के लिए विचार कर रहे हैं.

श्री उमराव सिंह जी शेखावत अध्यक्ष 9929065413 162 देशी तथा 3 दोगले गोवंश रखकर कुल खर्च 4,35,030 रु. कर खाद तथा कन्डे यानी थापड़ी बनाकर 36,523 रु. प्राप्त कर रहे हैं.

गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए गोबर एवं गोमूत्र का अधिकतम उपयोग करने के लिए भावी योजना है.

132 देशी गायों से हर साल मात्र 36 क्विंटल दूध होता है. 24 रु. लीटर दूध बेच रहे हैं.

देशी गायों की नस्ल सुधार करने के लिए उत्तम गुणवत्ता के नंदी तैयार करने के लिए विचार है.

श्री गोसांई बाबा गौशाला समिति

11 मई 2004 को श्री रामेश्वर लाल शर्मा जी अध्यक्ष 9435110981 एवं श्री प्रेम राज मंत्री 9414036641 के द्वारा श्री गोसांई बाबा गौशाला समिति ग्राम गुनाठू, तहसील जिला सीकर में 200 गायों को रखने की क्षमता के साथ में गौवंश का संरक्षण करने के लिए की गयी है.

श्री रामेश्वर लाल शर्मा जी संचालक गौशाला को आत्मनिर्भर करने के लिए पंजीयक रजिस्ट्रार गौशाला जयपुर तथा भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई से पंजीकृत कर गोबर से जैविक व केंचुआ खाद बनाने के लिए 5 लाख रु. की आर्थिक सहायता की आवश्यकता अनुभव कर रहे हैं.

पंचगव्य महो-ाधियों के निर्माण करने के लिए विचार कर रहे हैं. पंचगव्य महो-ाधियों की मांग वर्तमान में विश्व में बहुत ही अधिक है.

वर्तमान में 181 देशी गोवंश तथा 64 दोगले गोवंश रखकर कुल प्राप्ति 3,04,893 रु. तथा 1 लाख रु. मासिक खर्च के साथ में भवि-य में दुधारु गायें रखकर दूध से आय बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील हैं.

श्री हरदयाल गौशाला सिंगरावट

श्री दामोदर प्रसाद पुजारी जी मुख्य संरक्षक 9983134677 ने 1922 में 350 बीघा भूमि पर 215 पेड़ लगाकर श्री हरदयाल गौशाला की स्थापना की थी.

श्री श्याम सुन्दर मूंधड़ाजी संरक्षक 9311050650, श्री ओंकारमल मूंधड़ा संरक्षक वाराणसी 9415201495, श्री श्याम सुंदर मूंधड़ा संरक्षक कानपुर 9415201496, श्री कमल मोदी संरक्षक जयपुर 9929850000, श्री श्याम सुंदर अग्रवाल संरक्षक सूरत 9825293503, श्री गणेश नारायण जी मालपानी सीकर 9460639230, श्री जुगल किशोर सिंधी कोलकत्ता संरक्षक 9830162141 गौशाला को स्वावलंबी बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं.

देशी गोवंश के संवर्धन तथा संरक्षण करने के लिए श्री जगदीश प्रसाद मूंघड़ा जी अध्यक्ष 9311337776 के द्वारा 406 देशी गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए सक्रिय हैं.

श्री महेन्द्र जी गौड़ को-ाध्यक्ष 9983193366 वर्तमान में 100 बीघा भूमि पर बाजरा, जुवार, जेई, रिजका उत्पन्न कर 261 देशी गायों से मात्र 2695 लीटर दूध हर साल उत्पन्न कर 18 रु. लीटर दूध बेचकर 48510 रु. प्राप्त कर रहे हैं.

श्री जगदीश प्रसाद गोलवा सह को-ाध्यक्ष बहुत ही जागरुकता के साथ में आर्थिक समस्या का समाधान करने के लिए प्रयत्नशील है.

श्री रमेश कुमार अग्रवाल उपाध्यक्ष 9828871294 जनता से प्राप्ति 2,72,874 रु. कर गोवंश की संख्या बढ़ाने के लिए विचार कर रहे हैं.

वर्तमान में मात्र 5 सांढ ही हैं. नस्ल सुधार करने के लिए अच्छे गुणवत्ता के सांढ तैयार करने के लिए विचार करना आवश्यक है.

10 कर्मचारी गोबर किसानों को बिक्री कर 45,000 रु. प्राप्त कर रहे हैं.

श्री ओमप्रकाश हरलालका सचिव 9309405356 315 पेड़ गौशाला में लगाकर 7 संरक्षक, 10 सहयोगियों तथा 11 सदस्यों के साथ में गोबर गैस प्लांट एवं पंचगव्य दवाईयां बनाने के लिए तैयारियां कर रहे हैं.

अग्निहोत्र

श्री सुरेन्द्र माथुर राजकीय सिटी डिस्पेन्सरी नं 2 के पास में, राजश्री रोड, सीकर दूरभा-ा 256128 अग्निहोत्र के लिए पूरी तरह से समर्पित हैं.

खाटूश्यामजी

खाटूश्याम जी राजस्थान का प्रसिद्ध मंदिर है. यहां पर दूर दूर से दर्शन करने के लिए विश्व से लोग आते हैं. गोवंश संवर्धन करने के लिए उदारता के साथ में लोग दान करने के लिए आते हैं.

सालासार

श्री बालाजी गोशाला संस्थान सालासर चुरु श्री रविशंकर पुजारी जी मोबाइल 9414084054 अध्यक्ष के द्वारा कामधेनु सेवा करने के लिए 167 बीघा जमीन पर 23 जुलाई 1998 से 810 देशी गायें, 300 दोगली गायें, 31 विदेशी गायें कुल 1141 गायें, 10 देशी सांढ, दोगले 10 सांढ कुल 20 सांढ, 9 बैल, 120 बछड़ा, 145 बछड़ी कुल 1435 गोवंश संभालने के लिए 58,95,544 रु. मिल रहे हैं. दूध का उत्पादन वर्तमान में बहुत ही कम है.

मीठे पानी का अभाव है. गोमूत्र तथा गोमय का उपयोग नहीं किया गया है. गोशाला को आत्मनिर्भर बनाने के लिए नस्ल सुधार कर औ-ध निर्माण, प्रयोगशाला, एम्बूलेंस की आवश्यकता है.

विश्व में सालासार बालाजी के नाम से हनुमान जी प्रसिद्ध है. कलियुग में हनुमान जी का महत्व बहुत ही तेजी से बढ़ रहा है.

हनुमान जी से यमराज, कलियुग तथा शनि घबराते हैं. वर्तमान में प्रतिदिन हनुमान जी के पास में मंगलवार के दिन तथा शनिवार के दिन सबसे अधिक भक्त आते हैं.

राजस्थान में सालासार अपने चमत्कारों के कारण लोगों के लिए यात्रा का मुख्य केंद्र है. सालासार में बहुत ही धन लोगों के द्वारा हनुमान जी को दिया जाता है.

लोगों की गोवंश के लिए असीम भावना के कारण ही सालासार में गोशाला बहुत ही अच्छी है.

गोशाला के लिए लोगों के द्वारा बहुत ही अधिक धन दिया जाता है. गोशाला में गोवंश की सेवा बहुत ही अच्छी तरह से की जाती है.

पूरे विश्व से सालासार बालाजी में हनुमान जी के दर्शन करने साल भर में लोग आते रहते हैं. सालासार में बाहर से आने वाले लोगों के रहने की निःशुल्क व्यवस्था की गयी है.

पावापुरी

श्री के.पी. संघवी जी हीरे के व्यापारी सूरत एवं मुम्बई के द्वारा जैन अनुयायी के प्रमुख तीर्थ पावापुरी में 5500 गोवंश का संवर्धन नस्ल सुधार के साथ में किया जा रहा है.

गोवंश की सेवा करने के लिए समर्पित कर्मचारियों को नियमित रोजगार मिल रहा है.

भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड के द्वारा वित्तीय सहयोग नियमित रुप से दिया जाता है. गोवंश के रखरखाव को बहुत ही ध्यान से किया जा रहा है.

गोबर एवं गोमूत्र का अधिकतम उपयोग किसानों के द्वारा खेती करने के लिए किया जाता है.

बाहर से आने वालों के लिए बहुत ही अच्छी व्यवस्था पावापुरी में की गयी है. 40 रु. में गोमाता के घी में तैयार भोजन की बहुत ही सुंदर व्यवस्था की गयी है.

गोमाता के दूध से तैयार छाछ पिलायी जाती है. पावापुरी में दर्शन करने के लिए 12 माह में बहुत ही दूर दूर से जैन अनुयायी आते रहते हैं.

500 रु. किलो गोमाता का घी बेचा जा रहा है. पंचगव्य महो-धियों के निर्माण करने के भावी योजना है. गोवंश संवर्धन करने के लिए वीडियो एवं गोमाता के भजन एवं गीत की ओडियो सीडी तैयार की गयी हैं.

श्री धवाली माता गोशाला सेवा समिति

4 जनवरी 2006 को श्री नागा बाबा दोलत भारती अध्यक्ष 9413465148, श्री सुथार श्यामलाल संचालक एवं मंत्री के द्वारा श्री धवाली माता गोशाला सेवा समिति गांव उम्मेदगढ़, तहसील शिवजन, जिला सिरोही दूरभा-ा 02973-254049, मोबाइल 9414843021 गायों की रक्षा करने के लिए 198 गायों को रखने की क्षमता के साथ में की गयी है.

विश्व में उच्च गुणवत्ता के साथ में पंचगव्य महो-ाधियों की बहुत अधिक मांग है. जैविक आहार के साथ में पंचगव्य महो-ाधियां उच्च गुणवत्ता के साथ में तैयार की जा सकती हैं.

भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड के साथ में पंजीकृत कर स्वावलंबन करने के लिए बड़े स्तर पर पंचगव्य महो-ाधियों के निर्माण करने के लिए भावी योजना के साथ में श्री देवासी लसाराम उपाध्यक्ष प्रयत्नशील हैं.

जैविक खेती के लिए किसानों के लिए जैविक खादें तैयार करने भावी योजना है.

राजस्थान गो सेवा आयोग से पंजीकृत कर 6 सदस्य गौशाला का नया निर्माण करने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं.

श्री मीणा नवाराम को-ाध्यक्ष 7568438450 के द्वारा रजका, जुआर, बाजरी उत्पन्न कर 116 देशी गायों की नस्ल सुधारने के लिए प्रयत्नशील हैं.

3 बीघा जमीन पर 100 पेड़, 6 बीघा जमीन पर चारा उगा रहे हैं. गोवंश की संख्या बढ़ाने के लिए विचार कर रहे हैं.

वर्तमान में 198 देशी गोवंश की सेवा 4 कर्मचारी कर रहे हैं. 6,19,664 रु कुल खर्च कर जनता से प्राप्ति 2,40,694 रु. के कारण धन की आवश्यकता है.

सिरोही

पंचगव्य

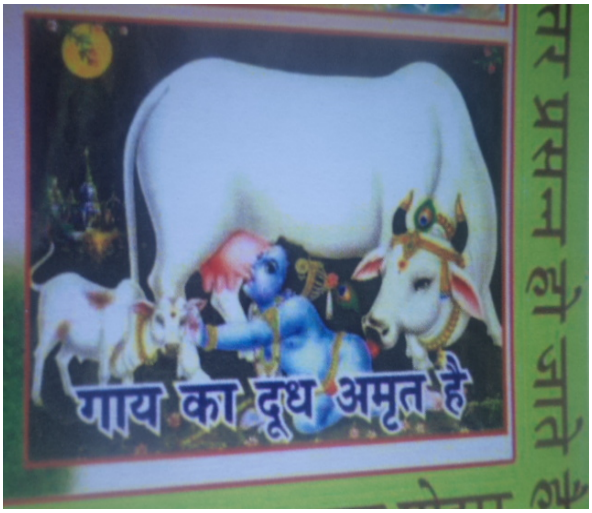

मोबाइल 09875180153 पर विश्व की सबसे बड़ी गोशाला पथमेड़ा राजस्थान में पृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पादन प्रा. लि. के द्वारा तैयार सभी वस्तुएं उपलब्ध हैं.

पीपुल फोर एनिमल्स

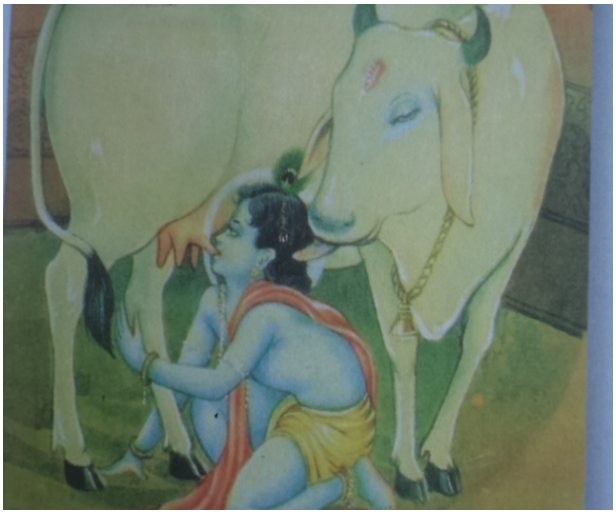

श्री चंद्रभान जी मोटवानी अध्यक्ष पीपुल फोर एनिमल्स मातृछाया, राजमाता धर्मशाला रोड सिरोही राजस्थान 307001 मोबाइल 09414291244, 02972 222965, 220395 ने पशुपति कल्याण परि-नद 2000 में 10 बीघा भूमि पर देशी गायें 135, 8 दोगली गायें, 6 देशी सांढ, कुल 207 गोवंश रखकर प्रारम्भ की है.

कुल प्राप्ति 11,50,000 रु. है.

वर्तमान में 6 कर्मचारी गोशाला में हैं तथा सहयोगी 15 हैं तथा 40 सदस्य गोशाला में हैं.

गोपालकों को गोवंश को स्वावलंबी बनाने के लिए गोमूत्र एवं गोमय का उपयोग सिखाने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं.

आपसी तालमेल की कमी के कारण ही कार्य में सफलता नहीं मिल रही है. वर्तमान में गोवंश के लिए कार्यकर्ताओं की कमी है.

श्री बाबूलाल जी जैन उपाध्यक्ष 9841078416 का सहयोग प्राप्त कर गोशाला में 150 पेड़ लगाकर भारत की अस्मिता गोवंश के सम्मान के लिए भारतीय गोमाता के दूध के वैज्ञानिक महत्व को चेनल के माध्यम से जन जन तक पहुंचाने के लिए 15 सैकेंड, 30 सैंकेंड, 45 सैकेंड, 1 मिनट का हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी में विज्ञापन 30,000 रु. खर्च कर अहमदाबाद गुजरात में तैयार करवाया है.

विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा में यह विज्ञापन दिखाने के लिए बातचीत हुई है. गोमाता धारावाहिक में भी विज्ञापन दिखाने के लिए प्रयत्न किया गया है. चेनल पर प्रसारित करवाने के लिए निःशुल्क वितरित किया जा रहा है.

गोवंश के वैज्ञानिक महत्व को विद्यालयों में छात्रों के बीच में रखने के लिए कौन बनेगा गोवंश सेवक ? प्रतियोगिता का आयोजन करने के लिए वस्तुनि-ठ प्रश्न एवं उनके उत्तर से तैयार की गयी है.

छात्रों को पूर्व तैयारियां करने के लिए सीडी तथा डीवीडी भी एकत्रित की गयी हैं.

भारतीय गोवंश की चिकित्सा के लिये एक छोटी सी पुस्तक का प्रकाशन किया है जिसमें देशी व अंग्रेजी दवाओं से सस्ती व सरल विधियों से गोवंश की चिकित्सा की जा सके निःशुल्क राजस्थान में सभी पंचायतों में वितरित कर रहे हैं.

श्री चंद्रभानजी मोटवानी गोवंश के संवर्धन करने के लिए संतों के सहयोग से चेनलों में प्रचार प्रसार करने पर जोर दे रहे हैं.

वर्तमान में राजमाता धर्मशाला मार्ग पर मातृछाया में एक स्टोर खोलकर एक व्यक्ति को रखकर लोगों को गोवंश के वैज्ञानिक महत्व को समझाने के लिए पंचगव्य महो-धियों को लोगों को उपलब्ध करवाया जा सके.

कानपुर गोशाला के द्वारा पहली बार गोकोला 80 प्रतिशत गोमूत्र मिलाकर कोकाकोला के समान ही बनवाया गया है तथा गोकोला को लोकप्रिय बनवाने के प्रयत्न श्री चंद्रभान जी के द्वारा किये गये हैं.

गोशाला में बैल से चलने वाले खेती करने वाले संयंत्र के साथ में पानी निकालने के यंत्र, चक्की, चारा काटने के संयंत्र, पंचर बनाने के लिए कंप्रेशर को भी लगाया गया है.

जिला हनुमानगढ़

श्री कृ-ण गौशाला समिति

3 दिसम्बर 2006 में श्री कृ-ण गौशाला समिति बिरकाली तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़ 335523 दूरभा-ा 01537221404 की स्थापना 500 गाय रखने की क्षमता के साथ में की गयी है.

भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से किसानों को प्रशिक्षण देकर बैल से चलने वाले पानी निकालने के यंत्र, खेती करने के लिए संयंत्र, चारा काटने के संयंत्र के लिए योजना है.

जैविक खेती करने के लिए गोबर के अधिकतम उपयोग करने के लिए सभी प्रकार की जैविक खाद, फसलरक्षक, गोबर से बिजली, गोबर से गोबर गेस तथा सीएनजी, डिस्टेम्पर, अग्निहोत्र के कंडे, बर्तन मांजने की राख, हवन की समिधा, धूप, नहाने के साबुन, कवेलू, टाइल्स, कागज, गोमूत्र से सभी पंचगव्य महो-ाधियों, दूध के उत्पादों के उत्पादन करने के लिए आधुनिक अनुसंधान केंद्र की स्थापना करने का विचार है.

देशी गोवंश की रक्षा कर उनको पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए उनका संवर्धन करने के लिए गोशाला की स्थापना की गयी है.

25,41,528 रु. कुल खर्च कर गायों के ठहरने के लिए छायादार शेडों की आवश्यकता के कारण चिंतित हैं.

देशी नस्ल के सुधार करने के लिए उत्तम नंदी तैयार करने के लिए नंदी पार्क पर विचार कर रहे हैं.

14 सदस्य, 25 सहयोगी, कुल प्राप्ति 23,22,121 रु. कर गोवंश को उचित मात्रा में चारा नहीं मिलने के कारण वर्तमान में श्री रामकुमार जी शर्मा अध्यक्ष 94135-54255, श्री बिरजू सिंह बीका उपाध्यक्ष, श्री शंकरलाल संचालक 9602522898 मात्र 1 बीघा जमीन के कारण परेशान है.

वर्तमान में देशी गोवंश 262, दोगले गोवंश 109, विदेशी गोवंश 24 कुल 395 गोवंश हैं. देशी गोवंश की संख्या बढ़ाने के लिए भावी योजना है.

उदयपुर जिला

उदयपुर

पंचगव्य

दूरभा-ा 0294-2412074 में विश्व की सबसे बड़ी गोशाला पथमेड़ा राजस्थान में पृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पादन प्रा. लि. के द्वारा तैयार सभी वस्तुएं उपलब्ध हैं.

उदयपुर दूध उत्पादन के लिए राजस्थान में बहुत ही प्रसिद्ध है. उदयपुर में कई चलचित्रों की शूटिंग की गयी है. उदयपुर में विश्व से लोग पर्यटन करने के लिए साल भर आते हैं.

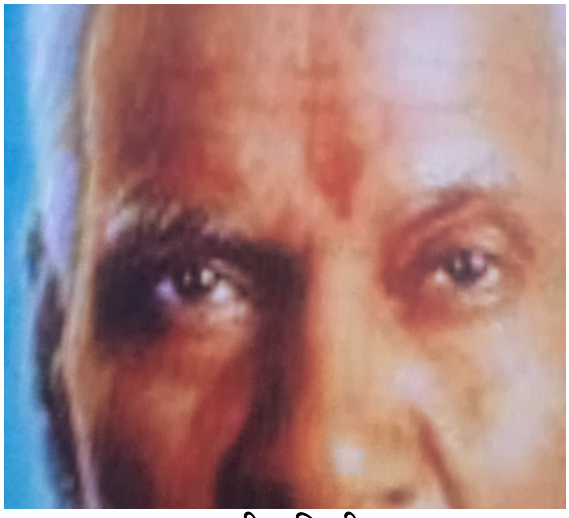

गायत्री शक्तिपीठ

गायत्री शक्तिपीठ बस स्टैंड के पास में हर घर में देवत्व लाने के लिए गोवंश के संवर्धन करने के लिए निरन्तर कार्यक्रम चल रहे हैं.

जैविक खाद तथा पंचगव्य महो-ाधियां तैयार करने के लिए किसानों को प्रशिक्षण नि:शुल्क दिया जाता है. कामधेनु साहित्य का वितरण गांवों में किया जाता है.

विद्यालयों में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन हर साल किया जाता है.

बाहर से आने वालों के लिए रहने की तथा भोजन की भी बहुत ही अच्छी व्यवस्था की गयी है.

श्मशान में गोशाला

एक गोशाला श्मशान में बहुत ही लंबे समय से चल रही है. मरने वाले को गोबर के कंडे जलाने के लिए दिये जाते हैं.

श्मशान में आने वाले हर व्यक्ति से गोशाला के लिए निश्चित राशि सहयोग के लिए ली जाती है.

गोशाला बहुत बड़े क्षेत्र में बिना सरकार के सहयोग के चल रही है. उदयपुर के समान ही अन्य क्षेत्रों में भी इसी तरह से गोशालाएं संचालित की गयी हैं.

गोशाला में गोवंश की बहुत ही सुंदर सेवा चल रही है. लोगों को गोमूत्र गोबर आवश्यकता के समय में हमेशा उपलब्ध है. बीमार लोगों के लिए दूध बहुत ही कम मूल्य पर उपलब्ध है.

बलिचा

कामधेनु सेवा

श्रीमती सुमन जी बोस पशुपति कल्याण परि-ाद ग्राम बलिचा डाकघर गोवर्धन विलास पोस्ट बोक्स नंबर 114, उदयपुर राजस्थान 313001 मोबाइल 09414166674 दूरभा-ा 0294-2801657 भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड के वित्तीय सहयोग से विशाल भूमि पर समर्पित भाव से बहुत बड़े स्तर पर जीवों के साथ में गोवंश रक्षा करने के लिए लंबे समय से श्री चंद्रभान जी मोटवानी जी अध्यक्ष के सहयोग से बहुत ही जबरदस्त अभियान चला रही है.

कटने जाने वाले गोवंश को बचाकर तथा घायल एवं अपंग जीवों का उपचार कर गोवंश के संवर्धन करने के लिए प्रयत्न किया गया है.

श्रीमती सुमन बोस जी के द्वारा बहुत ही शांत एवं सुरक्षित एवं बड़े क्षेत्र में जीवरक्षा का कार्य बहुत ही जागरुकता के साथ में किया जा रहा है.

जिला कांकरोली

कांकरोली

गायत्री शक्तिपीठ

गायत्री शक्तिपीठ के द्वारा जैविक खेती किसानों के द्वारा बड़े स्तर पर की जाये इसके लिए विशे-ा अभियान चलाया है.

गांवों में गोमय का अधिकतम उपयोग करने के लिए किसानों को अगरबत्ती, धूप, निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है.

गोवंश संवर्धन करने के लिए बहुत ही संगठित स्तर पर कार्य किया जा रहा है. विद्यालयों में भी गोवंश के बारे में जागृति उत्पन्न करने के लिए पूर्व तैयारियों के साथ में परीक्षा ली जा रही हैं.

समय समय पर जागृति सम्मेलन आयोजित किये जाते हैं. गोवंश साहित्य के माध्यम से परिवर्तन बहुत ही तेजी के साथ चल रहा है.

स्वानंद अपना बाजार

स्वानंद अपना बाजार में पंचगव्य साहित्य तथा भीलवाड़ा से गोवंश से मिलने वाले गोमूत्र से तैयार अर्क एवं अन्य आवश्यक वस्तुएं बेची जा रही हैं.

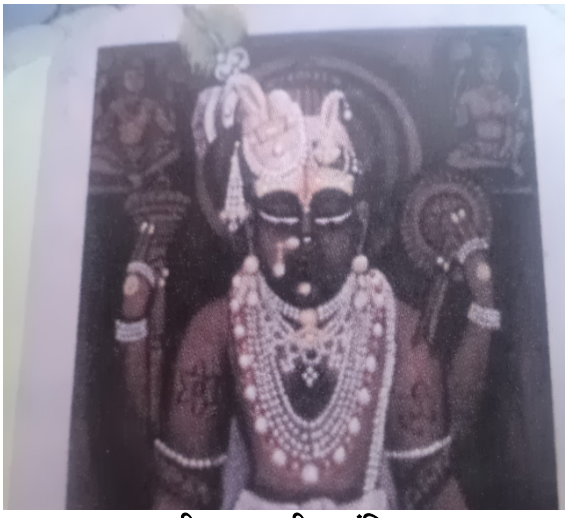

श्री द्वारकाधीश मंदिर

कामधेनु सेवा

कांकरोली यानी राजनगर जिसे राजसमंद भी कहते हैं श्री द्वारकाधीश के मंदिर में सुबह मंगलभोग से लेकर शयनभोग तक दूध से तैयार सामग्री बनाने के लिए 350 गीर गोवंश के संवर्धन करने के साथ में गोवंश के सम्मान करने के लिए काकरोली नरेश के नाम से सम्मानित वल्लभकुल श्री व्रजेश कुमार जी पूरे विश्व में बहुत ही जबरदस्त अभियान बहुत ही लंबे समय से चला रहे हैं.

कांकरोली में गीर गाय का दूध बहुत ही कम मूल्य पर उपलब्ध है. गीर गाय बहुत ही अधिक दूध देती है. गोशाला से गीर गोवंश मंदिर में पैदल धीमे धीमे चलकर जाते हैं.

गो ग्रास

गोग्रास हर घर से गीर गोवंश को प्रतिदिन सुबह के समय में महिलाओं के द्वारा बहुत ही प्रेम से दिया जाता है. गीर गोवंश मंदिर में उपर स्वयं सीढी चढकर दर्शन करने प्रतिदिन सुबह जाते हैं.

जैन संगठन

यहां पर जैन संगठन विशाल रुप में कार्य कर रहा है. साल भर परिवर्तन करने के लिए भारत के विद्वानों को आमंत्रित कर सम्मेलन तथा बैठक आयोजित कर रहे हैं.

आमेट

श्री मनोहर लाल जी शर्मा श्री जयसिंह श्याम गोशाला आमेट निवास अलंकार रेडिमेड स्टोर डाकघर चारभुजा रोड जिला राजसमंद दूरभा-ा 02908-230642 में गोवंश संवर्धन का काय्र चल रहा है.

खिमनौर

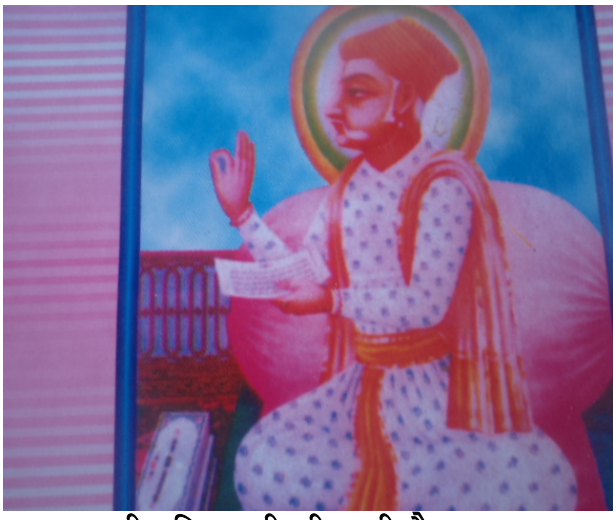

श्री हरिराय जी की 3 री बैठक

श्री हरिराय जी की बैठक खिमनौर में है. 1745 संवत में गोकुल से श्रीनाथजी के सुख के लिए खिमनौर आये. श्री हरिरायजी जानते थे कि 2 साल बाद श्रीनाथजी अजबकुंवरी को दिये वरदान के अनुसार नाथद्वारा में बिराजेंगे.

खिमनौर में श्री हरिरायजी इसलिए बिराजे थे क्योंकि आजीवन श्रीनाथजी की सत्ता का जल तक नहीं पीया था. हरिरायजी का आग्रह था कि वै-णव को भी श्रीनाथजी की सत्ता का कुछ भी ग्रहण नहीं करना चाहिए. 1772 में खिमनौर में ही श्री हरिरायजी नित्य लीला में पधारे हैं.

उदयपुर के महाराणा ने श्री हरिरायजी के लीला में पधारने के बाद में श्री विठठलनाथजी को खेडा में ले आये थे.

श्री विठठलनाथजी का मंदिर वहुजी ने खेड़ा में प्रारम्भ में जहां पर श्री हरिरायजी बिराजे थे वहां पर ही निर्माण करवाया था. उदयपुर के महाराणा ने श्री हरिरायजी को खिमनौर तथा खेडा गावं भेट किये.

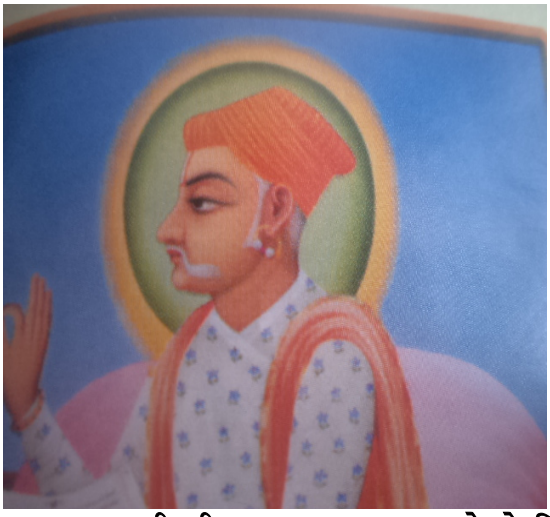

एक राजकुमारी श्रीमद भागवत कथा सुनने के लिए आती थी तब धीमे धीमे 98 साल की आयु के हरिरायजी के अलौकिक स्वरुप के दर्शन कर मोह में पड़ गयी.

राजकुमारी ने श्री हरिरायजी से एकांत में सत्संग करने का अनुरोध किया. श्री हरिरायजी ने राजकुमारी की विनंती के अनुसार अपने स्थान पर एकांत में निश्चित समय पर मिलने के लिए तय किया.

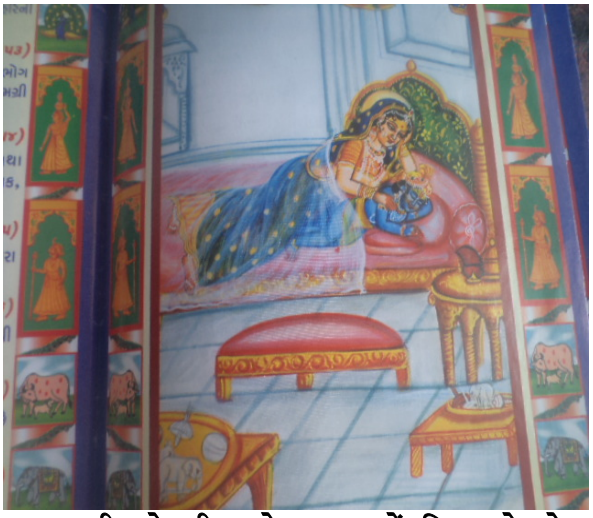

राजकुमारी को श्री यशोदास्वरुप में शिशु को गोद में स्तनपान कराते हुए श्री हरिरायजी के अदभुत दर्शन हुए. श्री हरियजी ने कामाख्य दो-ा विवरण ग्रंथ की रचना की है. राजकुमारी श्री हरिरायजी की अलौकिक सिद्धि से आश्चर्य चकित रह गयी तथा उसकी वासना दूर हो गयी.

राजकुमारी ने श्री हरिरायजी को सा-टांग दंडवत प्रणाम कर अपनी गलती की माफी मांगी. जीवन भर राजकुमारी श्री हरिरायजी की शि-या बनी.

श्री हरिरायजी का ह्रदय श्रीकृ-ण के प्रेमरस में सदैव ही मग्न रहता था. गोपीजनों के भाव से सदैव ही आद्र रहता था.

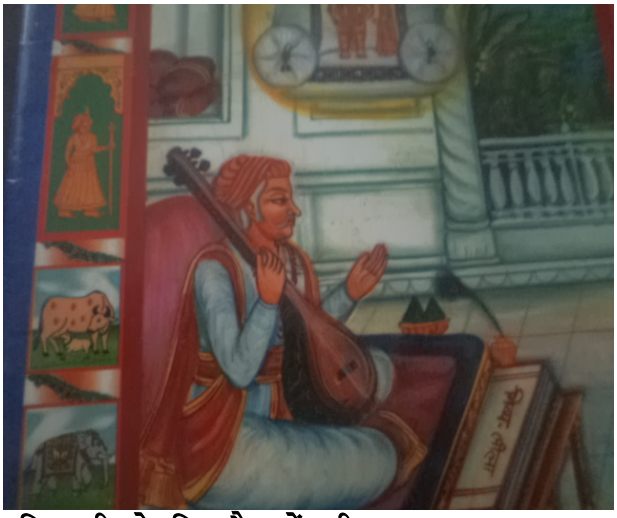

हरिरायजी ने खिमनौर में श्रीमद भागवत सप्ताह की जिसे सुनने के लिए दूर दूर से भाविक भक्त उपस्थित रहते थे.

भक्त कथा सुनने के बाद में आनंद में मस्त होकर भावविभोर होकर वापस जाते समय गान तथा नृत्य करते हुए जाते थे.

आसपास की बस्ती के लोगों की शिकायत हरिरायजी के पास में आयी.

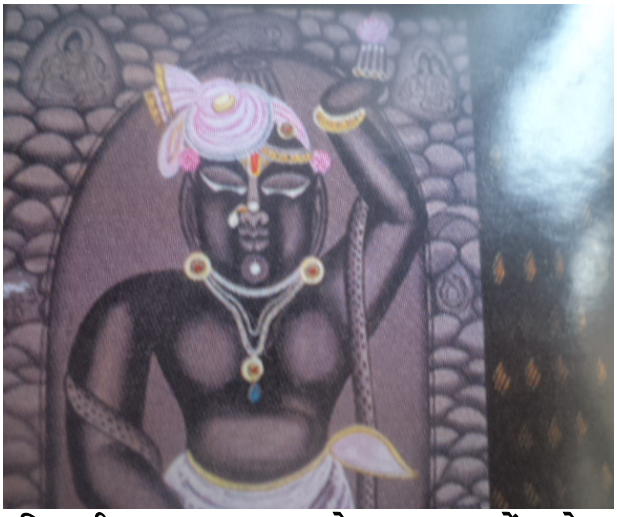

हरिरायजी जब पता लगाने तथा भक्तों को समझाने के लिए भगवदीयों के बीच में पहुंचे तो श्रीनाथजी को भक्तों के बीच में नृत्य करते हुए देखा.

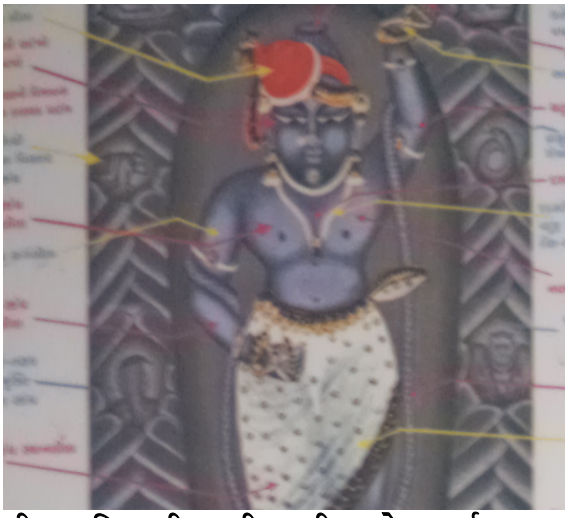

श्री हरिरायजी श्रीनाथजी के दर्शन कर भावविभोरता में अपना देह अनुसंधान भूल गये तथा स्वयं भी नृत्य करने लग गये तथा गाने लगे कि हो वारि इन वल्लभीयन पर, मेरे तन को करो बिछौना, सीस धरो इन के चरनन तर, भाव भरि देखो इन अखियन, मंडल मध्य बिराजत गिरिधर, वे तो मेरे प्राणजीवन धन, दान दिये हैं श्रीवल्लभवर.

यहां पर श्री हरिराय जी साक्षात बिराज रहे हैं. वर्तमान में भी हरिराय जी श्रीनाथ जी के सुख के लिए सदैव ही वै-णवों को प्रेरणा करते हैं.

खिमनौर नाथद्वारा की तुलना में अधिक शांतिदायक एवं प्राकृतिक स्तर पर समृद्ध है. खिमनौर में हरिराय जी की बैठक में वै-णवों को सेवा करने का अवसर बहुत ही अच्छा मिलता है. वै-णवों के हर मनोरथ यहां पूरे होते हैं.

श्री हरिराय जी ने 125 साल भूतल पर बिराज कर श्री महाप्रभु जी के सिद्धातों को पालन करने के लिए वै-णवों को मार्गदर्शन दिया.

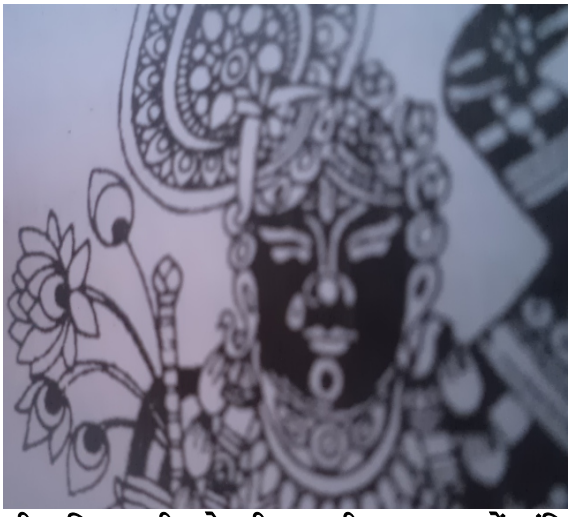

श्री हरिराय जी को श्रीनाथ जी नाथद्वारा में मंदिर में श्री बालकृ-णजी के लालजी श्री वल्लभजी से सेवा में भूल होने पर गंगाबाई को आज्ञा करते थे गंगाबाई ने कहा कि हरिराय जी को कहिये. हरिराय जी विश्राम कर रहे थे.

हरिरायजी को स्वप्न में आज्ञा की कि आज किसी ने पेंडे की गादी नहीं बिछाई है. मैं खड़ा रहकर इंतजार कर रहा हूं. हरिराय जी यह सुनकर चौंक गये. अपने सेवक उद्धोदास को सवारी के बारे में पूछा. सेवक ने धोड़े की सवारी के बारे में बताया.

तब हरिराय जी मंदिर में पधारे. पेंडे की गादी बिछाई. श्रीदाउजी महाराज की बैठक में पधारे. दाउजी ने दंडवत किया तथा कहा कि हम सेवा में भूल करें तो आपको सेवा करनी उचित है. आप वल्लभकुल सिरोमनी हैं. दाउजी बहुत ही सावधानी रखते थे.

तब हरिराय जी तेज चलने वाले वाहन हस्ती, सुखपाल, रथ, घोड़ा पर श्रीनाथ जी के पास में पहुंचकर समाधान करते थे.

जिला बाड़मेर

बाड़मेर

पंचगव्य

मोबाइल 097742093179, 09413308582 पर विश्व की सबसे बड़ी गोशाला पथमेडा राजस्थान में पृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पादन प्रा. लि. के द्वारा निर्मित सभी वस्तुए उपलब्ध हैं.

श्री पचपदरा गौशाला

1 जुलाई 1992 को गोसंरक्षण, गो नस्ल सुधार करने के लिए श्री गणपतराज चौपड़ा संरक्षक, श्री भूपतराज चौपड़ा मंत्री, श्री दयाराम खारवाल अध्यक्ष, श्री सोहन गिरी गोस्वामी को-ाध्यक्ष, श्री हस्तीमल श्रीमाल सदस्य, श्री दयाराम राखाल संचालक 9252710735, 9602392671 गंभीरता से विचार कर भावी योजना तैयार कर रहे हैं.

गोसेवा के उददेश्य से अकालग्रस्त क्षेत्र में चारा पानी की समस्या के साथ में भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड से पंजीकृत कर 2 बीघा भूमि पर 5 पेड़ लगाकर 2 कर्मचारी 227 देशी गोवंश रखकर उनकी सेवा कर रहे हैं.

श्री पचपदरा गौशाला पचपदरा नगर, पाटोदी रोड, जिला बाडमेर में स्थापना की गयी है.

सोजतरोड़

श्री कृ-ण गौशाला ट्रस्ट

श्री कृ-ण चेतन्य के द्वारा 100 बीघा जमीन पर 125 पेड़ लगाकर 783 देशी गोवंश रखकर 15 दिसम्बर 1985 को श्री कृ-ण गौशाला ट्रस्ट 20 महावीर मार्केट, सोजतरोड़ 306103 दूरभा-ा 02960-230013 की स्थापना की गयी है.

श्री सुखदेव मोदी जी मंत्री एवं संचालक, श्री दलपतसिंहजी अध्यक्ष, श्री चैनसिंहजी को-ाध्यक्ष 9660146452, श्री नारायण सिंहजी मानी प्रधान संरक्षक, श्री कान सिंहजी उप-प्रधान संरक्षक, श्री मदन सिंहजी भाटी उपाध्यक्ष 335 देशी गायों से 22 रु. लीटर दूध बेचकर 15 मिट्रिक टन दूध साल भर में उत्पन्न कर 3,30,000 रु. प्राप्त कर रहे हैं.

जनता से 32,73,438 रु. प्राप्ति तथा गोबर गोमूत्र से 2.5 लाख प्राप्त कर रहे हैं.

भावी योजना में गोमूत्र तथा खाद आधारित उद्योग लगाना है. कुल प्राप्ति सालाना 37 लाख रु. है. पानी तेलया होने के कारण जमीन का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं.

श्रीनाथद्वारा

श्री हरिराय जी की 2 री बैठक

श्री हरिराय जी की बैठक श्री नाथद्वारा में श्री विठठलनाथ जी के मंदिर में है. श्री हरिरायजी को पूर्वाभास हो गया था कि उनके छोटे भाई गोपेश्वर की पत्नी कुछ समय में लीला में पधारेगी. सेवा में सहायक पत्नी के लीला में पहुंचने पर गोपेश्वरजी यह दुःख सहन नहीं कर पायेंगे तथा उनका दुःख दूर करने के लिए यहां से प्रतिदिन एक पत्र लिखा था. कुल 41 शिक्षा पत्र लिखे थे.

मुगल आक्रमण के समय में भारत में हिंदु धर्म पर खतरा उत्पन्न हो गया था. श्री हरिरायजी को इसका पूर्व में ही आभास हो गया था. पहली बार श्री गोकुल से आप बाहर पधारे हैं.

उदयपुर के महाराणा का विशे-ा आग्रह देखकर श्रीनाथजी के परम धाम में 1715 में गोकुल से अपने सेव्य स्वरुप के साथ में बिराजकर श्री विठठलनाथजी की सेवा की है.

श्री हरिराय जी ने यहां पर श्रीमद भागवत सप्ताह की है. श्रीमद भागवत सप्ताह सुनने के लिए दूर दूर से आसपास के गांव गांव से भक्त आते थे. श्री हरिरायजी के द्वारा श्री सुबोधिनीजी में श्रीनाथजी की अदभुत लीलाओं का वर्णन करने के कारण ही वै-णवों को महा अलौकिक आनन्द हुआ है.

एक बार दर्शन करने पर वै-णवों के मनोरथ पूरे करते हैं जिससे अपार शांति मिलने के कारण ही बार बार दर्शन करने का मन करता है. श्री हरिराय जी यहां पर सदैव साक्षात बिराज रहे हैं. श्री हरिराय जी के दर्शन करने के लिए दूर दूर से वै-णव आते हैं.

वर्तमान में संध्या के समय नित्य कीर्तन, कथा, वार्ताजी आदि सतसंग किया जाता है. श्री हरिराय जी ने सतसंग पर बहुत ही अधिक जोर दिया है.

श्री हरिराय जी यहां पर नित्य कथा करते थे. एक दिन हरजीवनदास ने वेणुगीत का प्रसंग पूछा. वेणुगीत के प्रसंग को तीन दिन एवं तीन रात्रि तक भगवद आवेश में मस्त होकर लगातार वर्णन किया जिसके कारण किसी को देह का भान नहीं रहा था. सभी लीला के रस में पूरी तरह से मस्त हो गये थे. बाद में श्री हरिराय जी ने सभी को सावधान किया था. एकांत के समय में संप्रदाय के अनेक रहस्य की वार्ता प्रकट करते थे.

साहित्य मंडल

कामधेनु परिवार

श्री भगवती प्रसाद जी देवपुरा नाथद्वारा में साहित्य मंडल तथा वाचनालय चलाकर कामधेनु की बहुत बड़ी सेवा कर रहे हैं.

गोशाला

गोबर गैस संयंत्र से बायो सीएनजी

वातावरण में प्रदू-ाण को कम करने के लिए गोबर गैस संयंत्र से बायो सीएनजी के उत्पादन करने के लिए भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के द्वारा अनुमति दी गयी है.

कामधेनु सेवा

मंदिर की गोशाला में बहुत सारे गोपालों के द्वारा समर्पित भाव से सेवा की जाती है. गोवर्धन पूजा के दिन गोवंश को सम्मान करने के लिए खेल खिलाया जाता है. उनकी पूजा भी बहुत ही उत्साह के साथ की जाती है.

भगवान श्रीनाथ जी का जन्म गोवंश के संवर्धन करने तथा उनके संरक्षण करने के लिए हुआ था. गोवंश चराने के लिए 5 साल की आयु में पहली बार माथे पर मोर पंख लगाकर तथा हाथ में बंसी रखने के कारण गोपाल नाम पड़ गया था.

श्री नाथद्वारा की गोशाला में 3000 गोवंश का संवर्धन एवं संरक्षण बहुत ही अधिक धन तथा आधुनिक सुविधाओं के साथ में विशाल क्षेत्र में लंबे समय से किया जा रहा है. गोवंश को लापसी तैयार कर दूर दूर से आने वाले वै-णवों के द्वारा खिलायी जा रही है.

दूधधर

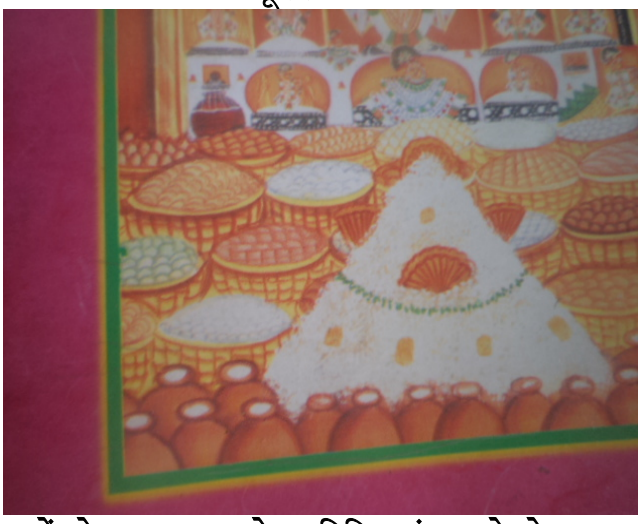

गायों के दूध का उपयोग प्रतिदिन मंगला से लेकर शयन तक के 8 दर्शनों के समय में मेवे वाला दूध, केसर वाला दूध, छाछ, मलाई युक्त दूध, दूधपाक, रबड़ी, बासुंदी, पेड़े, बरफी, गुलाब जामुन, मोहनथाल, ठोर, मठरी, मेसूर, सुहाग सूंठ, श्रीखंड, खीर, मक्खन, धी, रायता, पकवान आदि बहुत सारी सुंदर सामग्री तैयार करने के लिए किया जाता है.

प्रसाद

पूरे विश्व में वै-णव दूधधर का प्रसाद ले जाते हैं तथा साल भर ग्रहण करते हैं.

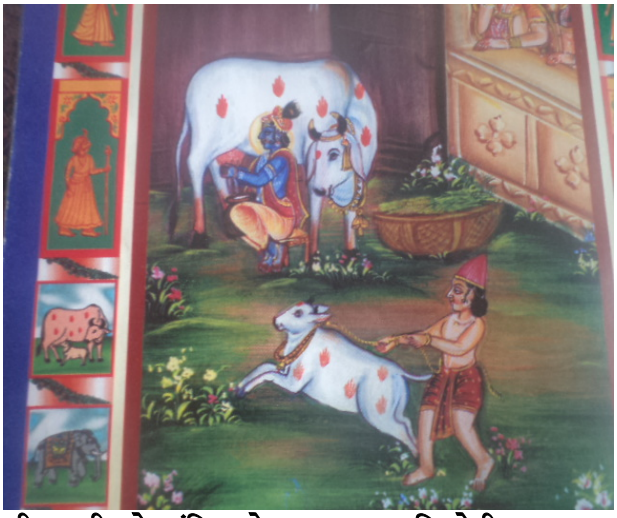

श्रीनाथजी के मंदिर से लगभग 4 किलोमीटर दूर उदयपुर मार्ग पर गोशाला में नंदबावा के समय की गायें मौजूद हैं. भगवान श्रीनाथजी को गायें सबसे अधिक प्रिय हैं.

मंदिर

श्रीनाथजी का मंदिर विशाल क्षेत्र में बनाया गया है. मंगला से लेकर शयन तक के सभी दर्शनों के लिए बहुत ही अच्छी व्यवस्था की गयी है. एक साथ में बहुत बड़ी संख्या में भक्त दर्शन कर सकते हैं.

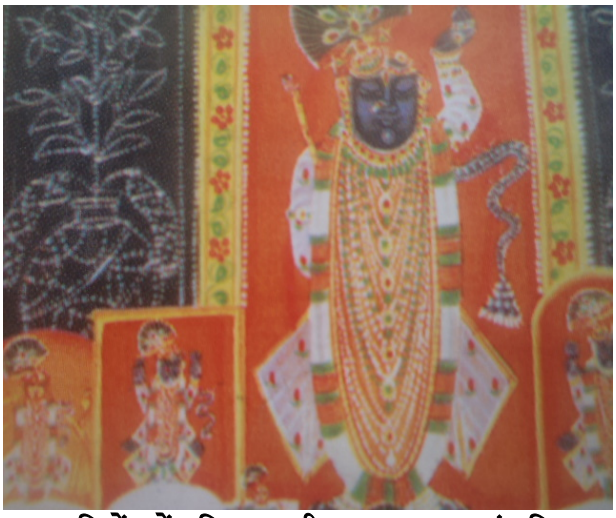

365 दिनों में नित्य नवीन अदभुत एवं दिव्य मनोहर श्रंगार एवं वस्त्र ऋतुओं के अनुसार श्रीनाथजी को किये जाते हैं.

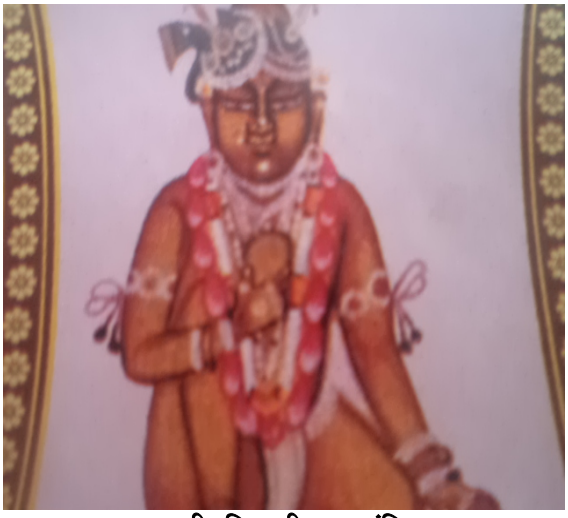

नवनीतप्रियाजी का मंदिर

श्रीनाथजी के मंदिर के पास में श्री गुंसाई जी का सेव्य स्वरुप श्रीनवनीतप्रियाजी का मंदिर है. श्रीनवनीतप्रियाजी के मंदिर में नित्य ही दूध के उपयोग से दिव्य सामग्री तैयार कर उत्सव एवं मनोरथ किये जाते हैं.

6 हजार से अधिक लोगों के पेट श्री नाथद्वारा में जुड़े हुए हैं. मंदिर में काम करने वाले लोगों को बहुत ही कम मासिक तनख्वाह दी जाती है तथा साथ में सुबह से रात्रि तक के आठ दर्शन के प्रसाद को दिया जाता है.

भगवान श्रीनाथजी के मंदिर में काम करने वाले लोग उनको मिलने वाले प्रसाद को मंदिर के बाहर की लाइसेंस प्राप्त दुकानों में बेचकर अपनी आजीविका चला रहे हैं.

बाहर से आने वाले भक्त लोगों के लिए मंदिर के आसपास में ही बहुत ही कम मूल्य पर रहने की बहुत ही अच्छी व्यवस्था धर्मशालाओं में है. आधुनिक सुविधा वाले कोटेज भी मंदिर के पास में हैं.

मंदिर से बाहर से आने वाले लोगों के लिए श्रीनाथजी के राजभोग की पातल की बहुत ही अच्छी व्यवस्था की गयी है. 365 में से 363 दिनों तक घी का ही उपयोग राजभोग में किया जाता है.

श्रीनाथजी के दर्शन करते समय श्रीनाथजी के ठुडडी में हीरा चमकता हे. आज भी हीरा चमकने पर श्रीनाथजी में लोगों का विश्वास बढ़ रहा है. दिव्य एवं मनोहर स्वरुप के एक बार दर्शन करने के लिए लोग तरसते रहते हैं. भक्त के मन में दर्शन के पूर्व तीव्र विरह होता है.

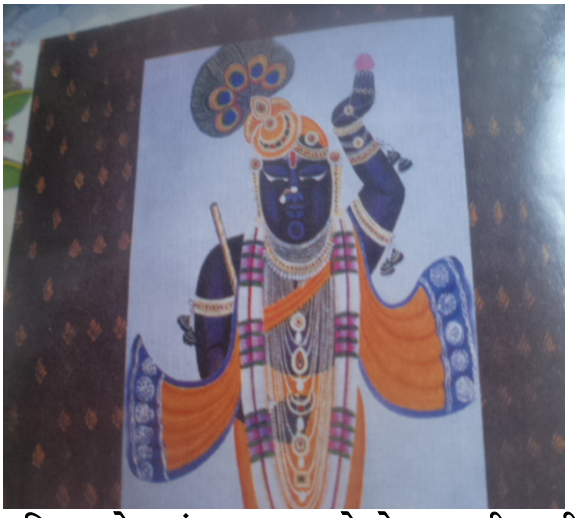

कलियुग के भयंकर प्रभाव को देखकर श्रीनाथजी के चमत्कार बहुत अधिक होने के कारण ही अनुभव करने के लिए लोग आते हैं. मानव आज भी भगवान के आगे श्रद्धा के कारण ही नतमस्तक है.

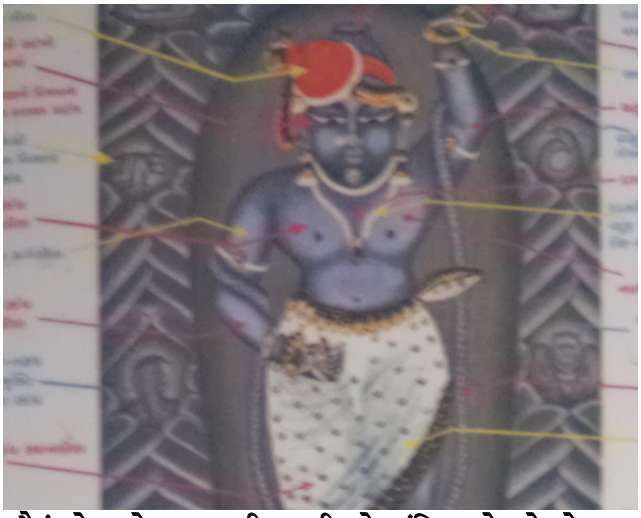

औरंगजेब के द्वारा श्रीनाथजी के मंदिर को तोड़ने के लिए आने पर दिव्य स्वरुप के भयंकर तेज के कारण ही आंख के सामने अंधकार होने के कारण अपनी दाढ़ी से साफ सफाई करनी पड़ी थी तथा प्रायश्चित के रुप में औरंगजेब के द्वारा बहुत बड़ा हीरा श्रीनाथजी को दिया गया है.

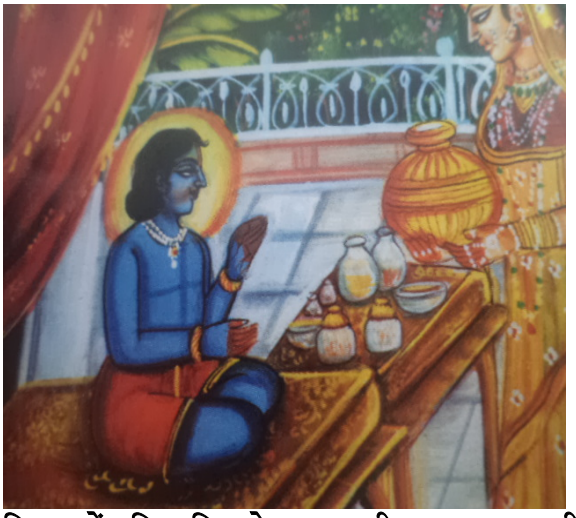

विश्व में तिरुपति के बाद श्रीनाथद्वारा अपनी अपार संपति के लिए प्रसिद्ध है. सोने एवं चादी की चक्कियां मेवा पीसने के लिए मौजूद हैं. तेल एवं घी के कुएं भी हैं. सोने के रत्नजड़ित पात्रों में राजभोग आता है.

भगवान श्रीनाथजी की मानता पूरे विश्व के 12 करोड़ लोग मानते हैं. मानता पूरी होने के बाद उसे उतारने के लिए दर्शन करने के लिए नाथद्वारा जरुर आते हैं.

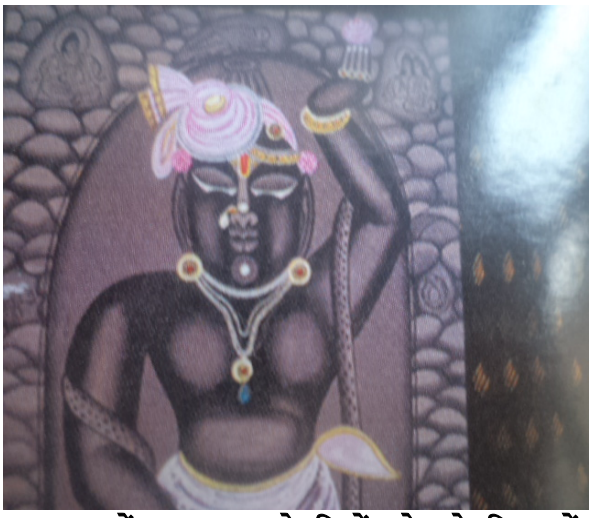

नाथद्वारा में हाथकलम के चित्रों को पूरे विश्व में बहुत ही पसंद किया जाता है. नाथद्वारा में श्रीनाथजी के वीडियो शूटिंग करने की सख्त मनाई है.

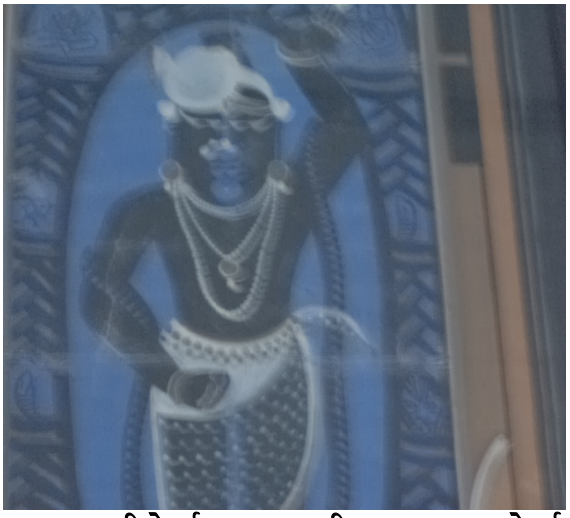

भगवान श्रीगोवर्धन नाथ जी का नाम गोवर्धन धारण करने के कारण पड़ा था.

मंदिर के संचालन करने के लिए टेम्पल बोर्ड कार्यालय में श्री गुप्ता जी एवं श्री दिनेश जोशी जी अधिकारी नियुक्त किये गये हैं.

मिराज

गोवंश के संवर्ध्न करने के लिए योग्य प्रबंधक के मार्गदर्शन में बहुत ही अच्छी व्यवस्था नाथद्वारा की गोशाला से थोड़ा आगे उदयपुर मार्ग पर स्थित मिराज में श्री मोरारी बापू के द्वारा प्रेरित करने के कारण बहुत ही लंबे समय से की जा रही है.

बहुत ही विशाल क्षेत्र में गोवंश के लिए अलग अलग आवास की बहुत ही सुंदर व्यवस्था की गयी है. साफ सफाई का विशे-ा ध्यान रखा जाता है. गोवंश के नहलाने के लिए जल की भरपूर व्यवस्था की गयी है. पेय जल के सफाई के लिए बहुत ही सावधानी बरती जा रही है.

गर्भवती गायों को अलग से देखभाल करने के लिए रखा जाता है. गर्भ के अंदर पल रहे गोवंश की देखरेख बहुत ही सतर्कता के साथ की जाती है.

हवादार एवं शांत क्षेत्र होने के कारण यहां पर गोवंश बहुत ही प्रसन्न रहता है. गोमाता का दूध बछड़ों को ही भरपेट पिलाया जाता है. हरी घांस के लिए विशाल क्षेत्र मौजूद है.

गोवंश के आहार में सभी आवश्यक रसायनों की सावधानी से व्यवस्था की गयी है. अच्छे सांढ गोमहाविज्ञान के आधार पर तैयार किये गये हैं. गोवंश संवर्धन करने के लिए काफी लोगों को बहुत ही अच्छा नियमित रोजगार दिया गया है.

गोवंश संवर्धन के लिए वित्तीय सहयोग

डा. आर. एम. खरब अध्यक्ष भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई तमिलनाडू के द्वारा पूरे भारत की गोशालाओं को हर साल 25 लाख की वित्तीय मदद की जा रही है. कामधेनु विश्वविद्यालय के लिए भी प्रस्ताव लगाया गया है. कामधेनु विश्वविद्यालय के माध्यम से नस्ल सुधारने का कार्य किया जायेगा. राजस्थान में गायों के पालन करने के लिए विश्व की सबसे अच्छी व्यवस्था है. 1000 गोशालाएं वर्तमान में मौजूद हैं. गायों की संख्या राजस्थान में करोड़ों में है.

जिला बारां

सीसवाली

श्री रामेश्वर प्रसाद नैनीवाल जी व्यवस्थापक श्री गोविंद गोशाला एवं अनुसंधान केंद्र सीसवाली दूरभा-ा 07457-270440, मोबाइल 09413828715 गोवंश संवर्धन पर अनुसंधान कार्य किया जा रहा है.

बासथूनी

श्री प्रभुदयाल नागर माधेगोविन्द गोशाला ग्राम बासथूनी दूरभा-ा 07456-254541 मोबाइल 09252026114, 0982838307743 गोवंश संवर्धन कार्य किया जा रहा है.

जिला झालावाड़

श्री हरिराज सिंह हाडा श्री कृ-ण गोशाला पुलिस लाइन क्वाटर्स में गोवंश संवर्धन का कार्य किया जा रहा है.

रटलाई

कामधेनु सेवा

श्री रेवाशंकर जी शर्मा कामधेनु चिकित्सक, आयु 77 व-र्ा 9460219429 राजवैद्य रा-द्रपति से स्वर्णपदक से सम्मानित गोवंश की बीमारी का संपूर्ण उपचार करने के लिए चंद्रोदय चिकित्सा पुस्तक 6 भागों में प्रकाशन कर चुके हैं.

गोवंश की बीमारी का उपचार आसानी के साथ में आयुर्वेद से कैसे किया जाये इसकी जानकारी देने के लिए पुस्तक का प्रकाशन किया गया है.

कामधेनु परिवार

श्री रेवाशंकर जी के द्वारा गहन अनुसंधान करने के बाद में गोमूत्र महो-धि पुस्तक का प्रकाशन किया गया है.

श्री रेवाशंकर जी की पुस्तक गोमूत्र महो-धि सभी गोशालाओं में बहुत ही लोकप्रिय हुई है. भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के द्वारा वित्तीय सहयोग प्राप्त कर गोशालाओं में युवाओं को प्रशिक्षण के समय में पुस्तक का वितरण किया जाता है.

गोमूत्र महो-धि पुस्तक के आधार पर गोमूत्र का मूल्यांकन करने के लिए भारत में बहुत अधिक कार्य हुआ है.

पंचगव्य महो-धियां

श्री रेवाशंकर जी गोवंश संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए मील का पत्थर साबित हुए हैं. श्री रेवाशंकर जी शर्मा आरोग्य मंदिर रटलाई के द्वारा गोवंश संवर्धन करने के लिए हर गांव में जाकर पंचगव्य दवाओं के निर्माण के बारे में प्रशिक्षण 20 सालों से दिया जा रहा है. श्री रेवाशंकर जी के द्वारा राजस्थान गोसेवा आयोग की सदस्यता ग्रहण कर गोशालाओं में दवाओं का निर्माण प्रारम्भ किया गया है.

जालोर जिला

जालोर

पंचगव्य

मोबाइल 09414842975 में विश्व की सबसे बड़ी गोशाला पथमेड़ा में पृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पादन प्रा. लि. के द्वारा निर्मित सभी वस्तुएं उपलब्ध हैं.

हरजी

श्री प्रताप राम जी श्री गायत्री गोशाला हरजी तहसील आहोर दूरभा-ा 02978-229396 गोवंश संवर्धन कर रहे हैं.

बागरा

श्री हीरा राम गाची जी, जीवदया गोशाला स्टेशन रोड, बागरा निवास जयगुरुदेव ट्रेडर्स बागरा दूरभा-ा 02973-254277 गोवंश संवर्धन का कार्य कर रहे हैं.

भीनमाल

पंचगव्य

मोबाइल 09413854449 में विश्व की सबसे बड़ी गोशाला पथमेड़ा राजस्थान में पृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पादन प्रा. लि. की सभी वस्तुएं उपलब्ध हैं.

श्री चामुंडा माता जी जीवदया गौशाला

1999 में श्री किरतीलाल जे. शाह संस्थापक, संचालक के द्वारा श्री चामुंडा माता जीवदया गौशाला अरणु, डाकधर कावतरा तहसील भीनमाल, जिला जालोर 343030 दूरभा-ा 02969-257140 स्थापित की गयी है. राजस्थान गो सेवा आयोग के द्वारा 1999 में पंजीकृत की गयी है.

सर्वश्री अबालाल एस. शाह अध्यक्ष 9440895919 के द्वारा देशी गोवंश के नस्ल सुधार करने के लिए अचछे सांढ तैयार करने के लिए संगठित होकर कार्य प्रारम्भ किया गया है.

श्री कैलाशभाई जी सिरोया उपाध्यक्ष, श्री मांगीलाल तिलोकचंद जी जैन को-ाध्यक्ष 9833867001, श्री सुरेश कुमार मिठालाल जी जैन उपको-ाध्यक्ष 9825061671, श्री गौतम चंद डी. चोपड़ा सचिव 9414108214, श्री प्रवीण कुमार एम. शाह उप सचिव 9925028274, श्री बाबूलाल एम. कवाड सह सचिव 9898093414, श्री बलवंतसिंह एम. राठौड व्यवस्थापक 9982866134, श्री अमृतलाल एम. बालर न्यासी 9000219931, श्री रिकबचंद टी. जैन न्यासी 9825203444, श्री पारसमल एम. धारीवाल न्यासी 9414445505 जनता से भरपूर सहयोग लेकर हरा चारा उगाने के साथ में सक्रिय रुप से गोमूत्र से फिनाईल जैसी आवश्यक वस्तुओं के लिए प्रयत्नशील हैं.

वर्तमान में 13 सालों से जैविक दूध तथा दूध के उत्पाद, जैविक खाद से खेती, सी.एन.जी., पंचगव्य से स्वावलंबन जैसे अनेक वि-ायों पर कार्य करने की योजना है.

अखिल विश्व गायत्री परिवार

श्री कोलपद जी सोनी, गायत्री गोसेवा समिति गोशाला, माता भगवती वाटिका, क्षेमंकरी माता रोड, एवं निवास मातौलाजी बड़ा चौहटा भीनमाल 343029 मोबाइल 09414152980 में गोवंश का संपूर्ण संवर्धन कर पंचगव्य औ-ाधियों का निर्माण किया जा रहा है.

विश्व की सबसे बड़ी गोशाला

विश्व की सबसे बड़ी गोशाला भी राजस्थान में है. महाअकाल के समय में 2 लाख 80 हजार गोवंश को बचाकर रखा गया था. 9 सालों से कामधेनु कल्याण महोत्सव का आयोजन विश्व की सबसे बड़ी गोशाला गोपाल गोवर्धन पथमेड़ा तहसील सांचोर जिला जालोर राजस्थान में किया जा रहा है जिसमें गोपालन करने पर 5 दिनों तक पूरे भारत के लाखों समर्पित गोवंश सेवकों के द्वारा चिंतन किया जाता है. कामधेनु कल्याण मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है. राजस्थान में महाअकाल के कारण दूध का उत्पादन प्रभावित हुआ है.

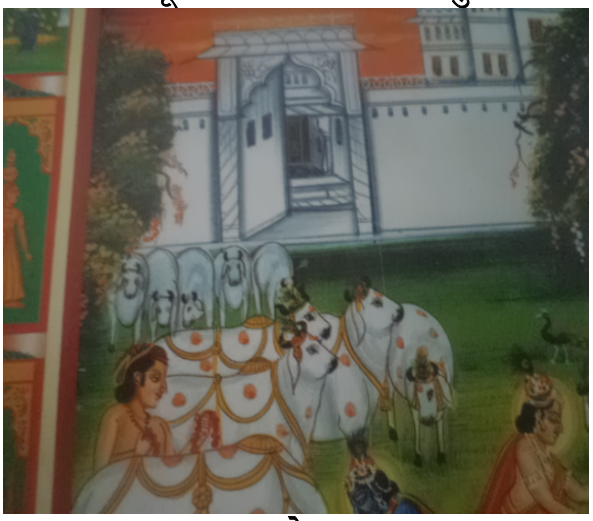

पथमेड़ा

परिचय

परम श्रद्धेय श्री दतशरणानंद जी महाराज के द्वारा गोमहातीर्थ पथमेड़ा तहसील सांचोर जिला जालोर राजस्थान 343041 02979-253101, 2 एवं 9, 9414152168, 9414154706 तक गोवंश संरक्षण संवर्धन करने के लिए यहां के पूर्व इतिहास 5235 साल को पूरी तरह से ध्यान में रखकर 1993 से कार्य करना प्रारम्भ किया है.

1993 में मात्र 8, 1999 में 90,700, 2001 में 1,26,000, 2005 से 2009 तक 97,000, 2010 में 1,00,000 2012 में 1,30,000 कांकरेज, सांचोरी, थारपारकर गोवंश का संरक्षण किया गया है.

ऊर साल हजारों गोवंश को उपयोगी बनाकर समाज को लौटाया जाता है. देश में 3000 और राजस्थान में 600 नई गौशालाओं की स्थापना की गयी है.14,000 कमजोर वृद्ध, बीमार नंदियों की सेवा की जा रही है.

अपने निश्चित कार्यक्रम में विश्व की सबसे बड़ी गोशाला के माध्यम से तेजी से कार्य चल रहा है.

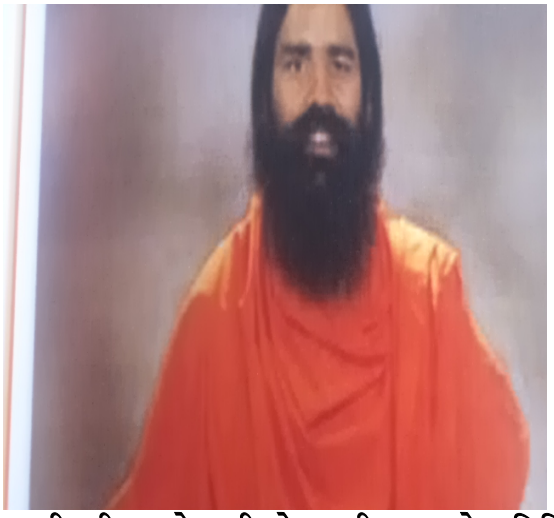

स्वामी श्री रामदेव जी ने पहली बार योग शिविर पथमेड़ा में लगाया था तथा गोवंश के संवर्धन से प्रवाभित होकर 5 करोड़ दिया था.

गोपालमणि जी गो कथा पथमेड़ा में कर चुके हैं. हजारों गोवंश सेवक कामधेनु कल्याण करने के लिए तन, मन एवं धन से लग गये हैं.

2011 में परिवर्तन दिखाई देगा. आने वाले 100 सालों में विश्व में गोवंश संवर्धन करने के लिए पथमेड़ा मार्गदर्शन अवश्य ही करेगा. विश्व का ध्यान अब पथमेड़ा

के क्रांतिकारी परिवर्तन की ओर पूरी तरह से लगा है. रा-ट्रीय कामधेनु परिवार पूरी तरह से सक्रिय होकर तेजी से कामधेनु कल्याण करने के लिए मार्गदर्शन कर रहा है.

कार्यक्षेत्र

राजस्थान में पथमेड़ा में ही अलग अलग प्रकल्प, जालोर, सिरोही बाड़मेर जैसलमेर बीकानेर नागोर जोधपुर तथा गुजरात में श्री नारायणभाई जी, श्री गोपाल परमार्थ केंद्र 24/1, न्यू क्लोथ मार्केट, सारंगपुर अहमदाबाद 380002 दूरभा-ा 079-66052184 श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला 106 मोमाई कोम्प्लेक्स, न्यू बोम्बे मार्केट के सामने, सहारा दरवाजा सुरत दूरभा-ा 0261-2369777 मोबाइल 09426140777, 09374715062, 09428142777, श्री लीलाधरभाई श्री जलाराम गो सेवा केंद्र हरिधाम भाभर जिला बनासकांठा 09824031101, कुल 52 क्षेत्रों में हजारों की संख्या में कुपो-ाण की शिकार, असहाय अपंग लूली लंगड़ी बीमार गोवंश को रखा जाता है.

गोवंश संरक्षण

महाअकाल के समय में 2 लाख 80 हजार गोवंश को बचाकर गोमूत्र एकत्र किया जाता था. वर्तमान समय में 1 लाख 25 हजार गोवंश का मूत्र एकत्र कर बहुत ही कम मूल्य पर दवा तैयार करके एडस के मरीजों का उपचार पूरे भारत में कर रहे हैं. प्रतिमाह 8 लाख रु. की दवाएं तेयार की जा रही हैं. पथमेडा तथा आसपास से कतलखाने जाने वाले गोवंश को कटने से बचाने के लिए कसाइयों से मुक्त करवा कर गोवंश को रखा जाता है. हर साल होने वाले सम्मेलनों के अलावा भी कई कार्यक्रम चल रहे हैं जिसमें आसपास के लोग बहुत ही उत्साह के साथ जुड़ गये हैं.

गोपालन

महाअकाल के समय में गोवंश शिविरों में गोवंश को रखकर उनकी सेवा बहुत ही प्रेम से लंबे समय तक की गयी है.

केचुआ खाद

केंचुआ खाद बहुत बड़े स्तर पर तैयार करने का अभियान बहुत ही लंबे समय से चल रहा है. वर्तमान में 10 टन केंचुआ खाद तैयार की जा रही है.

केंचुआ खाद को तैयार करने का प्रशिक्षण भी दिया जाता हैै. केंचुआ बैंक तैयार करने की योजना है. केंचुआ खाद के निर्यात करने के लिए अनुसंधान किया जा रहा है.

गोधाम पथमेड़ा में 10 सालों से मुरारका फांउंडेशन के लगातार अनुसंधान के बहुत ही अच्छे परिणाम देखने मिल रहे हैं. किसानों में भी परिवर्तन देखने मिल रहे हैं: किसानों को अब बहुत ही कम पानी में खेती करने की सुविधा हो गई है.

फसलों की गुणवत्ता में सुधार हुआ है. रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास लोगों को हो जाने से एडस का खतरा कम हो रहा है. पर्यावरण में भी संतुलन बहुत अच्छे मूल्य पर मिल रहा है.

जैविक अनाज बहुत अच्छे मूल्य पर बिक रहा है. वर्मी वाश का निर्माण भी किया जाता है. केंचुआ खाद निर्माण करने के लिए प्रशिक्षित एवं समर्पित कार्यकर्ता मौजूद हैं.

रसायनिक खाद को पूरी तरह से दूर करने के लिए गांव गांव में लहर उत्पन्न की गयी है. केंचुआ खाद बहुत ही अच्छी कीमत में बेच दिया जाता है. केंचुआ खाद को चाय के निर्यातक बहुत आसानी से खरीद रहे हैं.

गोरस भंडार

दूध पावडर वर्तमान में 200 ग्राम, आधा किलो तथा 1 किलो की पैकिंग में दिया जा रहा है. गोरस भंडार का उददेश्य ग्रामीण अंचल में पल रही देशी नस्ल के संवर्धन करने के लिए देशी सांढ के विकास करने के लिए है.

गोरस भंडार के माध्यम से हर गांव में गोपालन के माध्यम से रोजगार को उपलब्ध करवाना है. गोरस भंडार में अच्छे मूल्य पर गो दुग्ध को खरीदने के लिए योजना तैयार की गयी है. गोरस भंडार में सार्वजनिक भूमि पर सभी की सहमति से कार्य प्रारम्भ किया जायेगा.

गोरस भंडार में गो दुग्ध एकत्र कर उससे दही तैयार कर तथा मक्खन से घी बनाने का कार्य किया जाता है. घी हवन तथा दवा के रुप में लोगों को 300 रु. किलो दिया जाता है.

मध्यप्रदेश में अमरकंटक में महान संतो ंके द्वारा

21 अप्रेल से 29 अप्रेल 2007 में हुए महारुद्र यज्ञ करने के लिए 1000 टिन घी पथमेड़ा से 8 माह पूर्व धन जमा करने पर उपलब्ध करवाया गया था.

2010 में हरिद्वार में होने वाले कुंभ में भी हवन के लिए आवश्यक घी की पूर्ति पथमेड़ा ही करेगा.

श्री कामधेनु पंचगव्य औ-धालय

श्री कामधेनु पंचगव्य औ-धालय का उददेश्य गोवंश के संवर्धन करने के साथ में पंचगव्य दवाओं से लोगों को पूरी तरह से निरोग करना है. वर्तमान में विश्व की सबसे अधिक दवाएं 10 लाख रु. की दवाएं हर माह तैयार की जाती हैं.

वर्तमान में 6 करोड़ का नुकसान गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा को है. गोमाता धारावाहिक हाल ही में प्रारम्भ किया गया है. देखने वालों की संख्या बहुत ही गिनी चुनी है.

पंचगव्य दवाएं तैयार करने के लिए देशी गोवंश थारपारकर, नागोर, राठी का पूरा ध्यान रखा जाता है. देशी नस्ल को सुरक्षित रखने के लिए नंदीशाला में बढिया सांढ़ तैयार किए गये हैं.

पंचगव्य दवाओं के बारे में निरंतर अनुसंधान किये जा रहे हैं. गोमूत्र को एकत्र करने के लिए प्रशिक्षित गोपाल मौजूद है.

काले रंग की बछियाओं का ताजा मूत्र अलग से प्रातःकाल बहुत ही एकाग्रता के साथ में एकत्र किया जाता है. नवजात बछड़ों का प्रथम गोबर बहुत ही ध्यान से एकत्रित किया जाता है. अलग अलग रोगों के लिए अलग अलग दवाएं तैयार की जा रही हैं.

बहुत बड़े स्तर पर दवाओं का निर्माण किया जा रहा है. गांव गांव में दवा बनाने के लिए प्रशिक्षण भी दिया जाता है. प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए पूरे विश्व से लोग पथमेड़ा में आकर रुककर लाभ प्राप्त कर चुके हैं.

धनवंतरी

धनवंतरी में गोवंश की बीमारी का उपचार सभी आधुनिक सुविधाओं के साथ बहुत ही समर्पित गोवंश सेवकों के माध्यम से किया जाता है.

गोवंश की साफ सफाई का पूरा ध्यान रखा जाता है. गोवंश की साफ सफाई करने के लिए पथमेड़ा में गोवंश सेवकों की बहुत बड़ी संख्या मौजूद है.

गोवंश के आहार के लिए भी विशे-ज्ञ मौजूद है. गोचर के लिए अलग से गोचर की भूमि रखी गयी है.

वेबसाइट

हर राज्य में गोवंश के संपूर्ण विकास करने के लिए कामधेनु विश्वविद्यालय खोलने के लिए पथमेड़ा में नयी वेबसाइट पथमेड़ागोदर्शन डाट कोम सरल हिंदी में दिसम्बर 2007 में विधिवत प्रारम्भ की गयी है.

वेबसाइट में गोवंश के बारे में आवश्यक हर जानकारी देने का प्रयत्न किया गया है. असाध्य रोगों से ग्रसित लोंगों को पंचगव्य दवाओं के बारे में वेबसाइट के माध्यम से संपूर्ण मार्गदर्शन देने का प्रयास किया गया है. वेबसाइट में पूरे भारत में गोसेवकों के मोबाइल तथा दूरभा-ा भी दिए गये हैं.

वेबसाइट के माध्यम से विश्व में मौजूद भारतीय

विश्व की सबसे बड़ी गोशाला के प्रमुख उददेश्य एवं लक्ष्य से पूरी तरह से परिचित हो सकें.

कामधेनु कल्याण करने के लिए लालायित लोग एक मंच पर रा-ट्रीय कामधेनु परिवार में सम्मिलित होकर परिवर्तन कर सकें. विश्व के गोप्रेमी गोसेवा एवं गोरक्षा करने के लिए अधिक से अधिक धन देकर सहयोग करे.

गुरुकुल

गुरुकुल का उददेश्य गोवंश के संवर्धन करने वाले बच्चों के निर्माण करने का है. गुरुकुल में पूरी तरह से निःशुल्क पढ़ाया जाता है.

गुरुकुल में पढ़ने वाले बच्चे को गोमाता का ही दूध तथा दूध से बना पदार्थ ही दिया जाता है. सात्विक आहार के कारण गुरुकुल में पढ़ने वाले बच्चे का दिमाग बहुत ही तेज रहता है. कठोर तप के कारण ही गुरुकुल का बच्चा पूरी तरह से सजग, सक्रिय तथा स्फूर्ति वाला रहता है.

गुरुकुल में पढ़ने वाले बच्चे को हर तरह का ज्ञान मिलता है. गुरुकुल में पढ़ाने वाले आचार्य पूरी तरह से समर्पित हैं. गुरुकुल में पढ़ने वाले हर बच्चे को कठोर अनुशासन में रखा जाता है. गुरुकुल में प्रवेश आश्रम के नियमों का पालन करने वाले को ही दिया जाता है.

कामधेनु पाठशाला

गुरुकुल में कामधेनु पाठशाला तैयार की गयी है जिसमें गोवंश की पूरी प्रत्यक्ष जानकारी दी गयी है.

कामधेनु चेनल

कामधेनु चेनल भी बहुत ही जल्दी प्रारम्भ किया जा रहा है. कामधेनु चेनल के माध्यम से विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम को पहले से रखकर मानस तैयार करना संभव है. गोवंश के पक्ष को विश्व के सामने बहुत ही अच्छी तरह से रखना संभव है.

गोमाता धारावाहिक

गोमाता के नाम से लगातार 20 सप्ताह से धारावाहिक श्री शंभु सीनी जी के द्वारा तैयार किया गया सबसे लोकप्रिय आस्था चेनल पर रविवार के दिन सुबह 9 बजे आधे घंटे का दिखाया जा रहा है. विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा के पूर्व मानसिकता तैयार करने के लिए गोमाता का महत्वपूर्ण योगदान है.

आस्था चेनल पूरे विश्व के लगभग 200 देशों में देखा जा रहा है. सुबह 9 बजे का समय बहुत ही सही समय रहता है. सुबह 9 बजे दर्शक बहुत ही प्रसन्नचित्त रहता है. पूरे परिवार के साथ बहुत ही भक्तिभाव के साथ में दर्शकगण बैठ रहे हैं. आधा घंटा दर्शक का मानस पूरी तरह से बदलने के लिए बहुत है. रविवार को अवकाश होने के कारण गोमाता को देखने वालों की संख्या अधिक रहती है.

गोमाता में प्रेरक प्रसंग बहुत ही तैयारियों के साथ में दर्शकों को भावुकता के साथ में दिखाये जाते हैं जिसको देखकर गोवंश की सेवा की ओर अपने आप मन लग जाये. अंत में पथमेड़ा के बारे में दर्शकों को रोचक ढंग से बताया जाता है.

कामधेनु विश्वविद्यालय

मध्यप्रदेश

कामधेनु विश्वविद्यालय हर राज्य में प्रारम्भ करने के लिए पथमेड़ा में रुपरेखा पूरी तरह से तैयार की गयी है. मध्यप्रदेश में भी मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान जी के द्वारा कामधेनु अभ्यारण सरगुजा में तैयार किया गया है.

छतीसगढ़

छतीसगढ़ राज्य में कामधेनु विश्वविद्यालय खोलने के लिए डाक्टर रमनसिंह मुख्यमंत्री के पथमेड़ा में स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराज से मिलकर योजना अंजोरा में तैयार की गयी है. 2012 मई माह में पूरी तैयारियां कर ली गयी हैं.

गुजरात

श्री नरेन्द्र मोदी जी के व्यक्तिगत पथमेड़ा जाने पर तथा अहमदाबाद में भी प्रतिनिधि के नियमित संपर्क करने के कारण ही गुजरात राज्य में भी कामधेनु विश्वविद्यालय 15 मई 2009 को सौरा-ट्र में खुल गया है.

कामधेनु विश्वविद्यालय के माध्यम से राज्य में गोवंश का सम्मान करने के लिए गोवंश की उपयोगिता को अर्थशास्त्र के आधार पर समझाने के लिए नियम, आर्थिक अध्ययन, उपभोग, गोवंश से प्राप्त आय नंदी के विकास करने के लिए संपूर्ण जानकारी, नंदी के माध्यम से नस्ल के विकास करने के लिए गोमहाविज्ञान का संपूर्ण ज्ञान, बीमारी में गोवंश के उपचार करने के लिए संपूर्ण ज्ञान, आहार की विस्तृत जानकारी गोचर की भूमि का महत्व एवं उसकी सुरक्षा गोवंश के रहने के लिए आवश्यक जगह का चयन करना गर्भवती गायों की देखभाल नवजात बछड़ों के बारे में संपूर्ण ज्ञान पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए गोवंश की भूमिका, अग्निहोत्र, अग्निहोत्र से चिकित्सा पंचगव्य चिकित्सा विज्ञान प्रणाली, पंचगव्य से उपचार करने पर परिणाम, महापंचगव्य के निर्माण करने का ज्ञान पंचगव्य पर अनुसंधान विश्व में पंचगव्य पर चल रहे कार्यों की जानकारी खेती में गोवंश की भूमिका, खाद्य समस्या का निवारण, दूध से तैयार जैविक उत्पादों का निर्यात करने के लिए अध्ययन आदि को समझाकर जनमानस तैयार करने के लिए प्रस्ताव रखा गया है.

कामधेनु कल्याण का प्रकाशन

पूरे भारत में रा-ट्रीय कामधेनु परिवार बनाने के लिए तथा कामधेनु चेनल प्रारम्भ करने के लिए तथा कामधेनु के संपूर्ण विकास करने के लिए उदारमना हिंदुओं को विश्व की सबसे बड़ी गोशाला से हर महत्वपूर्ण वि-ाय पर नियमित जानकारी देने के लिए कामधेनु कल्याण मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है.

पहले त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित हो रही थी. लोगों की बढ़ती हुई रुचि को ध्यान में रखकर पत्रिका को मासिक किया गया है. 10,000 प्रतियां हर माह प्रकाशित की जा रही हैं.

गो आधार

गो आधार पाक्षिक 50,000 प्रतियों के साथ में प्रकाशित की जायेगी. गो आधार के प्रकाशन के बाद में पथमेड़ा के बारे में जानकारी बहुत सारे लोगों को हो जायेगी.

पूरे भारत में कामधेनु कल्याण के प्रतिनिधि मौजूद हैं. प्रतिनिधियों से मिलकर पुराने अंक प्राप्त किए जा सकते हैं. सरल हिंदी में कामधेनु कल्याण का प्रकाशन किया जाता है. साल भर की सहयोग राशि 125 रु., आजीवन सदस्यता 1100 रु. है.

सीडी

ओडियो सीडी

ओडियो सीडी 6 तैयार की गयी हैं जिसमें गोवंश प्रेमियों को बहुत सारी जानकारियां उपलब्ध हैं.

वीडियो सीडी

वीडियो सीडी भी तैयार की गयी है.

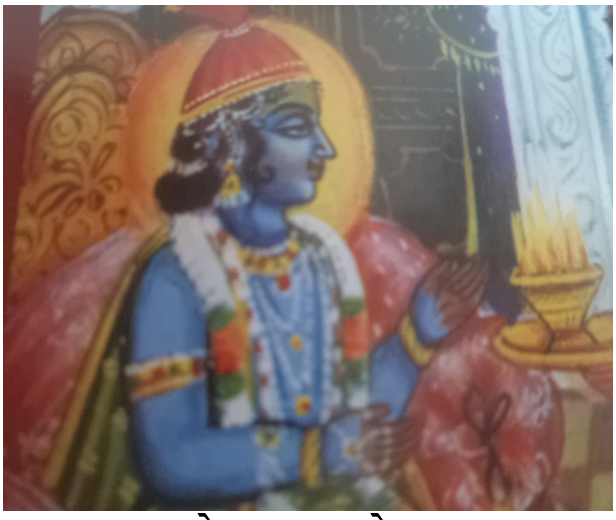

कामधेनु कल्याण महोत्सव

1999 से विश्व की सबसे बड़ी गोपाल गोवर्धन गोशाला में दिसम्बर माह में कामधेनु कल्याण महोत्सव का आयोजन किया जाता है जिसमें भाग लेने के लिए पूरे भारत के आमंत्रित महत्वपूर्ण गोवंश सेवक आते हैं. पूरे भारत से बहुत बड़ी संख्या में गोवंश के प्रेमी जिज्ञासा के कारण एक बार अवश्य ही आये हैं.

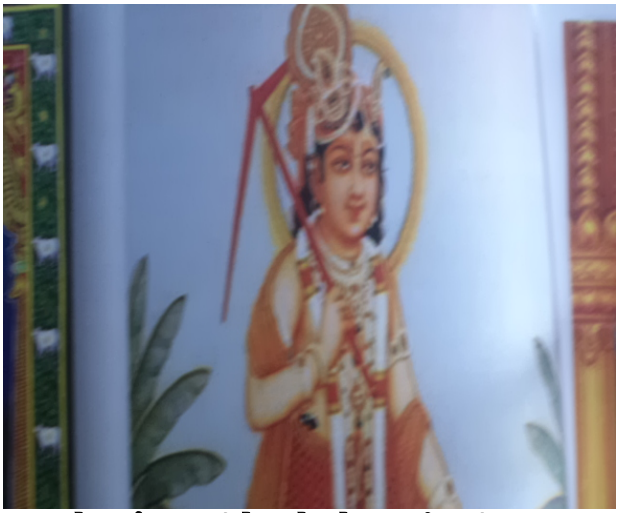

रा-ट्र के वर्तमान परिवेश में गोवंश की भूमिका पर गहन चिंतन सुबह से लेकर देर रात तक किया जाता है. गोवध को पूरी तरह से बंद करने के लिए नयी नीतियां बनाने के लिए प्रस्ताव बनाये जाते हैं. कामधेनु कल्याण महोत्सव में भाग लेने वालों को कामधेनु के कल्याण करने के कार्य करने के लिए विशे-ा उर्जा मिलती है.

18 दिसम्बर 2007 को कामधेनु कल्याण महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है. हर घर में गोपालन करने के लिए संकल्पित महाराज श्री प्रेरणा लोगों को दे रहे हैं. उनके द्वारा मेहमानों के रहने नाश्ते तथा भोजन की बहुत ही अच्छी व्यवस्था की जाती है.

देशी गाय माता का ताजा दूध तथा गाय माता के घी में बना हुआ दलिया ही दिया जाता है. 5 दिनों तक चिंतन चलता रहता है. स्मारिका का प्रकाशन हर साल किया जाता है.

धर्मशाला

बाहर से आने वाले गोवंश सेवकों के रहने के लिए वर्तमान में बहुत ही अच्छी व्यवस्था के साथ में धर्मशाला श्री रामनिवास जी ने अपने पिता की याद में 1 करोड़ खर्च कर तैयार की है. श्री रामनिवास जी ने लंबे समय से धर्मशाला की आवश्यकता का अनुभव करने के बाद में धर्मशाला बनवाने का निर्णय लिया है.

श्री रामनिवास जी कपड़ा व्यवसायी हैं. 12 से अधिक जगह पर कपड़ों का बहुत बड़ा कारोबार है. धर्मशाला में अचानक कई तीर्थयात्री भी रुकने के लिए आ जाते हैं. हर साल योग शिविर, भगवान की कथाएं, सतसंग जैसे बहुत सारे कार्यक्रम पथमेड़ा में आयोजित किये जाते हैं.

ऐसे कार्यक्रमों में बहुत दूर से लोग आते हैं. महोत्सव के समय भी बाहर से आने वाले लोगों के लिए बहुत अच्छी सुविधा है. धर्मशाला बनने के बाद में मरीजों को उपचार करवाने के लिए अधिक दिनों तक रुकना अब संभव है.

चितौड़गढ़ जिला

चितौढ़गढ़

कामधेनु परिवार

कामधेनु के संरक्षण तथा सेवा के लिए चितौड़गढ़ पूरे विश्व में प्रसिद्ध है. आज भी हर घर में नियमित गो ग्रास के साथ में कामधेनु की सेवा का संकल्प है.

नंदी

चितौड़गढ़ के आसपास के क्षेत्रों में कामधेनु के संवर्धन करने के लिए स्वस्थ नंदी के विकास करने के लिए राजस्थान सरकार पशुपालन विभाग चितौड़गढ़ में जागृत है.

अखिल विश्व गायत्री परिवार

कामधेनु परिवार

कामधेनु परिवार की भावना हर धर में पहुंचाने के लिए कामधेनु साहित्य तथा पंचगव्य महो-धियां उपलब्ध करवाने के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार का हर परिजन सक्रिय है.

हवेली

कामधेनु परिवार तैयार करने के लिए श्री गिरीराज यानी श्री गोवर्धन की सेवा लंबे समय से की गयी है. बाहर से आने वाले वै-णव को आग्रह पूर्वक महाप्रसाद की सुंदर व्यवस्था है.

व्यक्तिगत स्तर पर जागृत ब्राहमण सेवा निवृत प्राचार्य जी का दिव्य प्रयत्न है.

श्री वल्लभाचार्य जी के सिद्धांतों पर आधारित हवेली प्रतिदिन उत्सव तथा मनोरथ के साथ में सुंदर दर्शन वै-णवों को करवाने के लिए श्री सारस्वत जी के द्वारा चलायी जा रही है.

आर्य समाज

कामधेनु सेवा

आर्य समाज के द्वारा एक गोशाला चलायी जा रही है जिसमें कामधेनु की सेवा संतो के द्वारा की जाती है. गुरुकुल में पढ़ने वाले बच्चों को दूध तथा दही एवं छाछ भोजन के अलावा प्रतिदिन दी जाती है.

कामधेनु परिवार

कामधेनु परिवार की भावना का विकास करने के लिए प्रतिदिन हवन किया जाता है. हवन वेद मंत्रों के साथ में गाय माता के घी से किय जाता है. गुरुकुल में कामधेनु सेवा के बारे में बचपन से ही संस्कार दिये जाते हैं.

पंचगव्य दवाएं

1998 से भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग एवं राजस्थान गो सेवा आयोग के वित्तीय सहयोग से श्री मोहनलाल जी नामधर मोबाइल 09460711099 गोपाल गोशाला, 1, रामधाम, मीरा मार्केट,

भीलवाड़ा मार्ग, चितौड़गढ़ राजस्थान 312001 दूरभा-ा 01472-240852, 240362, 242770 में रा-ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिंदु परि-ाद बजरंग दल के साथ में मिलकर गोवंश रक्षा करने के लिए अभियान चलाया जा रहा है.

संत सेवा

साधु संतों को प्रतिदिन प्रातःकाल भोजन करवाया जाता है. गीताप्रेस गोरखपुर का साहित्य बिक्री किया जाता है. लोगों को गोवंश को हरे चारे खिलाने के लिए हरे चारे बेचने वालों को सुबह से संध्या तक गोशाला के बाहर बिठाया जाता है. गोवंश को हरा चारा इस तरह से प्रतिदिन मिल जाता है. लोगों में भी गोवंश के लिए हरे चारे के कारण ही बहुत ही अधिक उत्साह है.

10 साल से 250 गोवंश से सुबह ब्रहम मूहर्त में गोमूत्र एकत्र कर उनसे बहुत ही कम मूल्य पर असाध्य रोग को दूर करने के लिए दवाएं तैयार की जा रही हैं.

प्रशिक्षण

श्री रेवाशंकर जी शर्मा राजवैद्य रा-ट्रपति से स्वर्ण पदक से सम्मानित आरोग्य मंदिर रटलाई झालावाड़ राजस्थान के मार्गदर्शन में दवा बनाने के लिए प्रशिक्षण दो सालों तक चला था. श्री रेवाशंकर जी ने पूरे भारत में गोशालाओं में दवाएं तैयार करने का प्रशिक्षण दिया था.

प्रकाशन

4000 पुस्तकें गोमूत्र महो-धि का प्रकाशन किया जाता है. वीडियो सीडी, डीवीडी, उपयोगी साहित्य के माध्यम से लोगों को एडस के बारे में विस्तार से बताया जाता है.

वैद्य

प्रतिदिन मरीजों के परीक्षण करने के लिए योग्य वैद्यों के देखरेख में कार्य सुबह से लेकर संध्या तक चल रहा है. परहेज करने के बारे में भी समझाया जा रहा है. चितौड़ जिले के सम्मेलन के माध्यम से लोगों में कामधेनु सेवा के लिए उत्साहवर्धन किया जा रहा है.

सावलिया

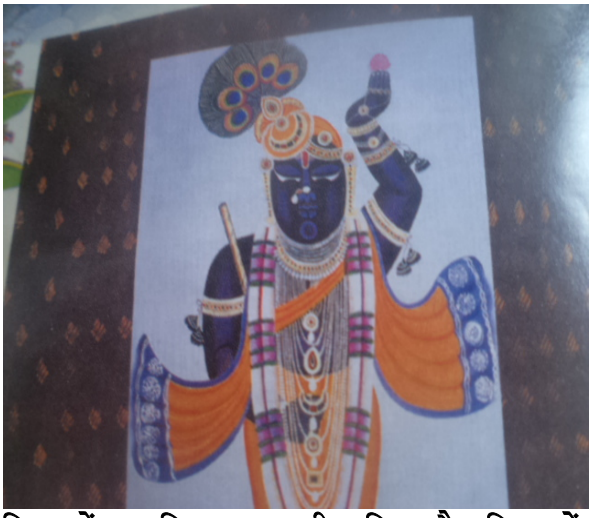

विश्व में सावलिया बहुत ही प्रसिद्ध है. विश्व में सावलिया का बहुत ही भव्य एवं अदभुत मंदिर विशाल क्षेत्र में निर्माण किया गया है.

सावलिया गिरधारी लज्जा राखो मारी और सावलिया सेठ भरो मारो पेट सावलिया के दर्शन करते समय हर कोई बोलता है.

चितौड़गढ़ से 25 किलोमीटर दूर सावलिया स्थित है. प्रतिदिन यहां पर बहुत बड़ी संख्या में विश्व से लोग अपने को धन्य करने के लिए अवश्य ही आते हैं.

विश्व से हर कोई सावलिया की मानता मान कर मानता को पूरी होने के बाद में उतारने के लिए जरुर आते हैं.

सावलिया में बाहर से आने वालों के लिए रुकने के लिए बहुत ही अच्छी धर्मशाला है.

मंदिर की ओर से 35 रु. में भोजन की व्यवस्था है.

सावलिया में पूरे विश्व से लोग दर्शन करने आते हैं. बाहर से आने वाले लोगों के लिए गोमाता के दूध से तैयार प्रसाद बिक्री किया जाता है.

सावलिया में 70 एकड़ भूमि पर गोशाला है. गोवंश के लिए हरे चारे की विशे-ा व्यवस्था की गयी है.

700 के आसपास गोवंश हैं. नस्ल सुधार करने के लिए विचार है. गोशाला को स्वावलंबी बनाने के लिए गोबर तथा गोमूत्र का अधिकतम उपयोग करने के लिए विचार है.

हर माह सावलिया में 1 करोड़ के आसपास धन एकत्र होता है. सोना, चांदी, हीरा, मोती के गहने बहुत बड़ी मात्रा में लोग चढ़ाते हैं.

भीलवाड़ा जिला
भीलवाड़ा

पंचगव्य

मोबाइल 09413357589 में विश्व की सबसे बड़ी गोशाला पथमेड़ा राजस्थान में पृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पादन प्रा. लि. के द्वारा निर्मित सभी वस्तुएं उपलब्ध हैं.

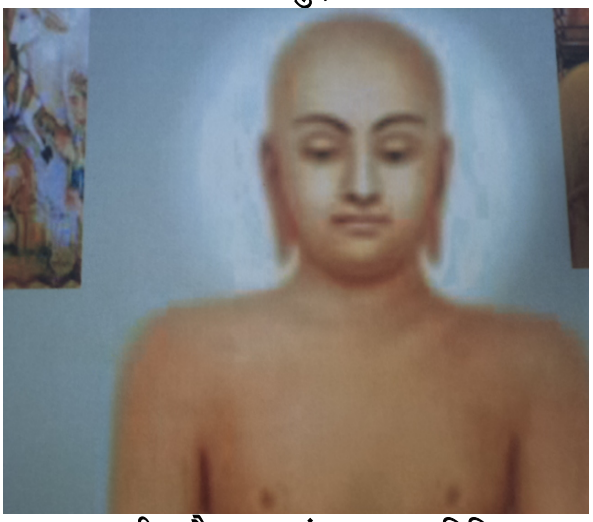

महावीर गौशाला एवं पशुरक्षा समिति

18 अक्तूबर 1999 में के.पी. संघवी रिलीजियस एंड चेरिटेबल ट्रस्ट मुम्बई, सूरत एवं मालगांव राजस्थान के द्वारा महावीर गौशाला एवं पशुरक्षा समिति राजाजी का करेड़ा जिला भीलवाड़ा 311804 दूरभा-ा 01486-262864 में 300 गायें रखने की क्षमता के साथ में स्थापित की गयी हैं.

170 देशी गायों से 2000 लीटर दूध हर साल होता है जिसे 25 रु. लीटर के मूल्य से बेचा जाता है. गोबर से खाद तथा उपले यानी कंडे बनाते हैं. 94,341 रु. प्राप्त होते हैं. वर्तमान में मात्र 2 सांड हैं.

कुल प्राप्ति 12,58,374 रु. कर 194 देशी गोवंश तथा 3 दोगले गोवंश की सेवा 6 कर्मचारी करते हैं.

कामधेनु सेवा

श्री सुनील आगीवाल युवा कार्यकर्ता सेवा सदन विद्यालय के पीछे भीलवाड़ा दूरभा-ा 01482-239157, 9414112947 गोवंश के संवर्धन करने के लिए गोशालाओं के विकास में ध्यान दे रहे हैं. व्यवस्था परिवर्तन करने के लिए सक्रियता से पूरे भारत में व्यक्तिगत सम्पर्क कर गोवंश की प्रगति देख रहे हैं. असाध्य रोगों को दूर करने के लिए चिकित्सकों के सहयोग से मार्गदर्शन मात्र 10 रु. में कर रहे हैं. पत्रक, सीडी सम्मेलनों में निःशुल्क वितरित कर तथा अपार धन लगाकर पंचगव्य महो-धियां, घी गो साहित्य आदि राजस्थान में सभी महत्वपूर्ण स्थानों में पहुंचाने के लिए स्वानंद अपना बाजार चला रहे हैं.

विश्व हिंदु परि-ाद

भारतीय गो विज्ञान परीक्षा समिति, केंद्रीय कार्यालय, बी-324, सुभा-ानगर, भीलवाड़ा 311001 मोबाइल 9414013214

श्री सुरेश सेन जी राजस्थान सरकार के भीलवाड़ा में डेयरी विभाग में कार्य करते हुए सक्रियता के साथ में भारत के अधिकांश क्षेत्रों में भ्रमण कर सभी के साथ में तालमेल के साथ अपनी धर्म पत्नी के नाम से गुजराती तथा हिंदी में एक पुस्तिका तथा पाक्षिक समाचार पत्र भीलवाड़ा गोदर्शन प्रकाशित कर गोवंश के सर्वनाश को रोकने के लिए समर्पित हैं. 15 अक्तूबर 2012 को पांचवी बार परीक्षा आयोजित की जा रही है. गोपा-टमी 21 नवम्बर 2012 के दिन 1 धंटे की निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की जायेगी. मात्र 20 रु. में कामधेनु साहित्य तथा गोवंश के 300 प्रश्नों के साथ में दस लाख बच्चों के बीच में प्रतियोगिता विश्व हिंदू परि-ाद के माध्यम से करवा रहे हैं.

चेनल पर 1 जनवरी 2013 से गोवंश की प्रतियोगिता के प्रसारण करवाने के लिए संकल्पित हैं. श्री सुरेश सेनजी के द्वारा बहुत ही कम आयु में गोवंश रक्षा करने के लिए अग्निहोत्र का कार्य किया गया है. अहमदाबाद में मणिनगर में विश्व हिंदू परि-ाद कार्यालय से गुजरात में गोवंश की लहर उत्पन्न कर रहे हैं.

भीलवाड़ा में विश्व हिंदू परि-ाद के द्वारा आयेजित 21 एवं 22 जुलाई 2012 के रा-ट्रीय सम्मेलन में 350 प्रतिनिधियों के बीच में महत्वपूर्ण भूमिका है.

अग्निहोत्र

श्री एम एल पाटीदार भीलवाड़ा स्पीनर्स लि. गांधीनगर भीलवाड़ा 234149 मोबाइल 9828211983 के

द्वारा अग्निहोत्र करने के बाद में आये क्रांतिकारी परिवर्तनों के कारण नये लोगों को अग्निहोत्र करने के लिए आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवाने के लिए पूरी तरह से समर्पित है.

नोगांव

नस्ल सुधार

माधव गो विज्ञान अनुसंधान केंद्र नोगांव गाडरमाला पंचायत जिला भीलवाड़ा राजस्थान 01482-223536, 287254 के द्वारा 2003 से एडस के उपचार करने के लिए करोड़ों की लागत से गोवंश का संवर्धन करने के लिए गीर, साहीवाल, थारपारकर, राठी, लाल सींधी, हरियाणा, कांकरेज आदि बहुत सारी प्रजातियों के लिए कार्य प्रारम्भ किया गया है.

थारपारकर नस्ल जैसलमेर से 100 प्रतिशत शुद्ध मंगवायी गयी है. थारपारकर नस्ल 25 लीटर दूध प्रतिदिन दे रही है.

रा-ट्रीय स्वयं सेवक संघ का यह प्रकल्प पूरे भारत में अपने कार्य के लिए सुप्रसिद्ध है. स्मारिका का प्रकाशन किया गया है. पत्रक के माध्यम से भी गोवंश के विकास की गतिविधियों की जानकारी दी गयी है.

गुजरात से ही 100 प्रतिशत शुद्ध गीर नस्ल को मंगवाया गया है. गीर नस्ल के गोवंश के विकास करने के लिए विशे-ा प्रयत्न श्री विनोद जी के द्वारा किया गया है. सांढ तैयार करने के लिए पूरा ध्यान दिया जा रहा है.

सभी गोवंश का गोमूत्र तथा गोबर एक कुंए में एकत्र किया जाता है. गोबर का उपयोग सीएनजी तैयार करने के लिए किया जाता है. गोबर का उपयोग जैविक खाद तैयार करने के लिए किया जाता है. गोमूत्र का उपयोग फसलरक्षक तैयार करने के लिए किया जाता है.

पंचगव्य दवाएं

उदयपुर के वैद्यों के सहयोग से बहुत अच्छी गोवंश से गोमूत्र बहुत बड़ी मात्रा में कुंओं में एकत्रित कर उनसे दवाएं तैयार की जा रही हैं. दवाओं की गुणवत्ता पर पूरा ध्यान दिया जाता है.

18 रु. किलो दूध बेचा जा रहा है. मक्खन से तैयार घी 400 रु. किलो बेचा जा रहा है. छाछ नि:शुल्क मसाले के साथ में भरपेट पिलायी जा रही है. मरीजों को भरती कर उनका उपचार किया जाता है. स्मारिका का भी प्रकाशन किया गया है.

गोबर गैस संयंत्र से बायो सीएनजी का उत्पादन

वातावरण को प्रदू-ाण से पूरी तरह से मुक्त करने के लिए बायो सीएनजी के उत्पादन करने के लिए भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के द्वारा स्वीकृति दी गयी है तथा प्रथम व-र्ा में वित्तीय सहयोग दिया जायेगा.

रायपुर

पंचगव्य दवाएं

श्री संजय समाधानी जी श्री कृ-ण गोशाला रायपुर जिला भीलवाड़ा राजस्थान 311803 01481-230622 के द्वारा राजस्थान गो सेवा आयोग तथा भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड के वित्तीय सहयोग से 700 गोवंश के मूत्र को एकत्र कर उनसे एडस के रोग को दूर करने के लिए लंबे समय से कुशल वैद्यों के द्वारा नियमित अनुसंधान कर बहुत ही कम मूल्य पर दवाएं तैयार कर बहुत अच्छे परिणाम लाए जा रहे हैं.

पंचगव्य दवाओं का प्रशिक्षण नि:शुल्क दिया जा रहा है. दूध का उपयोग कमजोर एवं बीमार लोगों के लिए किया जा रहा है. पंचगव्य दवाओं के कारण ही लोगों को लाभ मिलने से गोसेवा की ओर तेजी से मुड़ रहे हैं. श्री अशोक कोठारी के द्वारा उल्लेखनीय वित्तीय सहयोग किया जा रहा है.

बीकानेर जिला

बिकानेर

पंचगव्य

दूरभा-ा 0151-254372, मोबाइल 09413769831 में विश्व की सबसे बड़ी गोशाला में निर्मित पृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पादन प्रा. लि. की सभी वस्तुएं उपलब्ध हैं.

पंचगव्य दवाएं सफल

डा. अशोक कलवार प्रधान जांचकर्ता, सलाहकार एवं लेक्चरर आचार्य तुलसी रीजनल केंसर ट्रीटमेंट एवं रिसर्च इंस्टीटयूट सरदार पटेल मेडिकल कोलेज एंड होस्पीटल बीकानेर दूरभा-ा 0151-2200608 मोबाइल 09314766190, 09413726876 निवास शास्त्री निवास 25 इंडस्ट्रीयल एरिया, रानी बाजार बीकानेर 334001 के द्वारा प्रतिदिन सुबह एवं संध्या के समय में अग्निहोत्र नियमित किया जाता है.

100 एडस के मरीजों को ताजा गोमूत्र श्री लक्ष्मीनाथ परिसर एवं राजस्थान गोसेवा संघ कामधेनु भवन रानीबाजार बीकानेर राजस्थान कार्यालय 2522750, 2200749 अध्यक्ष निवास 2521427, 2543277 में पिलाया जा रहा है. डाक्टर की देखरेख में मरीज के द्वारा बहुत ही कड़ाई से परहेज पालन करने के कारण ही गुर्दे की बीमारी में बहुत ही आराम हो रहा है.

राजस्थान गो सेवा संघ सभी कामधेनु साहित्य तथा सीडी एवं डीवीडी एकत्र कर उसका अध्ययन कर रहे हैं.

मुरली मनोहर पंचगव्य गोशाला

कामधेनु सेवा

मुरली मनोहर पंचगव्य गोशाला में 3000 गोवंश को समर्पित गोपालकों तथा कामधेनु सेवकों के द्वारा कामधेनु आहार तथा हरी घांस खिलकर बहुत ही प्रेम से पाला जा रहा है तथा गोमाता का दूध उनके बछड़ों तथा बछड़ियों को भरपेट पिलाने के बाद में निकाला जाता है.

हर दिन ताजा दूध, दही, छाछ, गोमूत्र एकत्र कर मरीजों को पिलाया जाता है.

गोबर गैस संयंत्र से बायो सीएनजी उत्पादन

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिक विभाग के द्वारा वातावरण में प्रदू-ाण को कम करने के लिए गोबर गैस से बायो सीएनजी के उत्पादन करने के लिए स्वीकृति दी गयी है.

एडस के मरीजों की संख्या उपचार करने के लिए निरन्तर बढ़ रही है. खानपान में परहेज करने की भी सलाह दी गयी है.

गोशाला से गोमाता का ताजा दूध, दही, छाछ, मक्खन, घी भी बहुत ही कम मूल्य पर मिल जाता है.

कामधेनु घी

क्रीम से तैयार घी मात्र 190 रु. किलो मिल रहा है. दही से मक्खन निकालकर तैयार घी 300 रु. किलो मिल रहा है. एडस के मरीजों को लाभ अनुभव होने लगा है.

नोखा

1991 से भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के द्वारा पंजीकृत होकर तथा राजस्थान गो सेवा आयोग जयपुर में भी पंजीकृत होकर श्री गंगा गोशाला, नोखा, जिला बिकानेर, 334803 बहुत अधिक धन के साथ में गोवंश की सेवा कर रही है.

श्री गंगा गोशाला के पास में अपार जमीन मौजूद है. हरा चारा गोवंश को हमेशा ही खिलाया जाता है. गोवंश के मूत्र से दवाएं तैयार की जाती हैं. श्री गंगा गोशाला असाध्य रोगों को पूरी तरह से नियंत्रित करने के लिए प्रयत्नशील है.

2015 तक न तो कोई गरीब रहेगा और न कोई बीमार रहेगा यह नारा सार्थक करने का प्रयत्न किया जा रहा है. साहित्य के निरन्तर अध्ययन कर परिवर्तन करने के लिए तैयरियां चल रही हैं.

देशनोक

1958 में श्री कृ-णानंदजी महाराज के द्वारा 25 बीघा भूमि पर कामधेनु सेवा करने के लिए स्थापना की गयी है.

देशी गायें 525, सांढ 85, बैल 5, बछड़ा 141, बछड़ी 91 कुल 847 गोवंश रखे गये हैं. 35 कर्मचारी, 9 सहयोगी बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं.

1993 से भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के द्वारा पंजीकृत होकर तथा राजस्थान गो सेवा आयोग

जयपुर से भी पंजीकृत होकर श्री कारानी गोशाला, पोलिस स्टेशन के सामने, डाकघर देशनोक, जिला बिकानेर 334801 में 20 सालों से गोवंश की सेवा बहुत ही सुंदर तरीके से की जा रही है.

गोशाला में धन का उपयोग गोवंश के उपचार में किया जा रहा है. अपंग एवं अंधे गोवंश की सेवा बहुत ही व्यवस्थित तरीके से की जा रही है. एडस को पूरी तरह से दूर करने के लिए अनुसंधान किए जा रहे हैं. करनी माता के दर्शन करने के लिए बहुत अधिक संख्या में श्रद्धालु प्रतिदिन आते हैं.

गोशाला में प्रतिदिन गोवंश प्रेमी के द्वारा मुक्त हस्त से दान करने के कारण आय बहुत अच्छी है.

इंटरनेशनल डेसर्ट वेलफेयर एनिमल ओरगेनाइजेशन सोसायटी, द्वारा डाक्टर के.एल.भंडारी, ब्लू क्रोस राजबाडा बाजार, सिंगयोन का चौक बिकानेर,

केनिन वेलफेयर सोसायटी, डिपार्टमेंट ओफ मेडिसिन, बिजल भवन, वेटनरी कोलेज, बिकानेर 334001,

एस.पी.सी.ए. द्वारा प्रताप प्रसूति केंद्र, गोगागेट, जी.एस. रोड, बिकानेर,

छतरगढ़

कामधेनु दर्शन

विनोबा कृ-ि गोसेवा केंद्र, डाकघर छतरगढ, जिला बिकानेर 334021 दूरभा-ा 01520-2110049 कामधेनु के दर्शन करवाने के लिए संकल्पित हैं. गायों में कामधेनु आहार से प्रसन्नता दिखाई देती है.

अमृत रुपी दूध गरीब तथा आवश्यकता मंद बीमारों के लिए उपलब्ध है.

समर्पित कामधेनु सेवक 600 भारतीय गोवंश के संरक्षण करने के लिए भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड तथा राजस्थान गो सेवा संघ के वित्तीय सहयोग से प्रयत्नशील है.

खजूवाला

कामधेनु परिवार

श्री कृ-ण गोशाला, खजूवाला, बिकानेर 334023 दूरभा-ा 01520-232782 संगठित स्तर पर 550 भारतीय गोवंश के संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए राजस्थान गो सेवा संघ एवं भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड के वित्तीय सहयोग से प्रयत्नशील हैं.

बीछवाल

कामधेनु सेवा

कामधेनु राठी नस्ल संवर्धन केंद्र दूरभा-ा 0151-2253084 में राजस्थान गो सेवा संघ के सहयोग से 100 राठी नस्ल के गोवंश की सेवा की जा रही है.

श्री कोलायट

श्री कपिल कृ-ण गोशाला, डाकघर श्री कोलायट, जिला बिकानेर के द्वारा स्थानीय नस्लों थारपारकर, राठी, नागोरी नस्ल के मूल स्वरुप को बचाने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है.

महाजन

महाजन गोसेवा समिति, महाजन, जिला बिकानेर 334604 गोवंश के संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए वर्तमान में वैज्ञानिक ढंग से भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड के वित्तीय सहयोग से कार्य किया गया है.

कामधेनु दर्शन

राजस्थान कृ-ि विश्व विद्यालय बीकानेर, राजस्थान भी थारपारकर, राठी, नागोर गोवंश पर निरन्तर अनुसंधान कर रही है.

श्री गोविन्द गौशाला

2000 में श्री बाबूलाल जी मोहता उपाध्यक्ष एवं संचालक के द्वारा श्री गोविन्द गौशाला 400 गायें रखने की क्षमता के साथ में स्थापना ग्राम सिन्थाल जिला बिकानेर दूरभा-ा 0151-2762681, 9414137542 में की गयी है.

श्री नंदकिशोर जी मूंधड़ा अध्यक्ष गौशाला को स्वावलंबी बनाने के लिए 5 कर्मचारियों की मदद से एवं 32 सदस्यों तथा 7 सहयोगियों के साथ में देशी गायों की नस्ल सुधारने के लिए प्रयत्नशील हैं.

श्री गौरी शंकर जी बाहेती तथा श्री मनोज कुमार मोहवा 28 बीघा भूमि पर 100 पेड़ लगाकर 398 देशी गोवंश रखकर 17 लाख खर्च कर गोबर से 1.5 लाख प्राप्त कर रहे हैं.

गोबर एवं गोमूत्र का उपयोग करने के लिए गोमूत्र बैंक बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं.

जिला झूझनू

श्री गोपीनाथ गौशाला

1966 संवत में गोसेवा के उददेश्य से श्री गोपीनाथ गौशाला समिति गुढा गौड़जी का जिला झुंझनूं दूरभा-ा 01594-263711 में 500 गायें रखने की क्षमता के साथ में स्थापना की गयी है.

वर्तमान में 17.4 लाख की कुल प्राप्ति के साथ में 22 सदस्य 11 कर्मचारी 310 देशी गोवंश तथा 60 दोगले गोवंश रखकर 13.5 हेक्टेयर में 100 पेड़ लगाकर गोबर से 1.8 लाख प्राप्त कर, जनता से 15.6 लाख प्राप्त कर श्री श्रवण सिंह शेखावत अध्यक्ष 9929337302 स्वावलंबन के लिए प्रयत्नशील हैं.

श्री अशोक कुमार सराफ उपाध्यक्ष 9929466189 मात्र 7 देशी सांढ से नस्ल सुधार का कार्य कर रहे हैं. नये देशी सांढ तैयार करने के लिए अनुसंधान की आवश्यकता है.

श्री सुरेन्द्र कुमार रसगनिया जी सचिव 9828197966 देशी गोवंश के महत्व को हर व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए सक्रिय हैं.

श्री महेश कुमार कुमावत को-ाध्यक्ष 9828212624 गोबर तथा गोमूत्र का उपयोग कर अधिक से अधिक पंचगव्य महो-धियां तैयार करने के लिए संगठित रुप से प्रयत्न कर रहे हैं.

वर्तमान में गोवंश की संख्या बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा प्रति गाय प्रति दिन के अनुदान के लिए प्रयत्न कर रहे हैं.

श्री पंचायत गोशाला सूरजगढ़

हरियाणा सीमा से लगा राजस्थान के शेखावटी अंचल के उत्तर पूर्व में बिसाउ नरेश स्व. श्री सूरजसिंह के नाम पर सूरजगढ़ नगर है. 200 सालों पूर्व रात्रि के समय में यहां पर विश्राम किया था. उसी रात एक गोमाता अपने नवजात बच्चे के रक्षण करने के लिए हिंसक जानवरों का मुकाबला कर रही थी. वीरभूमि का नाम अपने नाम पर किया.

संवत 1960 में श्री पंचायत गोशाला की नींव रखी गयी है. गोमाता के चमत्कार के कारण असाध्य रोग अच्छा होने पर नरेश के द्वारा गोचर के लिए 750 एवं 2500 बीघा भूमि दी गयी है. अकाल के बहुत ही खराब समय को भी गोशाला ने देखा है. गोधन की वृद्धि करने के लिए यहां पर बहुत ही अच्छा सेवा का कार्य किया जा रहा है. गोशाला कमजोर, असहाय एवं अपंग गोवंश की सेवा कर रही है. वर्तमान में झूझनू जिले की सबसे भाग्यशाली गोशाला है. 40 दूध देने वाली गायें तथा बहुत ही बढ़िया सांढ हैं.

तहसील डूंगरगढ़

कामधेनु सेवा

बिगा

श्री राधेकृ-ण गोशाला संस्थान, ग्राम बिगा, तहसील डूंगरगढ, जिला बिकानेर 331804 संगठित होकर बहुत ही समर्पण के साथ गोवंश की सेवा की जा रही है.

सुजानगढ़

श्री कृ-ण गोशाला समिति, उदसर चरनन, डाकघर सुजानगढ, तहसील डूंगरगढ जिला बीकानेर 331803

सूरजनगर

श्री गोपाल गोशाला समिति, धीरदेसर, पुरोहितान, सूरजनगर, तहसील श्री डूंगरगढ, जिला बिकानेर 331803,

जिला चुरु

श्री गोपाल गौ सेवा समिति

1999 में गोरक्षण तथा गोसंवर्धन के उददेश्य से पंडित श्री नत्थमल जी शास्त्री के द्वारा 400 गाय रखने की क्षमता के साथ में श्री गोपाल गौ सेवा समिति तेहनदेसर, तहसील सुजानगढ़, जिला चुरु 01569-245237 में स्थापना की गयी है.

153 देशी गायों के लिए मात्र 4 सांढ वर्तमान में उपलब्ध हैं. देशी गायों के दूध में वृद्धि करने के लिए नये सांढ तैयार करने के लिए प्रयत्न किये जा रहे हैं.

गौशाला में वर्तमान में विदेशी गाय एवं बैल 6 हैं. श्री शंकरलाल जी सुथार संचालक 9929270094 के द्वारा वर्तमान में 8 कर्मचारियों से 5 बीघा भूमि पर 80 पेड़ लगाकर 351 देशी गोवंश की देखरेख करवायी जा रही है.

श्री हनुमानमल शर्मा जी अध्यक्ष 8107233831 30 सदस्यों तथा 5 सहयोगियों के साथ में कुल प्राप्ति 11,40,000 रु. कर गोशाला को पूरी तरह से आदर्श बनाने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं.

श्री राम चन्द्र लेघा उपाध्यक्ष 9928410375 के अनुसार गोवंश की उत्तम सेवा के लिए एम्बुलैन्स, गोवंश चिकित्सक की आवश्यकता है.

श्री शंकरलाल दरक को-ाध्यक्ष 9351912387 के अनुसार वर्तमान में पानी खारा है इसलिए मीठे पानी के लिए प्रयत्न किया जा रहा है. हरे चारे के लिए लीज पर जमीन लेकर कार्य किया जा रहा है.

श्री रुपाराम जी गोदारा मंत्री 9928314463 के अनुसार गोशाला को गोचर भूमि के आबटन की आवश्यकता है.

1999 में राजस्थान गो सेवा आयोग से पंजीयन करवा कर हर संभव सहायता के लिए प्रयत्नशील हैं.

जनता से वर्तमान में 10 लाख रु. प्राप्त कर गौशाला को बहुत ही उच्च गुणवत्ता के पंचगव्य एवं दैनिक उपयोग में काम आने वाली वस्तुओं के निर्माण करने के लिए योजना तैयार की जा रही है.

2000 में भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई के द्वारा पंजीकृत करवाकर 60,000 रु. प्राप्त कर नस्ल सुधार तथा गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं.

जोधपुर जिला

बाप

कामधेनु संरक्षण

श्री ऋषि गोपाल गोशाला में 400 गोवंश की सेवा राजस्थान गो सेवा संघ के सहयोग से की जा रही है.

जोधपुर

पंचगव्य

दूरभाष 0291-5103784, मोबाइल 09414145448 में विश्व की सबसे बड़ी गोशाला में निर्मित पृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पादन प्रा. लि. की सभी वस्तुएं उपलब्ध हैं.

अग्निहोत्र

श्री रामावतार वर्मा 10, शांतिप्रिय नगर, जोधपुर दूरभाष 2759102 मोबाइल 94141-45450 के द्वारा अग्निहोत्र करने के बाद में आये परिवर्तनों के कारण ही नये लोगों को अग्निहोत्र करने के लिए आवश्यक सभी सामग्री उपलब्ध करवायी जा रही है.

श्री वृजेश जी शर्मा ई-23, शास्त्रीनगर, जोधपुर 2644522 मोबाइल 9214577663 अग्निहोत्र के लिए पूरी तरह से समर्पित है.

पालगांव

कामधेनु परिवार

राजस्थान गोसेवा संघ कन्हेया गोशाला, पाल बालाजी के पास, पाल रोड, डाकघर पालगांव, जोधपुर 342001 दूरभाष 0291-2742572 में 1994-95 में 22 बीघा भूमि में स्थापना हुई थी. 10013199 का खर्च किया गया है तथा 779 गोवंश जिनमें 282 गायें, 402 बछड़ों, 170 बछड़ी, 15 बैल तथा 10 सांढ मुख्य हैं की सेवा समर्पित गोवंश सेवकों के द्वारा बहुत ही प्रेम से सेवा की जा रही है.

गोग्रास योजना

3 बैलगाड़े रोज आसपास के मोहल्लों में जाते हैं तथा हर घर से रोटियां ले आते हैं तथा कुल 200 क्विंटल रोटियां तथा हरा चारा 8 क्विंटल प्रतिदिन आ रहा है.

दूध का उत्पादन

दूध हर घर में मिल सके इसके लिए मोटर साइकिल एवं टेक्सी से 16 रु. लीटर 1 लाख लीटर कुल 1 साल में पहुंचाया जा रहा है.

बैल की बिक्री

किसानों को 65 बैलों की बिक्री की जा रही है.

कीटनियंत्रक

65000 लीटर कीटनियंत्रक की बिक्री 10 रु. प्रति लीटर के मूल्य से की जा रही है.

जैविक खाद

जैविक खाद में नेडेप खाद 30,000 क्विटल की बिक्री 1.25 रु. प्रति किलो तथा केंचुआ खाद 5000 क्विटल 2.5 रु. प्रति किलो के मूल्य से बिक्री की गयी है.

हरा चारा

हरा चारा 7 बीघा में लगाया गया है. हरे चारे में जैविक खाद का ही उपयोग किया गया है. 500 किलोग्राम हरा चारा प्रतिदिन कट रहा है. 5000 किलोग्राम हरा चारा बिक्री किया गया है.

बायो गैस

2 गोबर गैस 40 एवं 65 घन मीटर के लगे हैं. 10 तथा 20 एचपी के जनरेटर सेट चलाये जा रहे हैं. 22.5 एचपी विद्युत पैदा हो रही है. प्रतिदिन 210 यूनिट बिजली उत्पादन कर उसका उपयोग सिलाई, पिसाई यंत्र, टयूबवेल, आटा चक्की, चारा काटने की मशीन के लिए किया जाता है.

पंचगव्य दवाएं

राजस्थान गो सेवा संघ का नाम पूरे राजस्थान में उनके अच्छे कार्य के कारण है. डा. लक्ष्मीमल सा सिंघवी के सांसद कोष से प्राप्त 8.5 लाख खर्च कर पंचगव्य चिकित्सा एवं प्रशिक्षण केंद्र का निर्माण किया गया है. 23 प्रकार की पंचगव्य महौषधियां बन रही हैं. 12 लाख की पंचगव्य महौषधियां बिक गयी हैं. असाध्य रोगों का उपचार बहुत ही अनुभवी वैद्यों से जांच कर मरीजों को भरती कर पंचगव्य दवाओं से किया जाता है.

गोबर गैस से बायो सीएनजी का उत्पादन

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार के वित्तीय सहयोग से वातावरण में प्रदू-ाण को कम करने के लिए पेट्रोल की बचत करने के लिए गोबर गैस से बायो सीएनजी के उत्पादन करने के लिए स्वीकृति दी गयी है. प्रथम व-र्ा में ही वित्तीय सहयोग मिल जायेगा.

भोपालगढ़

श्री भोपालगढ गोशाला सीमेश्वर तालाब के पास, डाकघर भोपालगढ जोधपुर 302003 भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड के वित्तीय सहयोग से गोवंश संरक्षण करने के लिए विशाल क्षेत्रफल में बहुत ही समर्पित ढंग से कार्य किया जा रहा है. बीमार गोवंश की मन लगाकर सुंदर ढंग से सेवा की जा रही है. किसानों को गोबर खेती करने के लिए दिया जा रहा है. बैल किसानों को खेती करने के लिए दिये जाते हैं. गोवंश की नस्ल सुधारने पर बल दिया जा रहा है.

राजस्थान गो सेवा आयोग भी वित्तीय सहयोग कर रही है. गोवंश के प्रति लोगों के अंदर बहुत ही आदर है तथा उदारता के साथ में सेवा करने का भाव भी मौजूद है. गोवंश को बढ़िया आहार भरपेट खिलाया जाता है तथा गोमूत्र का उपयोग दवा के रुप में किया जाता है.

सोजातीगेट

सेलटर टू सफरिंग गणेशीलाल बिल्डींग, सोजातीगेट जोधपुर 342001,

बालासाथी

श्री रुपम गोशाला, डाकघर बालासाथी, तहसील बीलादा, जोधपुर 342605,

नेहरु पार्क रोड

एस.पी.सी.ए. श्रद्धा, 1017, नेहरु पार्क रोड, जोधपुर 342004,

सरदारपुरा

ग्रामोत्थान प्रति-ठान, 446 महावीर स्ट्रीट, 1 सी रोड, सरदार पटेल मार्ग, सरदारपुरा, जोधपुर 342003,

हरियदा

श्री मरुधर केसरी जैन एवं शिवगोपाल समिति, डाकघर हरियदा, तहसील बिलादा, जिला जोधपुर 342605,

बिठारी

श्री गुरुराज वर्धमान गोरक्षणी संस्थान, बिठारी, तहसील फलोदी, जिला जोधपुर 342301,

शिवांची गेट

शिवानची गेट गोशाला, नगर निगम गोडाउन के पास में, शिवांचीगेट, जोधपुर 342001,

फलौदी

श्री फलौदी धर्मार्थ सेवा समिति गोशाला, गोशाला भवन, फलोदी, जिला जोधपुर 342301,

पीपाड शहर

श्रीनाथजी कृ-ण गोशाला, शास्त्रीघाट, पीपाड शहर, जोधपुर 342601,

तखत सागर के उपर

श्री दादा दरबार नपाली बाबा सिद्धार्थ महादेव जी. एस.एस. सेवा समिति, तखत सागर के उपर, जोधपुर 342001,

गेवडा

श्री गोपाल कृ-ण गोशाला, डाकघर गेवडा, तहसील ओसीयान, जिला जोधपुर 342306

बंजग्राम

श्री गुलाब गोशाला धर्मार्थ ट्रस्ट, 14 मिल्कमेन कोलोनी, पाल लिंक रोड, बंजग्राम, डाकघर जोधपुर 342001 नागोर, राठी, थारपारकर गोवंश को महाअकाल में मरने से बचाकर सुरक्षित रखने का प्रयत्न कर रहे हैं.

जयपुर जिला

श्री गौशाला सेवा समिति

20 दिसम्बर 1983 को श्री गौशाला सेवा समिति वार्ड नं. 4, सेक्टर नं. 2, नजदीक प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सालय पिलीबंगा जिला जयपुर 01508-233157, मोबाइल श्री चेटनलाल लखोटिया जी अध्यक्ष 9414510430 में 950 गायें रखने की क्षमता के साथ में स्थापित की गयी है.

37 बीघा भूमि पर 787 देशी गोवंश तथा 69 दोगले गोवंश कुल 856 गोवंश रखकर 25 बीघा में चारा उगाकर 35 कर्मचारी सेवा कर रहे हैं.

52 लाख की कुल प्राप्ति तथा 55 लाख कुल खर्च कर गौशाला को स्वावलंबी बनाने के लिए पदाधिकारी प्रयत्नशील हैं.

80,000 लीटर दूध हर साल उत्पन्न हो रहा है. 25 रु. लीटर मूल्य पर दूध बेच रहे हैं.

जयपुर

पंचगव्य

मोबाइल 07742093172, 09928008704 में विश्व की सबसे बड़ी गोशाला में पृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पादन प्रा. लि. में तैयार सभी वस्तुएं उपलब्ध है.

राजस्थान गो सेवा संघ

राजस्थान गो सेवा संघ टोंक रोड दुर्गापुरा जयपुर 302018 0141-2551310, 2545954, की नींव अखिल भारत कृषि गो सेवा संघ वर्धा के कार्य से प्रभावित होकर 1950 में महात्मा गांधी की भावना के अनुसार रखी गयी है. 1948 में कोंग्रेस के सम्मेलन जयपुर में विनोबा जी की उपस्थिति में श्री बद्री नारायण सोदानी जी, श्री राम गोपाल वर्मा जी, श्री रामेश्वर अग्रवाल जी एवं श्री मूलचंद अग्रवाल जी के द्वारा गो सेवा के कार्य को राजस्थान में करने के लिए निश्चय किया गया था.

श्री बलवंतसिंग जी ने सबसे पहले सिकर में कार्य प्रारम्भ किया था. उसके बाद में जयपुर में आकर 82 साल की आयु तक गो सेवा का कार्य किया था. 1951 से लेकर 1980 तक अकाल के समय में दानदाताओं के सहयोग से गोवंश को बचाने का कार्य किया गया है. संघ की ओर से 1950 में सवाई माधोपुर में इंडाला गो सदन खोला गया जिसमें चराई की सुविधा थी. यहां पर एक साथ हजारों गोवंश को रखना संभव था. यह क्षेत्र बाघ परियोजना में आ जाने के कारण बाद में छोड़ना पड़ा था.

कामधेनु गोशाला पंजीकरण

1954 में राजस्थान सोसायटी एक्ट के अंतर्गत कामधेनु गोशाला का पंजीकरण किया गया है. उत्तर पश्चिमी राजस्थान यानी जैसलमेर की थारपारकर नस्ल का संवर्धन 32 बीघा भूमि पर किया जाता है.

नस्ल सुधार

राजस्थान गो सेवा संघ के 13 स्थानों पर 5400 गोवंश के विकास का कार्य चल रहा है. जयपुर में दुर्गापुरा में लंबे समय से नंदी के विकास करने के लिए बहुत अधिक धन तथा विशाल भूमि पर कार्य चल रहा है. 231 गोवंश का संवर्धन वर्तमान में किया जाता है.

आदर्श जैविक आहार

आदर्श जैविक आहार जिसमें सभी प्रकार के फल एवं सब्जी का उत्पादन तैयार किया जाता है जिसे जागरुक लोगों को उचित मूल्य पर दुकान में बेचा जाता है.

गोवंश आहार

44000 क्विंटल दाल, खल, चूरी, गुड़ आदि मिलाकर हर साल गोवंश आहार तैयार कर लागत मूल्य पर गोपालकों को उपलब्ध करवाया जा रहा है.

जनरेटर सेट

10 एच.पी. का एक जनरेटर सेट गोबर गैस से चल रहा है जिससे कुंए से पानी निकाला जा रहा है.

सीएनजी वाहन

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग तथा आई. आई. टी. दिल्ली के सहयोग से 1,75,000 रु. खर्च कर सी.एन.जी. से चलने वाला पिकअप वाहन मौजूद है. 4 किलो में 70 से 80 किमी लगभग चलाया जाता है. इस माल वाहन से परिवहन कर 300 से 400 रु. तक बचत हो रही है. 15000 किलोमीटर बगैर परेशानी के चल चुका है.

बैल चालित कृ-ि यंत्र

2006 में आदर्श बैल चालित कृ-ि संयंत्र की स्थापना की गयी है. बैल चालित कृ-ि संयंत्रों से ही सभी प्रकार के कृ-ि कार्य किये जा रहे हैं. 9 सालों से ट्रेक्टर का प्रयोग नहीं किया गया है. बैल चालित रहट से बैट्री चार्जिंग तथा बिजली पंखों व कुटटी यंत्र का संचालन किया जाता है.

सीएनजी बोटलिंग प्लांट

2006 में भारत सरकार के सांइस एवं टेक्नोलोजी विभाग की मदद से आदर्श मिथेन संप्रेशण प्लांट की नीव रखी गयी है. आईआई टी दिल्ली के वित्तीय एवं तकनीकी सहयोग से मिथेन गैस को बोटलिंग करने का काय्र प्रारम्भ किया गया है.

गोबर गैस संयंत्र

25, 60 एवं 85 के तीन संयंत्र कुल 170 घनमीटर क्षमता गैस संयंत्रों के द्वारा 1 टन प्रतिदिन सोना खाद जिसमें 16 तत्व मौजूद हैं, गैस के रुप में गोबर गैस का उपयोग प्रतिदिन 2 से 3 सिलिंडर पंचगव्य केंद्र में दवाएं तैयार करने, प्राकृतिक उपचार केंद्र के वा-प उपकरणों, भोजनशाला, घृत विभाग की भटिटयों के लिए किया जाता है. वाहन चालक सीएनजी गैस का सिलिंडरों में एकत्रीकरण एवं वाहन संचालन का विलक्षण प्रयोग किया जा रहा है.

कामधेनु कीट नियंत्रक

1 लीटर 65 रु. तथा 250 मिलीलीटर 20 रु. में बिक रहा है.

नीम खाद

750 ग्राम नीम खाद 20 रु. में बिक रही है.

कामधेनु जैविक खाद

कामधेनु जैविक खाद एक किलो 25 रु. में बिक रही है.

कामधेनु कंपोस्ट

20 सालों से कामधेनु कंपोस्ट तैयार की जा रही है. यह सबसे उपयोगी खाद साबित हुई है. बनाने में बहुत ही सरल है तथा किसान इसे आराम से तैयार कर सकता है. किसानों के लिए प्रशिक्षण की निःशुल्क व्यवस्था भी है. कामधेनु कम्पोस्ट नेडेप पद्धति से तैयार 6 किलो 20 रु. में बेचा जा रहा है.

कामधेनु वर्मी कंपोस्ट

कामधेनु वर्मी कंपोस्ट 30 किलो 80 रु. तथा 5 किलो 20 रु. में बेचा जा रहा है.

दूध उत्पादन

गोपालन गोसदन योजना

जयपुर चौमू रोड पर बाडी नदी के क्षेत्र में अपना दूध संग्रह क्षेत्र बनाया तथा घर घर में दूध का वितरण किया. बाडी क्षेत्र के 40 गांवों में 80 प्रतिशत भैंसे थी तथा 20 प्रतिशत गायें थी. आज 45 सालों की मेहनत के बाद में 80 प्रतिशत गायें हैं तथा 20 प्रतिशत भैंसे हैं.

गोरस भंडार

बाडी क्षेत्र के कार्य के परिणाम देखकर मथुरा में भी राजस्थान गो सेवा संघ ने गोरस भंडार विकसित करने की जिम्मेदारी ली है.

गोमाताओं के दूध के उत्पादन में वृद्धि करने के लिए हर उपाय पर ध्यान दिया गया है. 28000 लीटर दूध का संकलन गोपालकों से किया जाता है. 22 रु. किलो दूध कूपन के माध्यम से बेचा जा रहा है. हरे चारे उगाने के लिए भूमि मौजूद है. हरे चारे के कारण कैरोटिन मौजूद रहता है जिससे दूध में पीलापन मौजूद है. दूध के माध्यम से दूध के उत्पाद तैयार करने का कार्य बहुत ही लंबे समय से चल रहा है. संतुलित आहार की उचित व्यवस्था दूध देने वाली गायों की गयी है. संतुलित आहार के कारण ही दूध की गुणवत्ता बहुत ही अच्छी है.

दूध के उत्पाद

घी

मक्खन से घी का उत्पादन किया जाता है.

छाछ

छाछ 6 रु. में 200 मिलीलीटर सादी, नमकीन बेची जा रही है.

आदर्श रसायनशाला

असाध्य रोगों के उपचार करने के लिए आदर्श रसायनशाला का निर्माण राजस्थान सरकार के आयुर्वेद विभाग में पंजीयन करवाकर 1997 में 17 दवाओं के उत्पादन से प्रारम्भ किया गया है. वर्तमान में 64 प्रकार की दवाओं का निर्माण किया जाता है.

बाबा बलवंतसिंह पंचगव्य चिकित्सा एवं अनुसंधान केंद्र

बाबा बलवंत सिंह पंचगव्य चिकित्सा एवं अनुसंधान केंद्र हर साल लगभग 18 लाख रु. की दवाओं का विक्रय करता है. मुख्य द्वार पर दुकाने हैं जिनमें पंचगव्य दवाओं का विक्रय किया जाता है. मार्ग में से निकलने वाले लोगों को दुकानों में बिकने वाले उत्पादों का ध्यान आता है.

पुस्तकें

वैद्यों के मार्गदर्शन करने के लिए गोमूत्र महो-धि लेखक राजवैद्य श्री रेवाशंकर जी शर्मा आरोग्य मंदिर रटलाई झालावाड़ राजस्थान मूल्य 15 रु., पंचगव्य विज्ञान लेखक वैद्य श्री मुकेश शर्मा मूल्य 50 रु. प्रकाशित की गयी है.

गोमूत्र अर्क

गोमूत्र अर्क मोटापा, कोलेस्ट्रोल, पथरी, सूजन, आमवात को दूर करने के लिए बहुत ही अच्छे परिणाम देखने मिले हैं. गोमूत्र अर्क की मांग बहुत ही अधिक है. 400 मिलीलीटर मात्रा 35 रु. मूल्य पर बेचा जा रहा है.

पुनर्नवादि अर्क

पुर्ननवादि अर्क खून की कमी, वृक्क विकार, यकृत रोग, उदर रोग, सूजन को दूर करने के लिए 400 मिलीलीटर 70 रु. में बेचा जा रहा है.

गजकेसरी अर्क

गजकेसरी अर्क 52 प्रकार के कैंसर के प्रारम्भ में लेने पर, गंडमाला, गलगंड में रोग को दूर करने के लिए 400 मिलीलीटर 70 रु. में बेचा जा रहा है.

प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र

प्राकृतिक चिकित्सा के केंद्र में वैद्य श्री योगेन्द्र जी शर्मा के द्वारा 25 रु. परामर्श शुल्क लेकर सुबह 7.30 बजे से दोपहर 1 बजे तक तथा दोपहर 3 बजे से संध्या 5.30 बजे तक मरीजों का परीक्षण किया जाता है. दूर दूर से मरीज वैद्य जी के पास में उपचार करवाने के लिए आते हैं. भोजन में परहेज करने पर मरीजों के रोगों में सुधार हुआ है. आवश्यकता पड़ने पर मरीजों को डोरमेट्री और कमरों में भरती कर असाध्य रोगों के मरीजों को प्राकृतिक चिकित्सा का नियमित उपचार दिया जाता है.

योग केंद्र

सुबह 6 बजे से 7 बजे तक योग, ध्यान, आसन, प्राणायाम, संगीत चिकित्सा की जाती है.

हवन

हवन प्रतिदिन सुबह किया जाता है.

निःशुल्क गोमूत्र केंद्र

सुबह 7 से 8 बजे तक ताजा गोमूत्र सुबह बड़े पात्र में भरकर रख दिया जाता है. एक कटोरी में मरीज स्वयं 10 से 20 मिलीलीटर लेकर नियमित सेवन कर रहा है. ताजा गोमूत्र वितरण निःशुल्क किया जाता है. गोमूत्र के सुबह के समय में खाली पेट सेवन करने के कारण बहुत ही अधिक लाभ मिलने के कारण सिर्फ गोमूत्र पीने के लिए प्रतिदिन 50 मरीज केंद्र में आते हैं.

वनो-धि उद्यान

वनो-धि उद्यान में 100 प्रकार की वनो-धियों का संरक्षण एवं संवर्धन किया जाता है. मरीजों को ताजा औ-धियों का रस पिलाया जाता है. पौधशाला में औ-धियों के पौधों जिसमें आंवला, ग्वारपाठा, बिल्व, जामुन, रतनजोत, आम, गिलोय, स्टीविया के पौधों का उत्पादन तथा विपणन किया जा रहा है.

आदर्श गोशाला

भारत की आदर्श गोशाला के रुप में मान्यता मिल गयी है. प्रतियोगिताओं में हमेशा गोशाला के गोवंश को प्रथम पुरुस्कार मिल रहा है. 5 लाख रु. के पुरुस्कार से गोशाला को सरकार के द्वारा सम्मानित किया गया है. विश्व से विदेशी पर्यटक गोशाला देखने के लिए बहुत ही उत्साह के साथ में आते हैं. गोशाला में 70 लोगों को नियमित रोजगार प्राप्त होता रहता है.

जयपुर

राजस्थान गो सेवा आयोग

राजस्थान गो सेवा आयोग के द्वारा राजस्थान की गोशालाओं को गोवंश को अकाल से मरने से बचाने के लिए मार्गदर्शन तथा नयी योजनाओं की जानकारी के साथ में राज्य सरकार की ओर से वित्तीय सहयोग किया जा रहा है. राजस्थान के वर्तमान मुख्यमंत्री श्री अशोक जी गहलोत के द्वारा प्रति गोवंश 20 रु. प्रतिदिन चारे के लिए दिया जा रहा है.

राजस्थान की राजधानी जयपुर में 60 सिविल लाइन में राजस्थान गो सेवा आयोग का कार्यालय है. श्री भवरलाल जी कोठारी के द्वारा अधिक समय तक अध्यक्ष पद पर रहकर गोवंश की बहुत ही अच्छी सेवा की गयी है. श्री राजेंद्र सिंह राजपुरोहित जी मोबाइल 09214400930 ने भी अध्यक्ष पद पर रहकर गोवंश के लिए मेहनत की है. राजस्थान गोवंश की सेवा के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है.

अग्निहोत्र

श्री एस.एस. नाथावत, 111, लक्ष्मण कोलोनी श्यामनगर दूरभा-ा 2297478 मोबाइल 9413300453 अग्निहोत्र कर अपने जीवन में निरन्तर बदलाव अनुभव कर रहे हैं.

श्री संजय किशोर बी-15-16, भगवतीनगर, प्रथम करतारपुरा दूरभा-ा 2500200 नियमित अग्निहोत्र कर बहुत ही आनन्द एवं प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं.

श्री शिवकुमार अग्रवाल 543-ए, मुंशी रामदासजी का रास्ता, गंगापोल नियमित अग्निहोत्र कर अपने जीवन में आ रहे सकारात्मक परिवर्तन से बहुत ही आनन्दित हैं.

श्री शंकरलाल जी अखिल भारतीय गो सेवा प्रमुख मोबाइल 9414337444 अग्निहोत्र के लिए समर्पित हैं.

श्री रविशंकर जी शर्मा 35, रामराजपुरा, गोविन्दपुरी, सोढाला दूरभा-ा 2451475 के द्वारा नियमित अग्निहोत्र करने के कारण आये आश्चर्यजनक परिवर्तनों ने नये लोगों को अग्निहोत्र करने के लिए आवश्यक सामग्री समर्पित ढंग से उपलब्ध करवायी जा रही है.

श्री विनोद वर्मा 252, सूर्यनगर, सुदामा कुटीर के पास में महेशनगर दूरभा-ा 2502465 मोबाइल 9413236627 के द्वारा अपने जीवन में हुए क्रांतिकारी परिवर्तन को देखकर नये लोगों को अग्निहोत्र करने के लिए आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवायी जा रही है.

श्री रामावतार वर्मा 62 बरकत नगर माडर्न पब्लिक स्कूल के पास में मोबाइल 9414145450 के द्वारा नये लोगों को अग्निहोत्र करने के लिए आवश्यक सामग्री पूरी तरह से समर्पित होकर कार्य किया जाता है.

श्री चिरंजीलाल साहू मकान नंबर 27, शक्तिनगर, त्रिवेणीनगर चौराहा, ट्रेफिक लाइट के पास में गोपालपुरा बाईपास दूरभा-ा 3964958 के द्वारा अग्निहोत्र के कारण आये आश्चर्यजनक परिवर्तनों ने बहुत ही प्रभावित किया है. नये लोगों को अग्निहोत्र करने के लिए आवश्यक सामग्री में गोबर के कंडे उपलब्ध हैं.

श्री कैलाश जी गंगवाल दिगम्बर जैन परिवार के हैं श्री कृपा, ए-260 गोपालपुरा बाई पास त्रिवेणीनगर जयपुर दूरभा-ा 0141-2760335, मोबाइल 9414771036 में 25 सालों से लगातार सपरिवार एक अलग कमरे में अग्निहोत्र कर बहुत ही गहराई से जुड़ गये हैं.

25 सालों में 1000 लोगों को नियमित अग्निहोत्र करने के लिए तैयार कर चुके हैं. अग्निहोत्र करने के कारण रोग प्रतिरोधक क्षमता में असाधारण वृद्धि होने के कारण किसी भी प्रकार की दवा परिवार में किसी को भी नहीं खानी पड़ रही है.

25 सालों में अग्निहोत्र करने के कारण मन में संतो-ा है. अग्निहोत्र की राख का उपयोग नियमित दांत साफ करने, जल, छाछ के साथ में लेते हैं. अग्निहोत्र 1

साल करने पर मिर्गी की बीमारी से श्रीमती गंगवाल जी को पूरी तरह से आराम मिल गया है.

नये लोगों को अग्निहोत्र करने के लिए अग्निपात्र, चार्ट, साहित्य, गोबर के कंडे, गाय का घी, पत्रक आदि से अग्निहोत्र के लिए पूरी तरह से समर्पित श्री कैलाश जी गंगवाल एवं उनके संपूर्ण परिवार के द्वारा अग्निहोत्र का प्रचार एवं प्रसार का कार्य प्रदर्शनी, सम्मेलनों, सेमिनार, कथा, प्रवचनों में स्टोल लगाकर जयपुर में माधव आश्रम के मार्गदर्शन में किया जा रहा है.

श्री सी.एल.महाबल, 55/34, रजत पथ मानसरोवर दूरभा-ा 2785934 नये लोगों को अग्निहोत्र चालू करने के लिए आवश्यक सामग्री गोबर के कंडे, चार्ट, साहित्य, देकर पूरी तरह से समर्पित हैं.

श्री वि-णु पोददार 60/97, रजतपथ, मानसरोवर दूरभा-ा 2782221 मोबाइल 2001458 अग्निहोत्र करने के लिए समर्पित हैं.

श्री सत्यपाल सिंह 53/44, वीर तेजाजी रोड, मानसरोवर दूरभा-ा 2785002, मोबाइल 9414780838 के द्वारा अग्निहोत्र करने के लिए प्रचार एवं प्रसार के लिए पूरी तरह से समर्पित हैं.

श्री आर बी मौर्य, 42/34/1, माणकपथ, स्वर्णपथ मानसरोवर दूरभा-ा 2391982 अग्निहोत्र के लिए समर्पित हैं.

श्री राधेश्याम जी शर्मा 101/42, पटेल मार्ग, मानसरोवर दूरभा-ा 5178083 अग्निहोत्र करने के लिए समर्पित हैं.

राकेश श्रीवास्तव 1/126, एस.एफ.एस, अग्रवाल फार्म मानसरोवर दूरभा-ा 3228182, 9829560883 अग्निहोत्र करने के लिए समर्पित हैं.

कृ-ि व्यवस्था

श्री नवल डागा जी कृ-ि व्यवस्था बी-314, हरिमार्ग, मालवीया नगर जयपुर मोबाइल 09460142430, दूरभा-ा 0141-2521221 के द्वारा 37 सालों से वृक्षों के संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए बहुत सारे उपाय किये गये हैं.

54 व-र् की आयु में मौन धारण कर एक स्थान पर बैठकर बहुत ही कठोर तपकर रहे हैं. समय के मूल्य को बहुत ही अच्छी तरह से समझकर समय को पूजा पाठ, मंदिर जाना, मंत्र जाप, मरने, विवाह, जन्मदिन, सालगिरह आदि में जाते नहीं हे एवं ऐसे कार्य में व्यर्थ न-ट नहीं कर रहे हैं.

लंबे समय तक एकाग्रता के साथ में अपने कार्य में लगे रहते हैं. अपने साथ में कार्य करने वाले कर्मचारियों को भी मौन रहने के लिए ही कार्य की पूर्व तैयारियां लिखकर करते हैं. उनकी मेहनत अब रंग ला रही है. उनके इस अदभुत कार्य की जानकारी मिलने पर बाहर से उनके निवास पर आने वाले अतिथयों का स्वागत पति एवं पत्नी के द्वारा बहुत ही उत्साह के साथ में किया जाता है.

अतिथियों के द्वारा मौन रहकर गहराई से अवलोकन करने पर प्रकृति के संरक्षण का उददेश्य समझ में आ जाता है. वापस जाते समय अतिथि को भेट स्वरुप कुछ न कुछ दिया जाता है. उनके साथ में कई महत्वपूर्ण व्यक्ति पूरे भारत से जुड़ गये हैं.

अपने निवास पर बेलों के माध्यम से हरियाली उत्पन्न की है. राजस्थान गो सेवा संघ दुर्गापुरा में कर्नाटक के गोकर्णपीठ के 36 वें शंकराचार्य श्री रामचंद्रपुरम मठ के श्री राघवेश्वर भारती जी के विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा के पूर्व आगमन पर बहुत ही अच्छी प्रदर्शनी लगायी थी. प्रदर्शनी के कारण वृक्षों तथा गोवंश के लिए लोगों के अंदर काफी चेतना उत्पन्न हुई थी. समय समय पर प्रदर्शनी, स्टोल लगाये जाते हैं.

वेदों, पुराणों तथा उपनि-दों से अच्छे वाक्यों को लेकर कपड़े, कांच, प्लास्टिक, धातु, लकड़ी, टाइल्स पर लिखकर उसको रोज की आवश्यक वस्तुओं दीवाल एवं टेबल कैलेंडर, पर्स, ट्रे, गुल्लक, कपड़े के थैले, टोपी, रुमाल, टी शर्ट, बनियान, की चेन, ग्रीटिंग कार्ड जैसी अनेक वस्तुओं के साथ जोड़ दिया गया है.

2008 से गोवंश के संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए बहुत ही मेहनत की जा रही है. विश्व के बहुत ही दुर्लभ गोवंश के चित्र एकत्र कर उनका उपयोग दीवाल पर कैलेंडर के रुप में किया है. 25 पैसे वाले 366 पोस्टकार्ड साल भर 365 दिनों तक लगातार भेजकर एक व्यक्ति का ध्यान वृक्षारोपण एवं गोवंश की ओर खींचना है. व्यसन

मुक्ति के लिए पोस्टकार्ड अभियान बहुत ही सफल रहा है. कई मित्रों के व्यसन छूट गये हैं. सहदेव सहिता की पुरानी प्रति एकत्र कर उसका अध्ययन किया गया है.

गोमाता सेवा संस्थान

डा. बालस्वरुप मोतीलाल गर्ग, प्राकृतिक चिकित्सक, डिप्टी डायरेक्टर आयुर्वेद गो माता सेवा संस्थान 28, दादु कोलोनी, जगतपुरा फाटक जयपुर राजस्थान मोबाइल 09314150134 अखिल विश्व गायत्री परिवार के लिए पूरी तरह से समर्पित हैं. उनको मार्गदर्शन देने के लिए पहली बार आयोजित गो सम्मेलन में 23 से 29 दिसम्बर तक के कार्यक्रम में श्री द्वारका प्रसाद जी चैतन्य ने सादर तपोभूमि आमंत्रित किया था.

भारतीय गोवंश संरक्षण एवं संवर्धन करने के लिए अच्छे सांढ तैयार करने के लिए युग निर्माण योजना तपोभूमि मथुरा में 2001 दिसम्बर में 25 से 29 तक 440 समर्पित गोवंश सेवकों को संबोधित कर चुके हैं. 25 दिसम्बर के सुबह 8 से 9.30 बजे तक गोमाता के द्वारा अपने जीवन में कल्प करने के कारण आये परिवर्तनों को बताया. कल्प करने के लिए लोगों को प्रेरित किया तथा लोगों के द्वारा दुग्ध कल्प करने पर लाभ भी मिला है. गोमाता की विशे-ताओं को बहुत ही विस्तार से प्रमाणित कर बताया.

गोमूत्र का सेवन वेदप्रकाश जी सिंघल के सहयोग से सुबह के समय खाली पेट 25 से 29 दिसम्बर तक 10 से 20 मिलीलीटर तक 440 परिजनों को करवाया गया है. परिजनों ने गोमूत्र पीकर गोमूत्र के लाभ का अनुभव किया. 440 परिजनों को पंचगव्य अपने खर्च पर दो दिनों तक पिलवा चुके हैं.

पंचगव्य

डा. ब्रहमदत्त जी शर्मा अध्यक्ष राजस्थान गो सेवा संघ का दुग्ध कल्प से सफल उपचार करने पर डा. ब्रहमदत्त जी शर्मा के बहुत अधिक आग्रह करने के कारण 1998 से 2000 तक अपनी पत्नी डा. विमलेश गर्ग के साथ में राजस्थान गो सेवा संघ के दुर्गापुरा टोंक रोड में पंचगव्य एवं प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र में 35000 रोगियों के असाध्य रोगों का उपचार दुग्ध कल्प तथा पंचगव्य महो-धियों से कर चुके हैं.

पहली बार डा. बाल स्वरुप जी के द्वारा भारत में इंडोर अस्पताल की स्थापना कर 16 बेड की डोरमेट्री में मरीजों को भरती कर पूरी तरह से अच्छा करने का प्रयोग पूरी तरह से सफल रहा है. नुकसान में चलने वाली गोशाला को डा. बाल स्वरुप गर्ग जी के द्वारा आदर्श गोशाला में बदल दिया.

राजवैद्य श्री रेवाशंकर जी शर्मा की पुस्तक गोमूत्र महो-धि का प्रकाशन राजस्थान गो सेवा संघ के द्वारा करवाया गया है. गोमूत्र में मौजूद जल, हिप्यूरिक अम्ल, नमक, पाचक रस, स्वर्ण क्षार यानी कैरोटिन, 25 प्रकार के खनिज, 25 प्रकार के जीवन तत्व यानी विटामिन्स, एम. डी.जी.आई., स्ट्रांशियम, सी.एल.ए, लेक्टोज, अमोनिया, अमोनिया गैस, कार्बोलिक अम्ल, क्रियाटिनिन, नाइट्रोजन, यूरिया, यूरिक अम्ल आदि हैं.

गोमूत्र पर बहुत ही गहन अनुसंधान कर खाली पेट सुबह के समय में गोमूत्र 10 से 20 मिलीलीटर नियमित निःशुल्क पिलाने पर असाध्य रोगों पर अच्छे परिणाम देखने मिले हैं. डा. बाल स्वरुप जी ने गोमूत्र में दूध से अधिक खनिज मिलने के कारण गोमूत्र की दवाएं अर्क, आसव, नारी संजीवनी, बालपाल रस, प्रमेहारी, घनवटी, हरड़े चूर्ण, तक्रारि-ट, पंचगव्य घी तैयार करवाकर उनका प्रयोग किया.

अर्क

अलग अलग रोगों के लिए अलग अलग अर्क तैयार किये गये हैं. सुबह 2 चम्मच एवं शाम को 2 चम्मच पानी के साथ में लेना चाहिए. अर्क में गोमूत्र की गंध आने के कारण अर्क लेने से मरीज मना कर देता है. अर्क को मधु के साथ में देने पर आसानी रहती है. मधु खून में अर्क को बहुत ही आसानी से मिला देता है. अर्क गोमूत्र की तुलना में तेज होता है. अर्क की मात्रा बहुत ही सीमित लेनी आवश्यक है. अधिक मात्रा लेने पर बैचेनी होती है. अर्क सभी को खाली पेट नहीं लेना चाहिए. खाली पेट लेने पर जलन का खतरा रहता है. अर्क नाश्ते या भोजन के बाद में लेने पर परिणाम अनुकूल मिल रहे हैं. गजकेसरी अर्क, पुनर्नवा अर्क, अर्जुन अर्क, मधुमेह अर्क, केसर अर्क कैंसर, मधुमेह, खून की कमी, पथरी, उच्च एवं निम्न रक्तचाप, मोटापा, कोलेस्ट्रोल, अपचन, अजीर्ण, अम्लपित्त, अर्श, चक्कर आना, दस्त, अतिसार, संग्रहणी जैसे अनेकों रोग अर्क के नियमित सेवन करने पर पूरी तरह से दूर हो जाते हैं.

आसव

दमा, सांस की बीमारी, क्षय रोग, संधिवात, पुरानी खांसी, फेफड़े के रोग, कमजोरी में आसव के प्रयोग से बहुत ही लाभ हुआ है. आसव मधुमेह के मरीज को नहीं देना चाहिए. गुड़ के कारण मीठास नुकसान करती है. 2 छोटे चम्मच सुबह के समय तथा 2 चम्मच संध्या भोजन के बाद में लेना चाहिए. आसव जितना पुराना हो जाता है उसका प्रभाव उतना अधिक मिलने लगता है. फेफड़ों में जमा हुआ पुराना कफ तेजी के साथ निकलता है.

हरड़े चूर्ण

हरड़े चूर्ण मरीजों में उसके गुणों के कारण बहुत ही लोकप्रिय है. हरड़े चूर्ण 2 छोटे चम्मच रात्रि के समय में सोने के पूर्व गर्म पानी के साथ लेने पर सुबह मल विसर्जन बहुत ही आराम से होता है. आवश्यकता हो तो सुबह 2 छोटे चम्मच हरडे चूर्ण लेना चाहिए. बच्चों को मात्रा 1 चम्मच की जा सकती है. हरड़े चूर्ण कब्ज, दस्त, अपचन, पेट के कीड़े, सभी प्रकार के वात रोगों, भूख की कमी, रक्तचाप, गैस जैसे पाचन के रोगों में बहुत ही प्रभावशाली है.

घनवटी

अलग अलग रोगों के लिए अलग अलग घनवटी तैयार की गयी है. 2 गोली घनवटी जल के साथ सोते समय लेने पर बहुत ही लाभ मिलता है. प्रातःकाल 2 गोली घनवटी खालीपेट लेनी चाहिए. घनवटी सामान्य व्यक्ति पर भी बहुत ही प्रभावशाली है. घनवटी के सेवन से कोलेस्ट्रोल नियंत्रित रहता है एवं अनावश्यक चर्बी धीरे धीरे कम होने के कारण युवकों में उत्साह, उमंग एवं नये जीवन का आनन्द बना रहता है. लगातार कार्य करने के बाद भी थकान का पता नहीं लगता है. घनवटी लेने में मरीज को किसी प्रकार की परेशानी नहीं होती है. घनवटी में यदि गोमूत्र की गंध के कारण मरीज को परेशानी है तो घनवटी कैप्सूल के रुप में देने पर मरीज को पता भी नहीं लगता है. सभी रोगों पर घनवटी का नियमित प्रयोग बहुत ही लाभकारी है.

प्रमेहारी

युवकों के द्वारा प्रमेहारी के 2 चम्मच सुबह एवं 2 चम्मच शाम को नियमित सेवन करने पर चेहरे पर चमक एवं लालिमा से जवानी का जोश उभरकर सामने आता है. वीर्य के बनने से युवक में नया उत्साह एवं जीवन का आनन्द मिलने लगता है. प्रमेहारी के अंदर मौजूद रसायन नया खून बनाने में मदद करते है. पुरु-नों में नपुंसकता को दूर करने के लिए प्रमेहारी रामबाण साबित हुआ है. प्रमेहारी के सेवन करने के बाद में नपुंसकता के कारण परेशान पुरु-ा में परिवर्तन होने के कारण स्वस्थ संतान की उत्पत्ति हुई है. पुरु-नों के रोगों नपुंसकता, प्रोस्टेट ग्रंथि, मूत्र में जलन, वीर्य का पतलापन, स्वप्नदो-ा, संभोग में कमजोरी, शीघ्र पतन में प्रमेहारी के नियमित प्रयोग से बहुत ही लाभ हुआ है.

नारी संजीवनी

गर्भवती महिला के द्वारा नियमित 2 चम्मच सुबह एवं 2 चम्मच शाम को नारी संजीवनी के सेवन करने पर गर्भ में पल रहे बच्चे में सभी आवश्यक तत्व मिलने से स्वस्थ बच्चा उत्पन्न होता है. नारी संजीवनी महिलाओं के रोगों मासिक धर्म की अनियमितता, कमर दर्द, सिर दर्द, बांझपन, खून की कमी, रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर, गर्भाशय की रसौली, गर्भाशय के कैंसर, गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर, स्तन कैंसर में बहुत ही लाभकारी साबित हुई है. बीमार एवं कमजोर युवती के द्वारा नारी संजीवनी पीने पर तेजी के साथ परिवर्तन होने लगते हें. नारी संजीवनी के नियमित प्रयोग करने पर नया खून तेजी से बनने लगता है तथा आवश्यक सभी पो-ाक तत्व मिलने के कारण प्रसन्नता से चेहरे पर दिव्य तेज चमकने लगता है तथा युवती का अदभुत सौंदर्य निखर आता है. नारी संजीवनी के नियमित सेवन करने पर तथा आवश्यक परहेज करने पर बांझ महिलाओं को सुंदर संतान की प्राप्ति हुई है.

बालपाल रस

जन्म के बाद बालक को नियमित आधा से 2 चम्मच तक सुबह एवं शाम को बालपाल रस पिलाने पर बच्चा स्वस्थ एवं प्रसन्न चित्त रहता है. पाचन सही रहने के कारण अच्छी भूख लगने के कारण बालक के अंदर संपूर्ण विकास होता है. चेहरा सभी आवश्यक तत्व मिलने के कारण सुंदर दिखता है. बालपालरस से जन्म से लेकर 5 साल के बच्चे के कफ, खांसी, खून की कमी, बुखार, उल्टी, भूख न लगना, अपचन, दस्त, कब्ज, दिमाग की

कमजोरी, मंद बुद्धि, मानसिक विकलांगता, स्मरण शक्ति की कमी में बहुत लाभ मिला है.

दुग्ध कल्प

डा. विठठलदास जी मोदी आरोग्य मंदिर गोरखपुर उत्तरप्रदेश के मार्गदर्शन में 3 माह का दुग्ध कल्प कर अनुभव कर चुके हैं. जो गुण गाय के दूध में हैं वे गुण छाछ, मक्खन, घी में भी हैं. गोमाता के दूध में मौजूद 22 प्रकार के अमिनो अम्ल से प्रोटीन को सुपाच्य बनाकर गुर्दे के लिए लाभकारी हैं. गोमाता के दूध में मौजूद विटामिन्स ए एवं ए-1, बी-1, बी-2, बी-3, बी-4, बी-6, बी-12 रोग प्रतिरोधक क्षमता को विकसित करता है. गाय का दूध पैप्टिक अल्सर को दूर करता है तथा अम्लता यानी एसिडिटी को दूर करता है. गाय का दूध कोलोन, छाती तथा चमड़ी के कैंसर को दूर करता है.गाय का दूध सर्वश्रे-ठ प्राकृतिक ओक्सीकारकों में से एक है. गाय का दूध सीरम कोलेस्ट्रोल के निर्माण प्रक्रिया को कम करने में सहायक है. गाय के दूध में पोटेशियम पाया जाता है जो स्वस्थ मस्ति-क के विकास में सहायक है.गाय का दूध मधुमेह से लड़ने में सहायक है एवं दूध में स्वस्थ मीठास मौजूद है. गाय का दूध संपूर्ण एवं आदर्श आहार सभी आयु के लोगों के लिए है. गाय के दूध में लो फैट मोटापे को दूर रखने में सहायक है तथा चुस्त एवं स्वस्थ रखता है. गाय के दूध में मौजूद कैल्शियम एवं फास्फोरस पौि-टक खाद्य पदार्थों के अवशो-ाण में सहायक है और विशे-ाकर बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास एवं पो-ाण हेतु उपयुक्त है. सरकार के द्वारा प्राकृतिक चिकित्सक के रुप में जयपुर में लंबे समय से गोमाता के अमृत रुपी दूध से कल्प करवाकर पूरी तरह से सक्रिय हैं.

कौन बनेगा गोवंश सेवक?

बच्चों में कौन बनेगा गोवंश सेवक? प्रतियोगिता का आयोजन करवाने के लिए 7000 वस्तुनि-ठ प्रश्न तैयार कर तथा विजेता को उचित सम्मान देने के लिए आवश्यक तैयारियां की गयी हैं.

गोवंश संवर्धन

जून 2010 में डिप्टी डायरेक्टर आयुर्वेद के पद से सेवा निवृत होने के बाद में गोपा-टमी 2012 से गुड़गांव में 5 एकड़ भूमि पर 20 गायें तथा बढ़िया सांढ तैयार करने की योजना है.

कामधेनु संदेश

कामधेनु संदेश प्रकाशित कर हर गांव में गोवंश संवर्धन केंद्र प्रारम्भ करने के लिए मानसिकता तैयार करेंगे.

काया कल्प

काया कल्प के माध्यम से असाध्य रोगों का उपचार प्रारम्भ करने के लिए कम से कम 40 दिन एवं अधिकतम 180 दिनों का कायाकल्प मरीजों को भरती कर प्रारम्भ में 3 दिनों का उपवास करवाकर अपने दोनों सुपुत्रों के साथ में कार्य कर रहे हैं.

अग्निहोत्र

स्वयं अग्निहोत्र से पूरी तरह से जुड़कर हर घर में अग्निहोत्र नियमित हो इसके लिए देशी गाय के ही गोबर के कंडे तैयार किये जा रहे हैं. गाय का घी 100 प्रतिशत सही उपलब्ध करवा रहे हैं. कामधेनु साहित्य एवं सीडी तथा डीवीडी भी बहुत ही कम मूल्य पर उपलब्ध करवा रहे हैं. हर घर में गोमाता का दूध तथा घी बहुत ही आसानी से उपलब्ध हो इसके लिए संगठित प्रयत्न करने के लिए गीर तथा थारपारकर नस्ल के सांढ तथा गायें पालने की योजना तैयार की गयी है.

सांगानेर तहसील

सांगानेर

अग्निहोत्र

श्री देवेन्द्र कुमार जी शर्मा 33/37, प्रतापनगर सांगानेर दूरभा-ा 2791478 अग्निहोत्र करने के लिए पूरी तरह से समर्पित हैं.

श्री भगवान नरयानी 50/411, प्रतापनगर सांगानेर दूरभा-ा 2793209 अग्निहोत्र करने के लिए पूरी तरह से समर्पित हैं.

श्री कृ-ण गोपाल गोशाला

श्री कैलाश नारायण जी लढढा 26 संग्राम कोलोनी जयपुर राजस्थान श्री कृ-ण गोपाल गोशाला ग्राम मोहनपुरा वाया वाटिका तहसील सांगानेर जिला जयपुर 302001 मोबाइल 09413967403 300 गोवंश के साथ में निरन्तर गहन अनुसंधान कर रहे हैं.

वर्तमान में 77 साल की आयु में भी पूरी तरह से सक्रिय हैं. हर घर में वैदिक हवन करने की परम्परा को कायम रखने की कोशिश जारी है.

जनसंपर्क के माध्यम से गोवंश के लिए चेतना उत्पन्न कर रहे हैं. एडस के रोग को पूरी तरह से दूर करने के लिए अमेरिका के चिकित्सकों के साथ में धन एकत्रित करके शिविर आयोजित करके कार्य कर रहे हैं. श्री कैलाश नारायण जी गोबर गोमूत्र के उपयोग करने के लिए पूरी तरह से गंभीर हैं. राजस्थान में गोवंश को पूरी तरह से आत्मनिर्भर बनाने के लिए कार्य योजना भी तैयार कर रहे हैं.

श्री कृ-ण गोशाला झालरापाटन सिटी

1993 में श्री कृ-ण गोशाला का निर्माण किया गया है. वर्तमान में गोचर की भूमि मौजूद नहीं है. गोशाला में कटने से बचाये गये गोवंश को रखा गया है.

जिला कोटा

कोटा

अग्निहोत्र

श्री ओ पी शर्मा जी 53 ए टाइप 6, इंस्ट्रूमेंटेशन लिमिटेड टाउनशिप कोटा दूरभा-ा 2423951 अग्निहोत्र के लिए पूरी तरह से समर्पित हैं.

श्री हाडोती गोसेवा संस्थान गायत्री शक्तिपीठ विज्ञाननगर कोटा

श्री आनन्द जी सिंघल संरक्षक मोबाइल 07442427619, श्री ज्ञानेन्द्रजी विजय सह संरक्षक 9414392821 श्री द्वारका प्रसाद गोयल अध्यक्ष 9460219900 एवं अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों के साथ में मिलकर बहुत ही सक्रियता के साथ में देशी गोवंश के लिए प्रयत्न कर रहे हैं.

कुल 48 गोशालाओं में 972 देशी गायें हैं.

बन्दाधरमपुर

श्री मथुरेश गोशाला ग्राम बन्दाधरमपुर जिला कोटा में अखिल विश्व गायत्री परिवार के द्वारा श्री गायत्री परिवार गोशाला एवं अनुसंधान केंद्र 8.5 बीघा भूमि पर 298 गोवंश रखकर गोवंश संवर्धन बहुत ही अच्छी तरह से करके लंबे समय से अनुसंधान का कार्य किया जा रहा है.

गोवंश संवर्धन

गायत्री परिवार के द्वारा विश्व हिंदु परि-ाद के साथ में मिलकर संगठित प्रयत्न करने के कारण बहुत ही अनुकूल वातावरण बन गया है.

स्मारिका

2006 में गोवंश के जागरण करने के लिए रा-ट्रीय स्तर पर अपार धन खर्च कर सम्मेलन किया गया था. स्मारिका का प्रकाशन किया गया था. स्मारिका 100 रु. में वितरित की गयी थी. कार्यक्रम की रिकार्डिंग कर सीडी तैयार कर सेट लोगों को दिया गया है.

सम्मेलन

पूरे भारत के विद्वानों को भाग लेने कें लिए आमंत्रित किया गया था. गोवंश के संवर्धन करने के लिए विज्ञान के आधुनिक अनुसंधानों की ओर ध्यान आकर्-ित किया गया था.

पंचगव्य महो-ाधियां

अखिल विश्व कामधेनु परिवार

पंचगव्य महो-ाधियों का निर्माण हर बीमारी को दूर करने के लिए बहुत बड़ी मात्रा में किया जा रहा है. गायत्री शक्तिपीठ विज्ञाननगर कोटा में माह में 20,000 की पंचगव्य की दवाएं बिक्री की जा रही हैं.

श्री कृ-ण गोवंश रक्षण संवर्धन समिति

1996 में श्री श्याम सुंदर गोयल 9413404806 के द्वारा श्री कृ-ण गोवंश रक्षण संवर्धन समिति की स्थापना की गयी है. श्री द्वारका प्रसाद अग्रवाल जी 9460219900 संचालक देशी नस्ल के सुधार के लिए प्रयत्नशील हैं.

श्री यतीश कुमार गोयल अध्यक्ष 9413151132, श्री नरेश कुमार गोयल मंत्री 9928055259, श्री वेद प्रकाश गोयल को-ाध्यक्ष 9166056633 कंडे बनाकर 75,000 रु. प्राप्त कर रहे हैं तथा 80,000 रु. खाद बनाकर प्राप्त कर रहे हैं.

225 गायों से हर साल दूध का उत्पादन कर 1,25,000 रु. प्राप्त कर रहे हैं.

जनता से प्राप्ति 4,60,000 रु. है. कीटनियंत्रक बनाकर 20,000 रु. प्राप्त कर रहे हैं.

450 गोवंश 25 बीघा भूमि पर रखकर 3 लाख रु. कुल वेतन देकर कर्मचारियों से सेवा करवा रहे हैं.

4 गोदामों के साथ में 2 टयूबवेल, बैलचालित संयंत्र के साथ में ज्वार, बाजरा, मक्का, बरसीम, सोयाबीन, गेहूं उगाकर 8 लाख रु. की कुल प्राप्ति कर रहे हैं.

श्री प्रज्ञा रामगुरु गोशाला

20 बीघा भूमि पर 180 देशी गोवंश रखकर नस्ल सुधार करने के लिए प्रयत्नशील हैं. देशी गायों से दूध का उत्पादन कर रहे हैं.

भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड तथा राजस्थान गो सेवा आयोग से पंजीयन करवाकर श्री कृ-णवल्लभ जी

विजय अध्यक्ष 9352935300 सी 263, तलवंडी कोटा, श्री विजेन्द्र कुमार जी विजय 580 ए, तलवंडी, कोटा महामंत्री 9414189580, 0744-2406780, श्री जगदीश जी विजय सी 5, जवाहरनगर कोटा को-ाध्यक्ष 9414937755

श्री कृ-ण मुरारी गौशाला

दादाबाड़ी कोटा में 1957 में सरकारी विभाग से 16/कोटा पंजीयन करवाकर 1984 में पशुपालन विभाग जयपुर में 422 203/1984 में पंजीयन करवाकर श्री भगतराम जी रोहिड़ा ज-सी-11, साबरमती कोलोनी, कोटा अध्यक्ष 9875121990, श्री कन्हैयालाल जी छाबड़ा उपाध्यक्ष 9414189933, श्री हरिश डालवानी जी हरजन मेडिकल स्टोर, सब्जी मंडी कोटा महामंत्री 9828874133 वर्तमान में 8.5 बीघा भूमि पर 186 देशी गोवंश रखकर दूध तथा केंचुआ खाद तेयार कर रहे हैं.

श्री सन्त आशाराम गौशाला

138/कोटा सरकारी पंजीयन 2002 में करवाकर 2006 में 747/06 जयपुर में पशुपालन विभाग से पंजीयन करवाकर 2007 में भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई से आरजे 537/07 पंजीयन करवाकर ग्राम लखावा, तहसील लाड़पुरा में श्री सन्त आशाराम गोशाला की स्थापना की गयी है.

25 बीघा भूमि पर 500 गोवंश रखकर औ-धियां तथा दूध का उत्पादन कर श्री हरीशचन्द्रजी चादीवाला कोटा अध्यक्ष 9414187629, श्री सुरेशचंद जी गौतम अधिवक्ता महामंत्री 9352603430 स्वावलंबन के लिए प्रयत्नशील हैं.

श्री गिरधर गोशाला

1998 में 58/कोटा में पंजीयन करवाकर 99 में जयपुर तथा भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड चेन्नई में पंजीयन करवाकर श्री आनन्दप्रकाश जी सिंगल, 1 डी4, एसएफएस, तलवंडी, कोटा अध्यक्ष 0744-2427619, श्री बंशीधर जी खंडेलवाल कोटा उपाध्यक्ष 9784409986, 0744-2405861, श्री हरिप्रकाश जी सक्सेना, 5 के 12, तलवंडी, कोटा महामंत्री 9414187811, 074472406094 श्री गिरधर गोशाला ग्राम गिरधरपुरा तहसील लाड़पुरा कोटा में 233 देशी गोवंश 24 बीघा में रखकर केंचुआ खाद तथा अर्क तैयार कर रहे हैं.

रामगंजमंडी

श्री गोशाला सेवा समिति

2002 में ग्राम रोसली, जहसील रामगंजमंडी, कोटा में श्री गोशाला सेवा समिति की स्थापना की गयी है.

भूतपूर्व मंत्री श्री रामकिशन जी वर्मा अध्यक्ष 0744-2361829, श्री सुदेश जी राजावत, भारती प्रिंटर्स, बाजार नं. 1, रामगंजमंडी कोटा को-ाध्यक्ष 9414192314 श्री अशोक जी गूजर, बाजार नं. 1, रामगंजमंडी, कोटा सचिव 9414231296 वर्तमान में 7 बीघा भूमि पर 128 देशी गोवंश रखकर दवाईयों का उत्पादन किया जा रहा है.

कामधेनु परिवार

श्री बद्री लाल जी गुप्ता गायत्री गोशाला पोरवाल गेस्ट रामगंजमंडी बाजार नं. 2 जिला कोटा में गोवंश संवर्धन किया जा रहा है.

श्री मथुरेश गोशाला

श्री मथुराधीश मंदिर के द्वारा 300 बीघा भूमि पर 66 गोवंश के साथ में दूध के उत्पादन के साथ में श्री मथुरेश गोशाला छप्पन भोग कोटा में की गयी है.

श्री जती हनुमान गोशाला

2006 में श्री जती हनुमान गोशाला सागोद जिला कोटा में स्थापित की गयी है. 7 बीघा में 71 देशी गोवंश रखे गये हैं.

श्री द्वारकालाल जी राठोर स्टेट बैंक के पास में सागोद व्यवस्थापक 9252062526, श्री राजेंद्र जी, अध्यक्ष 9414729425 विजय गांधी चौराहा, विजय ब्यूटी पैलेस, सागोद, श्री गजानन्द जी चौरसिया मंत्री, 9929411808 मस्ताना पान भंडार, गांधी चौराहा, सागोद वर्तमान में संगठित होकर जैविक खेती, पंचगव्य महो-धियां, फसलरक्षक जैसी बहुत सारी गतिविधियों के माध्यम से देशी गोवंश के नस्ल सुधार करने के लिए प्रयत्नशील हैं.

लटूरी

अखिल विश्व गायत्री परिवार

श्री रामनाथ जी नागर श्री देव संस्कृति गायत्री गोशाला ग्राम लटूरी जिला कोटा के द्वारा गोवंश संवर्धन किया जा रहा है.

नागोर जिला

श्री गोपाल कृ-ण गौशाला सेवा समिति

श्री गोपालदास जी त्यागी संरक्षक 01589-273058 के द्वारा 2004 में गो सेवा के उददेश्य से श्री गोपाल कृ-ण गौशाला सेवा समिति की स्थापना वागोट, तहसील पखतमर, जिला नागोर में की है.

200 गायों के रखने की क्षमता के साथ में गोशाला है. ग्रामीण सहयोगी हैं तथा 15 सदस्य हैं. 5 पदाधिकारी हैं.

वर्तमान में सिर्फ गोबर का विक्रय करते हैं जिससे 1 लाख रु. प्राप्त होता है.

8 कर्मचारियों की सेवा के कारण 150 देशी गायों से 1 हजार लीटर दूध उत्पन्न होता है. 20 रु. लीटर के मूल्य पर दूध बेचा जाता है.

कुल प्राप्ति 6,50,000 रु. है तथा 7,90,000 रु. कुल खर्च है.

वर्तमान में मात्र 3 देशी सांढ हैं. जनता से प्राप्ति 5,50,000 रु. हो रही है.

200 देशी गोवंश वर्तमान में रखे गये हैं. 34 बीघा भूमि पर 70 पेड़ लगाकर व-र्ा से चारा उगाया जाता है. व-र्ा के दिनों में कीचड़ होने के कारण ही समस्या है. गोवंश के पेट में कीड़े रहते हैं. गायों के रहने, खाने, पीने की उत्तम व्यवस्था करने की भावी योजना है.

रा-ट्रीय गोवंश प्रजनन प्रक्षेत्र, नागोर, राजस्थान नागोर नस्ल को सुरक्षित रखने के लिए करोड़ो रुपये खर्च कर रही है. नागोर नस्ल महाअकाल, यंत्रीकरण एवं कतलखानों के कारण ही तेजी से समाप्त हो रही है. महाअकाल के समय सरकार के सभी प्रयत्न बेकार साबित हुए हैं. यंत्रीकरण भी हर गांव में पहुंच गया है. वर्तमान समय में कतलखानों से निपटना आसान नहीं है.

गोवंश को पूरी तरह से सुरक्षित रखने के लिए अनुदान के बदले अनुसंधान पर ध्यान देने के लिए गंभीरता के साथ कार्य करने के लिए दबाव बनाना है. भारत सरकार नये कतलखाने खोलने के लिए प्रयत्नशील है. नागोर नस्ल के खून में एडस को दूर करने के लिए बहुत सारे रसायन हैं जो हमें गुर्दे से छनकर मूत्र के माध्यम से मिल रहे हैं. नागोर नस्ल में बहुत ही अधिक उर्जा है.

राजकीय पशुपालन विभाग, राजस्थान राजस्थान की विश्व प्रसिद्ध थारपारकर, राठी, नागोर, को महाअकाल के समय में बचाने के लिए प्रयत्न कर रही है.

निम्बी

नागोर नस्ल के संवर्धन करने के लिये भारतीय जीवजन्तु कल्याण बोर्ड तथा राजस्थान गो सेवा आयोग के वित्तीय सहयोग से श्री कृ-ण गुलाब गौशाला डाकघर निम्बी जोधन जिला नागोर राजस्थान पिन 341316 लंबे समय से कार्य कर रही है.

डिडवाना

श्री गोपाल गो सेवा संस्था डाकघर कोलिया तहसील डिडवाना पिन 341305 जिला नागोर राजस्थान 1994 से स्वामी खेमदासजी संस्थापक एवं अध्यक्ष मोबाइल 9982485970 140 बीघा भूमि पर 572 गोवंश की सेवा कर रहे हैं. 300 पेड़ लगाकर वातावरण पवित्र कर रहे हैं.

नागोरी नस्ल को बढ़ाने की योजना है. वर्तमान में असहाय एवं बूढ़े, लूले एवं लंगड़े, बीमार तथा कमजोर गोवंश के देखभल करने के लिए विशे-ा रुप से सक्रिय हैं. पानी व चारे की समस्या है.

महाअकाल में गोवंश को मरने से बचाने के लिए राजस्थान गो सेवा आयोग तथा भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड के वित्तीय सहयोग से प्रयत्न कर रही थी. गोशाला को वित्तीय सहयोग तो हमेशा ही भरपूर चाहिए ही लेकिन गोमहाविज्ञान की भी आवश्यकता है.

एडस के लिए गोवश के माध्यम से गहन अनुसंधान करने पर ही वित्तीय समस्या का स्थायी समाधान होगा.

लादनून

श्री राम आनंद गौशाला डाकघर लादूनून जिला नागोर राजस्थान पिन 341306 महाअकाल के समय में गोवंश को बचाने के लिए भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड एवं राजस्थान गोसेवा आयोग के वित्तीय सहयोग से लंबे समय से कार्य कर रही है. गोमूत्र से कुशल वैद्यों के मार्गदर्शन में असाध्य रोगों को दूर करने के लिए पंचगव्य दवाएं तैयार कर रही है.

श्री बालाजी

श्री कृ-ण गौशाला डाकघर श्री बालाजी, जिला नागोर राजस्थान पिन 341029 भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड के वित्तीय सहयोग से महाअकाल के समय में बहुत बड़ी संख्या में नागोर नस्ल को सुरक्षित रखने के लिए संगठित स्तर पर कार्य कर रहे हैं. कतलखाने ले जाने वाले गोवंश को बचाने के लिए प्रयत्नशील थे. गोमूत्र से दवा बनाकर एडस के खिलाफ अभियान चला रहे हैं.

जसवंतगढ़

श्री गोपाल गोसदन समिति डबरी रोड, डाकघर जसवंतगढ, तहसील लादनून जिला नागोर राजस्थान पिन 341304 गोवंश संरक्षण करने के लिए भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड के वित्तीय सहयोग से प्रयत्न कर रहे हैं.

भडवासी

श्री गोपाल कृ-ण प्रबंध समिति, डाकघर भडवासी, तहसील देगाना जिला नागोर,

भावन्डा

श्री मातेश्वरी गो सेवा समिति, डाकघर भावन्डा, तहसील खीनवसार, जिला नागोर,

तहसील मेड़ता सिटी

श्री पांजरापोल गौशाला अजमेर गेट, मेडता सिटी जिला नागोर राजस्थान पिन 341510 महाअकाल के समय में बहुत ही मूल्यवान नागोर नस्ल को बचाने के लिए प्रयत्नशील है.

हरसोलव

श्री कृ-ण गौशाला, हरसोलव, तहसील मेडतासिटी, जिला नागोर, राजस्थान पिन 342902 नागोर नस्ल को महाअकाल के समय में पूरी तरह से सुरक्षित रखने के लिए प्रयत्नशील हैं. कतलखानों से गोवंश को बचाने के लिए संगठित प्रयत्न लंबे समय से चल रहा है. राजस्थान गो सेवा आयोग से वित्तीय सहयोग मिलता है. गोवंश के मूत्र को एकत्र कर दवा तैयार कर एडस के खिलाफ अभियान चला रहे हैं.

नागौर जिला कल्याण संघ

नागौर जिला गो कल्याण संघ, ओसवाल भवन, पुलिस थाने के पास में, डाकघर भारोठ तहसील नावा जिला नागोर दूरभा-न 01586-277035 श्री वीरेन्द्र कुमार व्यवस्थापक 9636444268 नागोर नस्ल के संरक्षण करने 1998 से गोवंश के पालन तथा स्वावलंबन के लिए श्री भंवरलाल बावेल अध्यक्ष 9610435598 के द्वारा स्थापित किया गया है.

वर्तमान में 21 सदस्य 5 बीघा भूमि पर 21 पेड़ लगाकर 500 गाय रखने की क्षमता के साथ में 278 देशी गोवंश रखकर कुल खर्च 18 लाख तथा राजस्थान गो सेवा आयोग एवं भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड से पंजीकृत होकर अनुदान प्राप्त कर गोमूत्र एकत्र करने के साधन की समस्या के कारण गो से सीधा उत्पादन का विक्रय करने की समस्या है.

नागोर नस्ल को महाअकाल के समय में पूरी तरह से सुरक्षित रखने के लिए प्रयत्न किया गया है.

मिथाडी

श्री बालाजी गोसेवा समिति ट्रस्ट, डाकघर मिथाडी, जिला नागोर 341507 भारतीय जीवजन्तु कल्याण बोर्ड के वित्तीय सहयोग से चल रही है.

निम्बाडी रोड

राजस्थान गोसेवा समिति, निम्बाडी रोड, शिवनगर, कचेरा, जिला नागोर 341303 वर्तमान में भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड के वित्तीय सहयोग से गोवंश के संरक्षण करने के लिए संगठित प्रयत्न किया जा रहा है.

गगराना

श्री रामकृ-ण गोशाला, गगराना, तहसील मेडता सिटी, जिला नागोर 341024,

पंचाला सिद्धा

श्री जसनाथ गोसेवा समिति, डाकघर पंचाला सिद्धा, नागोर 341025,

लाखाओलव तलाव

श्री किसान गोसेवा समिति, लाखाओलव तलाव, मारवार, मुंडवा, जिला नागोर, राजस्थान पिन 341026,

गोटन

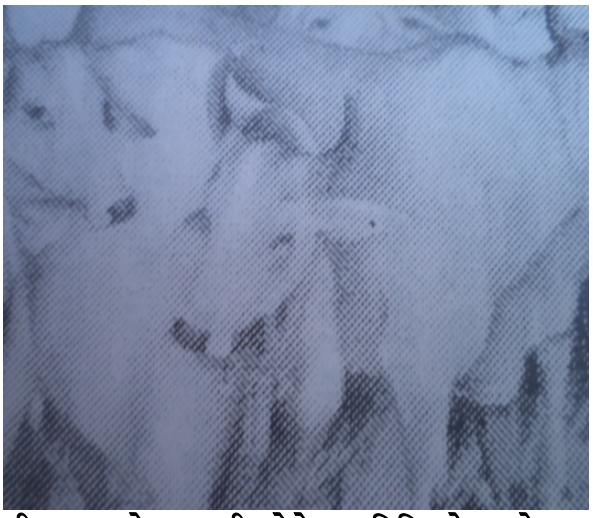

श्री कृ-ण गोशाला श्री गोसेवा समिति गोटन मेडता सिटी जिला नागोर 342902,

मारवार मुंडवा

श्री कृ-ण गोशाला, पाथर मोहल्ला, डाकघर मारवार मुंडवा, जिला नागोर 341026,

मेडता सिटी

पंचगव्य

मोबाइल 09252245613 में विश्व की सबसे बड़ी गोशाला पृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पादन प्रा. लि. की सभी वस्तुए उपलबध हैं.

मेडता गोसेवा समिति, दगोलय तलाब रोड, मेडता सिटी, जिला नागोर 341510,

पूंडालू

मरुधर केसरी गोसेवा समिति, ग्राम पूंडालू, तहसील मेडतासिटी जिला नागोर 341510,

मोकाला

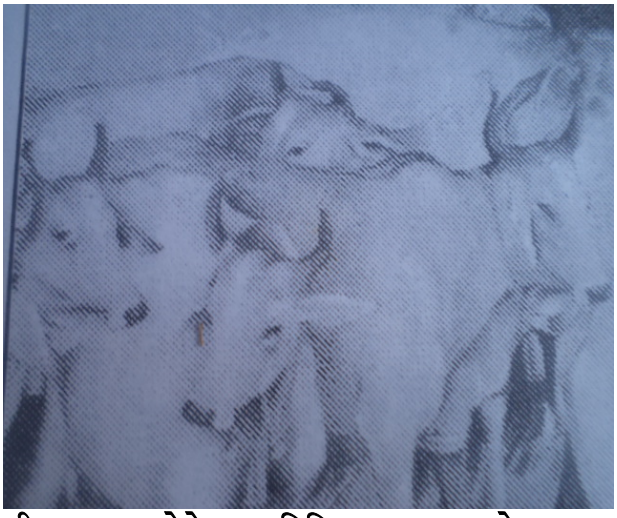

श्री कृ-ण गोसेवा समिति, डाकघर मोकाला, तहसील मेडता जिला नागोर 341510,

भगनारा

सरकार के वित्तीय सहयोग से कामधेनु सेवा का संकल्प है. संगठित प्रयत्नों के कारण नागोर नस्ल को बचाने के लिए गोविंद गोपाल गोशाला, डाकघर भगनारा, एनाना, जिला नागोर 341001 कार्य कर रही है.

नरवाखुर्द

श्री गुरुकृपा गोसेवा संस्थान, डाकघर नरवाखुर्द, जिला नागोर,

कोलिया

श्री गोपाल गोसेवा संस्था, कोलिया, डिडवाना, जिला नागोर 341305,

जसनगर

श्री मरुधर केसरी गोशाला, डाकघर जसनगर, जिला नागोर 341510,

इंदावार

श्री मरुधर केसरी रुप रजत गोशाला सेवा समिति इंदावार, तहसील मेडता जिला नागोर 341510,

नोखा

स्वामी श्री हजारीमल गोसेवा समिति नोखा, चंदावतन, जिला नागोर 342902,

रुन

श्री भोमियाजी गोशाला समिति, डाकघर रुन, जिला नागोर,

मेडता रोड

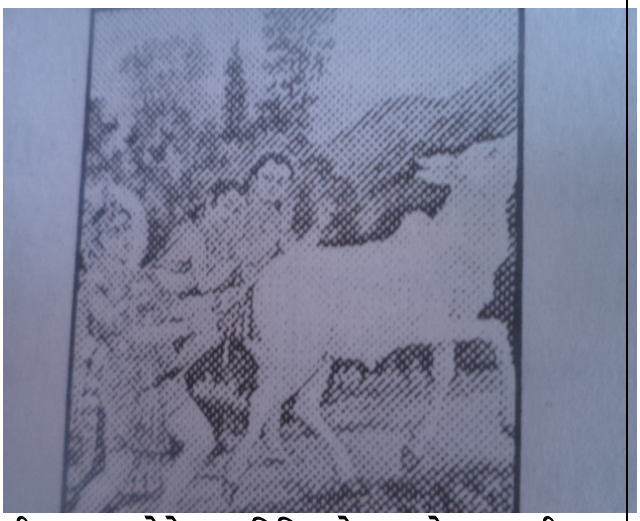

श्री कृ-ण गोसेवा समिति, मेडता रोड, तहसील मेडता सिटी, जिला नागोर, 341511,

अरनियाला

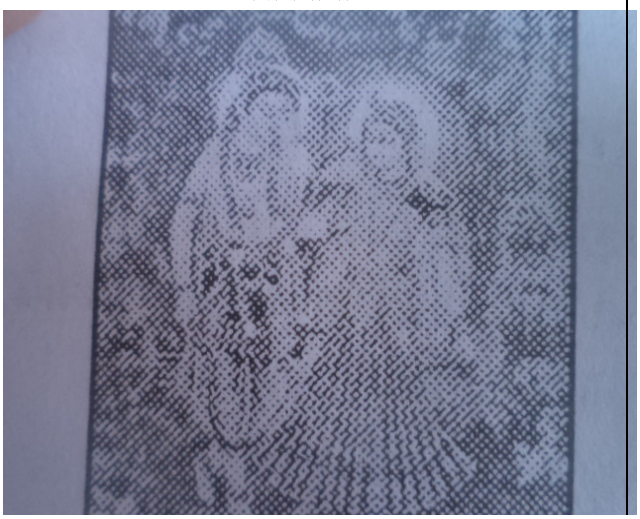

राधाकृ-ण गोशाला, धरमार्थ ट्रस्ट, ग्राम अरनियाला, तहसील मेडता सिटी, 341510,

बग्गर

श्री कृ-ण गोशाला धर्मार्थ ट्रस्ट, ग्राम बग्गर, तहसील मेडता नागौर, जिला नागोर 341510,

रामधाम

श्री मुनीश्वर गोशाला, डाकघर रामधाम, ग्राम कनवरियत, तहसील मेडता, जिला नागोर 341510,

उनतवाली

श्री महाराज गोसेवा समिति, ग्राम उनतवाली, जिला नागोर,

मूंडा

श्री वीरतेजा गोसेवा समिति, कजवाना रोड, डाकघर मूंडा, जिला नागोर 341026,

तउसर

श्री कृ-ण गोशाला संस्थान, डाकघर तउसर, नागोर 341001,

बीतन

श्री बालाजी गोशाला, डाकघर बीतन, तहसील मेडता सिटी 341510,

चूनतीसारा

नारायण हरि गोसेवा समिति साई जी महाराज टांका डाकघर चूनतीसारा, जिला नागोर नागोर नस्ल के संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए कार्य कर रही है.

जैसलमेर जिला

जैसलमेर

जैसलमेर बहुत ही छोटा एवं पवित्र क्षेत्र है. जैसलमेर को स्वर्णनगरी के नाम से जाना जाता है. जैसलमेर में पत्थर का कार्य बहुत ही प्रसिद्ध है. जैसलमेर में तापमान बहुत ही अधिक है. 51.3 अंश सेंटीग्रेड तक पहुंच रहा है.

जैसलमेर का हर व्यक्ति ईमानदार, मेहनती, साहसी, विनम्र, उदार, मिलनसार है. वर्तमान में 1600 भाटिया परिवार मौजूद हैं. वर्तमान में विश्व में 1 करोड़ भाटिया मौजूद हैं.

जैसलमेर का प्राकृतिक सौंदर्य का आक-र्ण ही बाहर से आने वालों को अपनी ओर खींचता है. रेती में उंट पर सवारी करना लोगों को बहुत ही अच्छा लगता है. हर घर में गोमाता कम से कम दो रखते हैं. अपनी दैनिक आवश्यकता के दूध की पूर्ति राठी नस्ल की गोमाता से होती है.

जैसलमेर बाहर से आने वाले लोगों पर पूरी तरह से निर्भर है. जैसलमेर की मेहमानगिरी बाहर से आने वालों को प्रसन्न कर रही है. जैसलमेर में गाय के घी से चना बनता है. दैनिक भोजन में भी दही, छाछ एवं गाय के घी का ही प्रयोग किया जाता है.

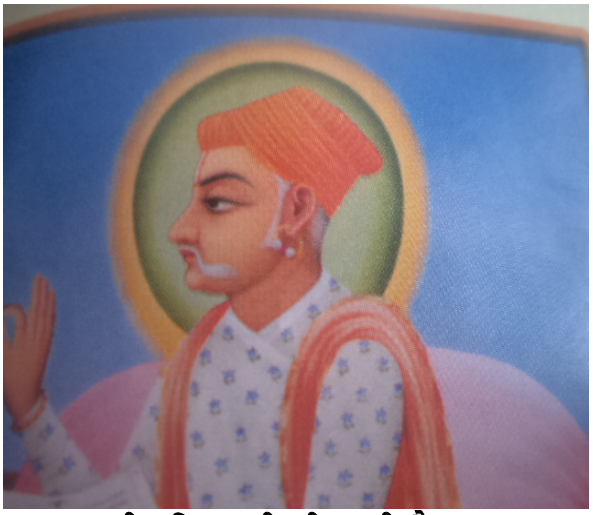

श्री हरिराय जी की 4 थी बैठक

श्री हरिराय जी की बैठक श्री गिरधारी जी के मंदिर में जैसलमेर में है. वै-णव यदि एक बार दर्शन करता हे तो मन यहां से जाने के लिए नहीं होता है. बार बार दर्शन करने के लिए लालसा बनी रहती है. श्री गिरिधारी जी श्री कल्याणराय जी के सेव्य स्वरुप हैं.

श्री हरिराय जी यहां पर साक्षात बिराज रहे हैं. श्री हरिराय जी ने यहां पर 7 बार श्रीमद भागवत सप्ताह की है. वै-णवों को महा अलौकिक आनन्द हुआ है. वर्तमान में भी वै-णवों के द्वारा नित्य सत्संग एवं कीर्तन किया जाता है.

श्री हरिराय जी के द्वारा शिक्षा पत्र में वै-णव के कर्तव्य के बारे में समझाया गया है जिसे यहां के वै-णव पालन कर रहे हैं.

श्री गिरधारी जी के मंदिर में प्रतिदिन वै-णव हरिराय जी के दर्शन करने के लिए आते हैं. जैसलमेर में वै-णव बहुत ही अधिक हैं तथा सभी वै-णव श्री हरिराय जी की सेवा बहुत ही प्रेम से कर रहे हैं. यहां पर अलग अलग 4 हवेलियां हैं.

यहां के राजा ने श्री हरिराय जी को न पहचान पाने के कारण उनसे जैसलमेर में प्रवेश करने के लिए कर मांगा था. श्री हरिराय जी ने जैसलमेर में प्रवेश करने से ही मना कर दिया था. जैसलमेर के बाहर श्री हरिराय जी ने रुककर पीने का पानी तलाब उत्पन्न कर चमत्कार दिखाया था. राजा ने श्री हरिराय जी के चमत्कार को देखकर अपनी गलती का अहसास होने के कारण ही सेवक करने की विनती की थी. श्री हरिराय जी ने यहां के राजा को सेवक किया था.

श्री कन्हैया गोशाला जैसलमेर के द्वारा राजस्थान गोसेवा संघ के सहयोग से 150 गोवंश की सेवा की जा रही है.

श्री मामदियाजी रा-ट्रीय समनवय सेवा समिति, करनी मंदिर के पास, कोलेज के पीछे, जैसलमेर राजस्थान 345001 थारपारकर नस्ल को बचाने के लिए प्रयत्नशील है.

भद्रायजी

श्री जगदंबा सेवा समिति डाकघर भद्रायजी जिला जैसलमेर राजस्थान भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड के वित्तीय सहयोग से थारपारकर गोवंश को बचाने के लिए प्रयत्न कर रही है.

डा राजेंद्र प्रसाद कोलोनी

इंडियन सोसायटी फोर काउ प्रोटेक्सन, बी-304, डाक्टर राजेंद्र प्रसाद कोलोनी, जैसलमेर 345001 राजस्थान थारपारकर नस्ल को महाअकाल में मरने से बचाकर सुरक्षित रखने का प्रयत्न कर रहे हैं.

पोखरन

श्री चैन पब्लिक गौशाला संस्थान, फालसुंद रोड, पोखरन जिला जैसलमेर राजस्थान पिन 345201 थारपारकर नस्ल को महाअकाल में भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड के वित्तीय सहयोग से मरने से बचाकर सुरक्षित रखने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं.

रामदेवरा

बाबा भली करे गोसेवा संस्थान, डाकघर रामदेवरा रुणिचा, तहसील पोखरन जिला जैसलमेर राजस्थान, 345023 थारपारकर नस्ल को सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान गो सेवा आयोग एवं भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड के वित्तीय सहयोग से कार्य कर रही है. वित्तीय संकट को हमेशा के लिए समाप्त करने के लिए एडस को समाप्त करने के लिए गोवंश के माध्यम से अनुसंधान कर गो मूत्र यहां पर कार्य करने की आवश्यता है.

रोहिसा

श्री गणेश गोसेवा समिति, डाकघर रोहिसा, तहसील मेडता सिटी, जिला नागोर 341513 भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड के वित्तीय सहयोग से नागोर नस्ल के संरक्षण करने के लिए कार्य कर रही है.

रावलामंडी

श्री शिव गोशाला रावलामंडी दूरभा-ा 01506-263135 में राजस्थान गोसेवा संघ के सहयोग से 400 गोवंश की सेवा की जा रही है.

बाजूवाला

नस्ल सुधार, पंचगव्य महो-ाधियों के निर्माण, जैविक खेती करने के लिए गो सदन बाजूवाला दूरभा-ा 01507-285201 में 700 देशी गोवंश की सेवा राजस्थान गो सेवा संघ के सहयोग से की जा रही है.

अनूपगढ़

किसानों से जैविक कृ-ि करवाने के लिए जैविक खाद तैयार कर कृ-ि गो सेवा केंद्र अनूपगढ़ दूरभा-ा 01498-222237 में 400 गोवंश की सेवा राजस्थान गो सेवा संघ के सहयोग से की जा रही है.

हनुमानगढ़

श्री हनुमान गो संवर्धन केंद्र मूंडा दूरभा-ा 01552-282394 में जैविक खाद, पंचगव्य महो-ाधियों, गोबर गैस के लिए राजस्थान गो सेवा संघ के सहयोग से 450 गोवंश की सेवा की जा रही है.

श्री गंगानगर

हरिओम गौशाला समिति

श्री देवीलाल जी संरक्षक 9414456522 ने दिसम्बर 2005 में हरिओम गौशाला समिति जैसाभटटी तहसील सूरतगढ़, जिला गंगानगर श्री सुखराम को-ाध्यक्ष 9982229969 में स्थापित की है.

5 बीघा भूमि पर 10 पेड़ उगाकर 46 देशी गोवंश रखे गये हैं. गोबर एवं गोमूत्र से वर्तमान में कुछ भी नहीं बना रहे हैं.

27 सदस्यों तथा 5 सहयोगियों के साथ में कुल खर्च 2,25,000 रु. कर 1 बीघा में चारा उगाते हैं.

2 सांढ से नस्ल सुधार का कार्य चल रहा है. 2007 में भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड से पंजीयन करवा चुके हैं. राजस्थान गो सेवा आयोग से भी पंजीयन करवा चुके हैं.

18 देशी गायों से मात्र 4 लीटर दूध प्रतिदिन होता है. 17 रु. लीटर के मूल्य पर बेचकर साल में 8,000 रु. प्राप्त होता है.

गोशाला के पास में जो भूमि है वह राजकीय उसे गोशाला के नाम करवाना चाहते हैं. गोशाला का विस्तार कार्य जिसमें जिसमें भंडार गृह, शेड का कार्य है करवाना है.

श्री गोविन्द गौ धाम

2012 में श्री निरंजनलाल बंसल अध्यक्ष 941439515 ने श्री गोविन्द गौ धाम नरसिंहपुरा बिरानी, श्री गंगानगर में स्थापित की है. पंजीकरण के लिए आवेदन किया है.

पानी व कर्मचारियों की समस्या है. नहर से पानी सिंचाई व पीने के लिए आवश्यकता है.

श्री निरंजनलाल बंसल 48 ई, ब्लाक, श्री गंगानगर दूरभा-ा 2483846 के द्वारा 1000 गायों के संरक्षण करने के लिए नयी गोशाला की भावी योजना बनायी है.

वर्तमान में 86 सदस्यों ने 9 कर्मचारी रखकर 1,50,000 रु. प्रतिमाह खर्च कर गोबर एवं गोमूत्र खेत में डालते हैं. गोबर तथा गोमूत्र से 1,50,000 रु. प्रतिमाह कुल प्राप्ति कर 20 बीघा में चारा उगाकर 36 बीघा भूमि पर 50 पेड़ लगाकर 134 देशी गोवंश तथा 15 दोगले गोवंश रखे हैं.

अलवर जिला

बूढ़ीबावल

1993 में स्वामी धर्मकेश के द्वारा वध से बचाए गए गौवंश के पालन पो-ण करने के लिए श्री कृ-ण गोशाला, बूढ़ीबावल, तहसील कोटकासिम, जिला अलवर 301707 राजस्थान दूरभा-ा 014937250058, मोबाइल 9414639694 की स्थापना की गयी है.

48 बीघा भूमि पर 200 पेड़ उगाकर 25 बीघा भूमि पर जई, ज्वार, हरा चारा उगाकर श्री चौ. लाल सिह जी अध्यक्ष 9416680000 संगठित प्रयत्न कर नस्ल सुधार कर रहे हैं.

कुल 23,75,383 रु. खर्च कर तथा 24,24,134 रु. कुल प्राप्ति कर 21 सदस्यों तथा 5 सहयोगियों के साथ में वर्तमान में 1200 गायों को रखने की क्षमता के साथ में 718 देशी गोवंश, 9 दोगले गोवंश, 27 विदेशी गोवंश रखकर 12 कर्मचारियों के द्वारा सेवा की जा रही है.

भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड तथा राजस्थान गो सेवा आयोग से पजीकृत होकर सरकार की वित्तीय सहायता से कार्य किया जा रहा है. सरकार से वित्तीय सहायता कम मिल रही है. मजदूरों की समस्या है. एम्बुलेंस की आवश्यकता है. गोमूत्र समूह की भावी योजना है.

रामगढ़ रोड

श्री दिगम्बर जैन सुधा सागर गोशाला समिति, बरगद के तिराहे के पास, रामगढ रोड, अलवर 301001 के द्वारा अकाल के समय में मन से सेवा कर गोवंश को बचाने के लिए कार्य किया जा रहा है.

अलवर

अग्निहोत्र

श्री ओ पी गुप्ता जी 599, विजयनगर, अलवर मोबाइल 9413259185, दूरभा-ा 2732699 अग्निहोत्र के लिए पूरी तरह से समर्पित हैं. वर्तमान में नये साधकों को अग्निहोत्र करने के लिए देशी गोवंश के गोबर के कंडे उपलब्ध करवा रहे हैं.

श्री सार्वजनी गोशाला

श्री सार्वजनी गोशाला, सेवाधाम, स्टेशन रोड, अलवर 301001 के द्वारा वर्तमान में गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए नस्ल सुधार करने नंदी तैयार करने नंदी पार्क की योजना है.

गोबर तथा गोमूत्र के सर्वाधिक उपयोग पर जोर दिया जा रहा है. जैविक खाद तथा पंचगव्य महो-ाधियों के निर्माण करने के लिए संगठित होकर गोवंश के संवर्धन एवं संरक्षण के लिए कार्य किया जा रहा है.

गुंटा

बाबा खेतानाथ गोशाला समिति, डाकघर गुंटा शाहपुर, तहसील बंसूर 301402 राजस्थान में राजस्थान की सर्वश्रे-ठ नस्ल को बचाने के लिए अपनी सेवाएं दे रही है.

अजमेर जिला

अजमेर

पंचगव्य

दूरभा-ा 0145-2431084 में विश्व की सबसे बड़ी गोशाला के पृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पादन प्रा. लि. की सभी वस्तुएं उपलब्ध हैं.

श्री गोपाल गौशाला

1994 में श्री नेमिचन्द सिंधी, श्री सत्यानारायण भराडिया के द्वारा श्री गोपाल गौशाला मेवाडिया रोड, पीसागन, अजमेर 0145-2775875 की स्थापना की गयी है.

22 बीघा भूमि पर 3 पेड़ लगाकर 110 गाय रखने की क्षमता के साथ में 45 सदस्यों, 2 सहयोगियों के साथ में वर्तमान में 106 देशी गोवंश रखे हैं. जनता से प्राप्ति 4 लाख है. सरकार से प्राप्ति निश्चित नहीं है. बरसात में चारा होता है. समस्या यह है कि सफलता निश्चित होगी या मिलेगी.

65 देशी गायों से 9000 लीटर दूध हर साल होता है. 30 रु. लीटर दूध बिक रहा है.

निर्माण कार्य करने के लिए आर्थिक सहयोग की आवश्यकता है.

गोबर की बिक्री किसानों को की जाती हैं. गोबर से प्राप्ति 90,000 रु. है. दूध से प्राप्ति 2,00,000 रु. है. 8 लाख रु. खर्च कर 500 गायें पालने की योजना है.

पु-कर

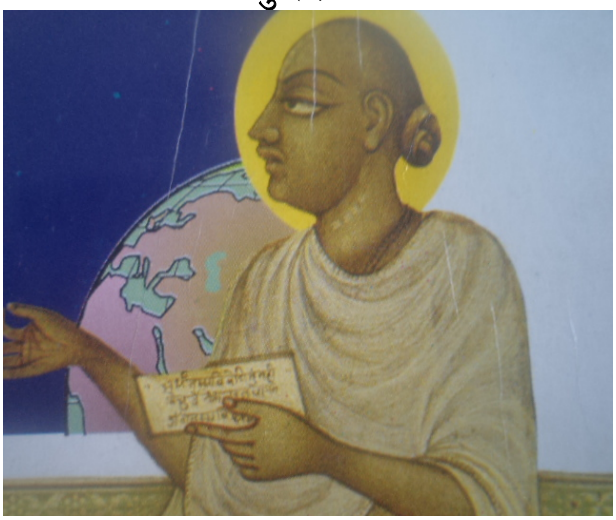

श्री महाप्रभु जी की 74 वी बैठक वल्लभघाट बड़ी बस्ती मुकाम पु-कर 0145-2772493

श्री महाप्रभु जी की बैठक ब्रहमकुंड के वल्लभघाट में छोकर के वृक्ष के नीचे है. ब्रहमकुंड पु-कर के मध्य में है. श्री महाप्रभु जी अवंतिकापुरी से यहां पर पधारे हैं. वर्तमान में श्री महाप्रभु जी साक्षात बिराजकर नित्य दर्शन दे रहे हैं. अनेक दैवी जीवों का उद्धार कर चुके हैं. यहां से आपने कुरुक्षेत्र के लिए प्रस्थान किये.

बैठक यात्रा में वै-णव पु-कर में महाप्रभुजी की बैठक करने के लिए आते हैं. रमणीय वातावरण में श्री महाप्रभुजी की सेवा करते हैं. यहां पर महाप्रभुजी सभी अलौकिक मनोरथ अवश्य ही पूरे करते हैं.

पूरे भारत में एक मात्र यहां पर ब्रहमा जी एवं सावित्री जी का मंदिर है. हम यहां पर श्रीमद भागवत सप्ताह करेंगे. कुछ दिन रुकेंगे. ब्रहमकुंड में अपने सभी सेवकों को लेकर स्नान कर आनन्द प्राप्त किया. श्रीमद भागवत सप्ताह यहां पर आपने की. पु-कर जी स्वयं नित्य कथा सुनने के लिए आते थे. सभी वै-णवों को अलौकिक आनन्द हुआ है.

पु-कर में प्रतिदिन हजारों तीर्थयात्री आते हैं एवं अपने पापों को धोकर पवित्र हो रहे हैं. कलियुग में सभी तीर्थ सामर्थ्यहीन हो गये हैं. आचार्य जी के संबंध से सभी तीर्थ सामर्थ्यवान हो जायेंगे. गोवंश के संवर्धन करने के लिए प्रयत्न चल रहे हैं.

कृ-णदास मेघन को आपने आज्ञा की कि पुराणों में लिखा है कि पु-कर सभी तीर्थों के पिता हैं. पु-कर सभी तीर्थों के राजा हैं तथा पु-कर स्वयं ब्राहमण का रुप धारण कर महाप्रभु जी के पास में पधारकर कहा कि आप मायामत का खंडन कर भक्ति मार्ग का स्थापन कर मुझे सनाथ करें.